कम्यूनिस

कमूनिस

शंकर बसु

हिन्दी अनुवाद
कचन कुमार



वर्णना, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित
बंगला पुस्तक 'कमूनिस' का अनुवाद

प्रथम हिन्दी संस्करण 1980

[illegible]

मूल्य
21 रुपये
8 रुपये 40 पैसे

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
2, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002

मुद्रक
भारती प्रिंटर्स
दिल्ली-110032

विप्लव, कमजल,
गोविन्द और पाँचू की स्मृति में

हंस का पंख और पर्वत की कथा

फिर एक दुश्मन।

बिलकुल गली के नुक्कड़ पर। नीचे नसों-सी पैंट में समेत एक टांग हलके से जमीन को छूती हुई। हाथ की पाँचों उँगलियाँ कुछ करने के लिए कुलबुला रही हैं। मामीपाड़ा से माँजे की जिसम का चाला टीका कपाल पर लिये बिना पलक झपकते ही हथियार निकालकर छाती के भीतर ही काम तमाम कर देगा। साला! जान मौसत में पड़ी हुई है। बदन पर उगे बालतोड़ फोड़े की-सी चर्कोंसी अनुभूति। धातु की तरह चमकती हुई दोनों आँखों से मौत को साफ़-साफ़ सामने देखकर वह मेंढक की तरह फुटपाथ छोड़ रास्ते पर कूद पड़ने को तैयार रहता है। गोरा असम धातु का बना है। सड़क के गड्ढे छोटी-मोटी खाइयों में पार करते हुए, पानी-कीचड़ को लाँघकर उसकी ओर बढ़ता चला गया। धूप के दाग लगे दाँतों और पायरिया से फूले मसूड़ों के भीतर दुश्मन की पतली हँसी गायब होने लगी। दुश्मन का चेहरा अब साफ़ हो रहा है—शराब के पीपे की तरह मोटा, चपटा शरीर। तोंद के ऊपर रोयों से ढँकी अँधेरे कुएँ की तरह नाभि। नग्न बदन कमर के नीचे धारीदार लुंगी की गाँठ।

वह नज़र सनसनाहट में गोल की तरह घूमती हुई आकर गोरा के चेहरे पर गिरी थी। गोल छल्ली की तरह गोरा को घेरकर दुश्मन की नज़र नाचने लगी। हा. ज. रोड से तेईस नम्बर बस्ती तक आने में गोरा अब तक तीन बार दुश्मन के सामने पड़ा था। पहला नम्बर दुश्मन एक बामपंथी

था। गोरा ने उसके सीधे-सपाट चेहरे को गैस कम्पनी की खजैली दीवार के पीछे सरकते देखा। उसके बाद दस-बीस कदम जेब मे मुट्ठी डाले आगे बढते ही, नारान के खडे बालों को देख ठिठक कर खडा हो गया। कान के अन्दर गला हुआ गर्म सीसा डाल दिया है नारान ने सुकु को उठा ले गया है।

"कौन, बल्टू गिरोह ?"

"हाँ।"

"बूडो वगैरह को खबर की है ?"

"नही। मैंने नही देखा, जरा पता लगाना पडेगा, सुनी हुई बात है।"

"तू पता लगाकर सुकु के घर चला जा और एक-डेढ घटे के भीतर फालतू समाचार होने पर सब मिलकर, जाकर ।"

"ठीक है।"

उसके बाद ह्यूज रोड के मोड पर और एक। गोरा का नाम-पता रटा होने पर भी वह गोरा का चेहरा नही जानता था, नही पहचानता था। इसलिए गोरा खोचर[1] की बगल मे शान्त निरीह कदमो से निकल गया। खोचर इस समय भी पान चबा रहा है। और अब यह तीन नम्बर। तीन नम्बर के बीच की उँगली मे स्टील की एक अँगूठी। अँगूठी मे इसान के कटे हुए सिर की बनावट का नग।

जरा फुरसत थी। दो कदम पीछे हटकर, खोका की नजर से नजर मिलाकर वह दबे पाँव आगे बढ सकता था। वैसे दूसरी ओर से हवा भी हो सकता था। गोरा को अब सब-कुछ जल्दी-जल्दी करना है। खुकु से भी भेंट करनी है। उसके बाद एक बार सुकु के वहाँ पता लगाना है। ए० बी० के लिए वक्त पर हाजिर होना है। हाथ का काम निबटा लेना ही बेहतर है। तवा गरम है तो रोटी सेंक लो। बस। खोका की मिचमिची आँखों की पलकें झपकने से पहले ही गोरा की मगज-मशीन ने झटपट हिसाब लगा लिया, एक बार सामने जाकर खडे होने से ही भडक जायेगा। इससे बेहतर दवा और नही है।

---

1 गुप्तचर विभाग का आदमी।

गोरा हँसने लगा। ज़रा झुककर दो-तीन हाथ के फ़ासले पर खड़े होकर। और दुश्मन पस्त होने लगा 'मज़े में हो न?" फिर गोरा की हँसी। हँसी के धमाके के साथ उसके हाथ की बँधी मुट्ठी और मुट्ठी खुली। फिर बेतरतीब ढीली उँगलियाँ अपने आप उसके सीने और गले के सामने हिलने लगीं। गोदाम साफ़ कर देने वाली पुरानी दुश्मनी दुश्मन के नाक के लम्बे बालों में से होते हुए उसके भीतर घुस गयी।

"चाय मँगाऊँ?'

'न। रहने दो।"

एकदम जैसा सोचा था वैसा ही निकला। तेरह नम्बर बस्ती के नाले के ऊपर, गिरे बाँसों की मचान पर आवाज़ करते हुए गोरा उसके सामने खड़े होकर वाक़ई हँस पड़ा। दुश्मन! यह भी भला कोई दुश्मन हुआ? खोका की आँखें उस समय तिलचट्टे के परों की तरह फड़फड़ा रही हैं। और इन आँखों ने ही एक दिन चावल के बोरों के गोदाम में आग घुस पड़ती देखी है। गोदाम की बेसुध बदरंग दीवार!

समाचार भी जबर था सात नम्बर बस्ती के अन्दर खोका ने गोदाम जमाया है। चावल का गोदाम। शराब की भट्ठी के साथ यह नया व्यापार शुरू किया है! भरी दुपहरी में ताश गायब कर देना नेताओं के साथ उठना-बैठना बड़-बड़ों के साथ वास्ता रखना—खोका के उस समय पौ-बारह थे। सात नम्बर बस्ती के पेंची को ज़बरदस्ती एक रात पकड़ कर बन्द रखा था। कामुदा के मोती झील बस्ती के एक नम्बर कैडर दुलाल को पीटकर मर्द बना दिया था। अब फिर से कामुदा के गिरोह के साथ गहरी दोस्ती छन रही है। और उनकी माहन उस समय काटे म मोटा निरामन की थी। सब-कुछ जानबूझ कर भी नारायणदा ने जोंक की तरह पकड़ लिया था। सब उस समय एक झण्डे के नीचे थे। लेकिन एक झण्डे के नीचे होने से क्या होगा? गोरा के दल की ख़ासियत तो नारायणदा के दम से ही है। एक पार्टी में रहकर भी नारायणदा का एक दल था सोना बाबू, गोरा मन्टू को लेकर। ख़बर पाते ही बस्तियों से साथ झटपट निकल आए। सारे-के-सारे आ गए थे। डेढ़ घण्टे में गोदाम साफ़। लेकिन मुख्य म... चावल बेचकर गोरा ने कैश बक्सा खोका की तोंद पर रख...

पुलिस के आते ही वहाने वाज़ी के लिए गोरा आगे बढा था, "सीज करके तो आप लोगो को तार रहे हैं। अब यहाँ बखेडा खडा करने पर लाइन देखी है न, बस खिसक जाइये।"

समाचार पाकर होमियोपैथिक दवाओ का वक्सा छोड गोरा का वाप दौडा आया था। रिटायर होने से चार-पांच साल पहले से ही उस आदमी ने बक्से को कसकर पकड लिया था। धुआँसे चश्मे के भीतर से फटी हुई आँखो से, छोटी-छोटी शीशियाँ टटोलते थे सिना थटि यह रहा उसके वाद कागज की पुडिया, नाखून के किनारे से वनाया हुआ मोड। सामने के दाँतो से कट-कट की आवाज करते हुए वीच-वीच मे हिसाव-किताव करते थे वी० ए० पास करना वाप की ड्यूटी है, अब लाल झण्डा लेकर सडक पर घूमो मेरा क्या जाता है? लाल झण्डे से पेट तो नही भरेगा। दोनो हाथो से अपने छोटे ससार को ओझल करते हुए व्रजेन वावू का आधा चेहरा ढँक कर सरजूवाला के दोनो सफेद होंठ उस समय हिलडुल उठते थे, "लो फिर शुरू हो गया।" सरजूवाला के चपटे माथे पर लगे सिन्दूर की ओर देख वे फिर कट कट की आवाज करते हुए दोनो दाँत विठा लेते थे, "ठहरो तनख्वाह आधी होने दो—उस समय समझोगी।" गोरा के वाप की पेंशन का वक्त आ रहा था।

वह आदमी गुस्से से लाल-पीला हो रहा था, "लैम्पपोस्ट से बाँधकर कोडे लगाने की जरूरत है। नेहरू ने कहा था न कि मुल्क आजाद होने पर।" भीड के अन्दर से टुकाईदा गर्म हो उठे, "हू आजाद! देख नही रहे है मुल्क का हाल।" धुएँ रग के चश्मे का शीशा हट गया। मिचमिचाने लगी व्रजेन वावू की आँखें, "इस आजादी के लिए सात-सात साल जेल मे काटे हैं, एक साल इनटर्न रहा हूँ। और देखता क्या हूँ, जिस आई० वी० अफसर ने टेररिस्टो पर जुल्म किया, वही अब डिप्टी-कमिश्नर वन वैठा है।"

सात दिन के अन्दर ही पार्टी ने नारान दा को चार्जशीट थमा दी थी। सुना, फट का इमेज इस घटना मे मक्खन की पुतली की तरह पिघल गया है। आखिर मे पुलिस के साथ वस्ती के लोगो ने जरा दिल्लगी शुरू की थी। उसके वाद पुलिस ने तडातड, दनादन लाठी वरसायी। नारानदा को ओ० सी०

बान खींच कर ले जा रहा था। तभी सिगरेट के मजदूरों ने जीप घेर ली। नारायनदा उस समय दो-चार यूनियनों के प्रेसिडेंट थे। ओ० सी० की रंगबाजी तब आपसे आप थम गयी। और पुलिस की हरकत देखकर सात नम्बर और तेइस नम्बर के पुराने बाशिन्दों ने पुरानी कहावत दुहरायी 'जो लंका गया वही रावण बना। यह तो वर्दी का गुण है। और खोका यह तो अभी तक भी मार खाता है। अब भड़कना छोड़ दिया है। लेकिन किसे पता फिर थाने में फ़ोन कर दे। फिर तो बेमौके नकद पैसा भी जा जायेगा। रुपया और सार मिटाने के लिए जान का रिस्क क्या लेना? बगल मुट्ठी जेब के अन्दर खाली-पीली हिला डुलाकर खोका को ठंडा करके तेइस नम्बर की बस्ती के नाले को गोरा ने एक छलांग में पार किया। असल में उसकी जेब में सिर्फ़ पाँच मजबूत उँगलियाँ थीं। एक मुट्ठी। बानसट[1] खोका के पास था।

टेबि सिर पर गुदड़ी का थान और उस पर मीसी दबाई लगाये ज़मीन पर झाड़ू लगा रही थी।

सुखिया की बीमारी से लड़की के दोनों हाथ ज़मीन पर लटक बेजान हो गये हैं। ठंडी मिट्टी। लड़की की गाँठ के ऊपर टेबि का पेट तैर रहा था। कद्दू के खोल की तरह पेट मानो दमादारा बजा रहा है। बिजय मिस्त्री की लड़की का पेट देखते-देखते भूसीदार खमाई की आवाज सुनते सुनते गोरा तेइस नम्बर बस्ती की ऐलिमिना मार्का धूप का आखिरी क़तरा सोंककर चला गया। चपटा और चौड़ा रास्ता सीक-कबाब की तरह पतला और तीखा होकर तेइस नम्बर बस्ती की क़तारबंद झुग्गियों से माँस के टुकड़े की तरह गुथा है। दीवार पर पीठ सटाए, झाड़-तिरछे पाँव फेंकते हुए कच्चे नाले से सटा गुफा छिपा रास्ता पकड़कर आगे बढ़ते हुए मारा समझाने में खोका की बात भूल बैठा। वह खोका जैसे दुश्मन को गिनती में नहीं लेता। डर भय त्रास उद्वेग वाली चिन्ता बाक के पेट की तरह कपास की दोनों नसों का फड़कना—सब सुकू के लिए। बन्दूक क्या बाक़ई उसे भुआसी दिखाकर उठा ले गया और उसके बाद ठीह पर क़ीमा बना डाला? चोट चोट, चोट। मानो गारा की मरहम कुचल दी हो। ना

1 रिवाल्वर

सुकु को फँसाना उतना आसान नहीं है, उसके सिर के पीछे भी एक जोडी आँखें हैं। अफवाह है, बिलकुल अफवाह!

नाले के किनारे का ही रास्ता चुना। रास्ता ही है। दोनो पाँव जोडते ही नाले मे घुस जायेंगे। सावधानी से लम्बे-लम्बे कदम उस रास्ते पर पडने लगे। गन्दे कारखाने के सिर पर चढी हुई अछूत धूप उस समय भी कच्चे नाले के किनारे हिचकियाँ ले रही थी। बिलकुल टेबि की तरह। सिर पर घाव नही हैं। घाव पर नीली दवा नही है। इतना ही फ़र्क है।

गोरी-चिट्टी एक बिल्ली लत्ते की तरह लुढक गयी। लात जमाने को तैयार गोरा ने पाँव ,खींच लिया। बिल्ली के बदन पर धीरे से छुआ-भर दिया। बेरग उँगलियों के नाखून हलके रोओं मे धँस गये। अचानक लगा, बल्टू है? नही, इसे क्या कहते हैं, रस्मी से साँप का भ्रम या साँप से रस्सी का भ्रम? असल मे बिल्ली की आँखो की जोडी दीवार की दरार मे से जल रही थी। जुगनुओं की तरह दमकती हुई। छुरी के फाल की तरह धूप झिलमिला उठती है। बल्टू की याद धक से आते ही शायद छुरी की चमक दौड आयी मनसनाती हुई बिल्ली की आँखों मे। बल्टू होता तो छुरी की आँखो से बोल फूटता, "क्या डर लग रहा है? याद है पचु की लाश गिरायी थी तुम लोगो के बाबू ने? यहाँ, ठीक इसी जगह।" बस, उसके बाद एक आवाज, उसके बाद दो टाँगें हवा मे उछली।

ना। वह सब-कुछ नही। सिर्फ एक गोरी-चिट्टी सफेद बिल्ली खिलाडी मिजाज से हट गयी। गोरा मन-ही-मन बडबडा उठा, "धुस्स!" दीवार से सटकर, कन्नी खाती हुई पतग की तरह एक तरफ गोता लेकर आगे बढने लगा। बेलियाघाटा के धुएँ से स्याह आसमान से ठीक उसी समय उतर आयी भूखी साँझ, गोरी बिल्ली के पाँव के नाखूनो मे छिपी नरम चमडे की खाल के भीतर से।

और एक बार फिर चमक उठा बल्टू का गोरा चेहरा। नाली के पानी मे बल्टू की काली आँखें। एक जोडी भौहे। वर्ग—दुश्मन। बाबू होता तो यही कहता और कडक उठी क्रांतिकारी हिंसा। पवित्र गभीर ढग से। अगर बल्टू का गोरा चेहरा अचानक वह अपनी पहुँच मे पा जाये तो वाकई चमकती छुरी का फाल बल्टू मे धँसा कर खुशी से क्या हिचकियाँ आयेंगी,

हाथ-पाँव के जोड़ खुल जायेंगे पार्टी के नारे लगाते हुए ? या दल के दुश्मन को खत्म कर वह लम्बे-लम्बे डग भरते हुए, जानवर की तरह दीवार के छेद में से बस लाकर निकल जायेगा ? चुपचाप । अपनी जान बचाते हुए तरह साल का गोरा सतरह साल के उस लड़के के सीन पर किसी भी तरह चुटला नहीं टिका सकेगा। अँग्रेजी किताब खोलकर वही लड़का ही तो गोरा की जूठी चाय की प्याली से चुस्की लेकर कहता था 'निबन्ध लिख नहीं पा रहा हूँ गोरा दा। लिख दो न।' साथ ही उसके फूले होंठों पर एक तिरछी मुसकान जाग उठती थी।

गोबरपट्टी के अन्दर से जाना पड़ता। मुकु के लिए एक बेचैनी। मन कुड़बुड़ा रहा है। इस इलाके की एक नम्बर जगह की लाल ईंटों के बड़े छेद में से होकर वह गोबरपट्टी के भीतर से चला। ट्यूबवेल के टूटे चबूतरे पर टेढ़ी कमर लिये कोई बौना गिरा हुआ है। एक-दूसरे को काट खाने गन्दी गालियों और औरतों-मर्दों की हो-हो हँसी की मजाकभरी आवाजों में से निकलते हुए गोरा ने मुकु के घर पर दोनों आँखें उछाल दी हैं।

मुकु के घर के फ़र्श पर सोंधी गंध लिये कच्ची मिट्टी खिलखिला कर हँस रही है। मुकु की भौजी की गोद में बन्दर के बच्चे की तरह बेसमुँहा। बच्चे के मुँह पर सर्दी की पपड़ी। उस पर बासी रोटी का सारा कालापन चकत्ता। शायद रोटी अधिक जल गयी थी। उस जली हुई रोटी का चकत्ता बच्चे के चेहरे पर। मुकु की भौजी के गोल चेहरे पर नरम अंका आपस मुलाकात नहीं हुई ?

भुरभुराती चारदीवारी। नाले के किनारे-किनारे मुकु के घर की दीवार बनी है। उससे आगे दीवार मालगाड़ी की लाइन तक चली गयी है। आधी-अँधेरी सीलनदार मिट्टी से ठंडी भाप उठ रही थी। धुँधला-धुँधला। मुकु के धँसे गाल और बस्टू की भौंहें घनी काली आँखों की पुतली लेकर जाग उठीं। भू-गोबर, उपले पथी दीवार के बगल पर माल गाड़ी की धुमधुम आवाज सुनते-सुनते मुकु का दुबला शरीर मानो बेजान हो गया। जख्मी। और इस विशाल देश के बीमार सीन पर वाकई कोई पर्वत नहीं टूटा। खबर सुनकर ए० बी० निवारण और बाबू की आँखें भट्ठी की तरह जल उठेंगी 'यह मौत एक पर्वत के समान है। हंस के पंख

की तरह हलकी नही है। बीमारी भुगतकर या खून की कै से हुई मौत नही, या आत्महत्या नही। शहीदो की इज्जत !" उसके बाद दाँतो को भीचकर की गयी कठिन प्रतिज्ञा—खून का बदला ।

वाकई सुकु को वे उठा ले गये या नही, पता नही। ले गये होंगे तो निश्चय ही खात्मा। जब से बाबू के दोस्त को सी० पी० एम० वालो ने पीछे से लोहे की छड मारी थी और उनके पचु की गरदन की मज्जा एक भोथरी कटारी से निकाल फेंकी थी, तभी से ही रास्ता बहुत फिसलन वाला बना है। और दुश्मन जितनी तादाद मे बढ रहे हैं, खून की गर्मी भी उतनी बढ रही है। चेहरा चमक उठा है। जुबान पर तेजी आ रही है। हथेली पर चूजे के नरम पेट की तरह जिन्दगी तिरमिरा रही है। एक छलाँग के लिए। छलाँग लगाकर गिरना चाहता है सडे-गले रास्ते पर। सुकु के भैया मदना की औरत ओढनी ओढकर तिरछी होकर बैठी है। बच्चे के मरने के बाद से ही वह जाने-जाने को कर रही थी। फिर एक आ रहा है। सुकु की अम्मा ढिबरी की काली-सी लौ घुमा-घुमाकर बीडी जला रही है। बुढिया के दोनो गाल धँस गये हैं। महादेव झोला लेकर सोने के धधे मे निकला है। झोले के अन्दर चश्मे की डडी, शीशा, ताँबे का टुकडा, तार वगैरह हैं। रोजगार कुछ भी हो, लौटेगा एक पाइट देशी चढाकर। ज्यादा-से-ज्यादा हाथ मे आधा सेर आटे की एक थैली रहेगी। मदना के दो-चार पैसे देने पर भौजी दाल लायेगी। आटे की पिडी उसी दाल मे उबलकर पकेगी। इसे वे लोग कहते हैं पिट्ठुली। महादेव सोनार रात के डेढ बजे तक गाना गायेगा, चिल्लायेगा, मैया-बापू को पुकारेगा। नही तो मार-पीट करेगा, दगा मचायेगा। एक बार गुस्से पर काबू न रहने पर सुकु ने बाबू को पीटा था। सुकु को लेकर शुरू-शुरू मे बूढी अम्मा और भौजी छाती पीटती थी। मरद के नाम पर तो वही है। उसे यह कैसा नशा ! पार्टी का नशा ! अब अल्लाह के नाम पर छोड दिया है। सुकु भी दिन-भर पार्टी के काम मे जुटा रहता है। रात-बिरात आकर कलई वाली टूटी कटोरी लेकर नही बैठता, "दे भाभी, बहुत नीद लागा।"

"और एक बार भी नहीं आया ?"

"ना, बेटा !"

बुढ़िया को झंझला आती है पानी की तरह। कभी-कभार घरेलू बातचीत में बमौके हिन्दी बोलती है। घर में एक भी पैसा नहीं है। मुकु की भी इस ओर नज़र नहीं है। दिन रात पार्टी और पार्टी। इससे क्या पेट भरेगा? यह सब बड़े आदमियों को फबता है जिनकी जेब में पैसे हों। इधर घर में एक भी दाना नहीं है इस बात पर वह कान भी नहीं धरता। गोरा की जेब में चारमिनार के चूरे के अलावा कुछ भी नहीं है। रहन पर बिजयदा की लड़की को पकौड़ी खरीद देता। टनि की हिचकी की आवाज़ अभी भी सुन पा रहा है।

फिर भी बदरंग उँगलियों की निकोटिन से पीली पड़ी पोरों से कमीज़ की जेब को बेमतलब ढूँढ़ने लगा। हाथ में उठ आयी पसीज कागज़ की एक तुगड़ी फटे-से कागज़ का टुकड़ा। अस्पष्ट से कई नाम तारीख। गोरा और नहीं ठहरा। काली टप लगी हवाई चप्पल पहन तेज़ी से चल पड़ा। पीछे मुकु की माँ का चर्बी-चढ़ी-सा चेहरा गुमसुम ही रह गया ताज्जुब!

खटका लगा आज सोमवार ही है न। गोरा के लिए आजकल दिन तारीखें बहुत गड़बड़ा जाती हैं। फिर कोई काम मेल-मुलाकात लिखकर रखना मना है। ऐसा करने पर एकसाथ बहुत लोग फँस जायेंगे। कागज़ पत्तर पार्टी दस्तावेज़ कतई साथ नहीं रहना। अब सभी कुछ याद करके रखना पड़ता है। इसी लिए मन-ही-मन दुहरा रहा था सोमवार रात के नौ बजे ए० बी० आयेगा। बैठक की जगह का बंदोबस्त मुकु करेगा। भीम लेन के मोड़ पर चार लोगों के मिलन की बात है।

ए० बी० ठीक नौ बजे आयेगा। पहले आयगा या बस से मुड़ते ही उसमें से टप से उतरेगा कौन जाने? या पाइपनुमा गली से चुपचुप निकल आयेगा? कुछ भी तय नहीं है। दुबले-पतले हाथ की कलाई पर स्टील की जंजीर से बँधी घड़ी के डायल में छोटी सुई के नौ के धीरे पर रुख से घूमने और बड़ी सुई के इसकी चाल से बारह पर सवार होने पर ही ए० बी० आयेगा। स्त्री, उभरी हुई नाक और घुंघराले बालों वाला चेहरा उभर आयगा। ज़मीन फाड़कर। उस समय भी उसमें चमके भी।

मायना मोड़ के मुहाने पर। जगह बुरी है। जब-तब हमला होता रहता है। पूरे बेलघाटा के तरह-तरह के गली-कूचों में गुज़र कर चार

रास्ते इस मोड पर आ मिले हैं। दूर से वही मोड दिख रहा है। खाली। अजीब तरह से खाली। पीछे विहारी मजूरो के फगुआ के मर्दाना नाच की तरह टेढी शील लेन। और बायी ओर कीडे की लम्बी टाँग की तरह पतली गली। दायी-बायी नाक मे रवड की वदबू आ रही है। घूल-कालिख-घुएँ के दाग। दो-एक आदमियो की घुंधली-सी छायाएँ सरकती जा रही हैं। वीरू, सुकु अवश्य ही आ गये हैं। लैम्पपोस्ट के नीचे मानो कोई फैलके वैठा हुआ है। सिगरेट की आग की चिनगारी जल रही है। अतहीन समुद्र मे तैरते जहाजी सकेत की तरह।

एक-एक करके चारो ही इकट्ठे हुए हैं। आते समय इस गली उस गली से घूमते हुए आये हैं। आम सडक से चलना भूमिगत जीवन से खारिज है। नाला, गली, दीवार और रेल-पटरी आने-जाने, चलने-फिरने के रास्ते हैं। आकर भी चट से जाहिर नही किया। गोरा ने चापाकल से चुल्लू भरकर पानी पिया था। उसके वाद कमीज के किनारे से चेहरा पोछ-पाँछ कर सारे इलाके पर अच्छी तरह से नजर डाली। दुश्मनो की तो कोई कमी नहीं है। झट से गरदन मोडकर व्रिज के नीचे की लोहे की वीमो को देखा। छाया की तरह कुछ जैसे सरसराते हुए हटा। तुरत पाँव के तलुए से सीने तक, नस-दर-नस खीचकर अपने को सख्त वना लिया। दो कदम पीछे हटकर मुकावले के लिए तैयार हो गया। उसके वाद फालतू आवाज जान कर आश्वस्त हुआ। एक-एक करके वे चवूतरे पर आ वैठे। सीने का पिजरा खाली करके साँस छोडी। पहले इधर-उधर की वातें हुईं। वुडवुडाते हुए उवलने लगा।

भापणवाजी का दिन खत्म।

स्वर मे एक स्फूर्ति का भाव था। गाल पर एक उँगली रखकर वैठा। गड्ढा पडा। हँसते ही उसके गाल पर गड्ढे पडेंगे। शात पोखर के पानी मे पत्थर फेंकने पर जैसा होता है, ठीक उसी तरह गाल का गड्ढा धीरे-धीरे भरता जा रहा है। चेहरे पर एक विजयी भाव जाग उठा। सचमुच आदमी अगर भापण और वहसवाजी से गुमराह न हो तो उसे कौन ठग सकता है ? ऐसी एक निश्चितता लेकर ही उसने यह वात कही। वहसा-वहसी, भापणवाजी ढेरों हो गयी हैं। मुँह से फेन निकलने लगा है। और

फ़ायदा हुआ है धंधा। सब अपने अपने जीने का धंधा कर रहे हैं। धंधा करते-करते ही आँख की पुतली खड़ी रह गयी है। बिलकुल निश्चल निस्पन्द। और जीना नहीं हुआ। हरी-सी नयी मूँछें घास की तरह कँपाकर एक और ने कहा "यह ज़माना चला गया है।"

'हाँ। अब जान का सवाल है।

"जान शब्द बहुत ही विचित्र है।

"वाक़ई!"

'थाह नहीं मिलती।'

"अच्छा तुम सोचा है क्या ?"

सब से कहीं कुछ फँस गया और वह उसे उगल नहीं सका। घनी काली आँखों की पुतली बहुत कोशिश से मानो कुछ खोजती है। लड़का सटीक शब्द खोज रहा है जबकि वह उसे छू नहीं पा रहा है।

"क्यों रे कह तो ?

'न।

'क्या नहीं ?"

'कुछ नहीं यों ही।

ढीलाढाला सुस्त रास्ता। मुहल्ले का रास्ता। साँझ के झोंकों में कभी-कभी इक्के-दुक्के आदमी गुज़रते हैं और दो-तीन लैम्प में सिगनल्स मैस कम्पनी और रबर फ़ैक्टरी के मज़ूर साँझ सुबह में रोटी के लिए दौड़ते हैं या बहुत ही बेदम होकर डेरे की ओर लौटते हैं। लौटते हुए मोड़ की दुकान से दो-पाँच पैसे की बीड़ी ख़रीद लेता है कोई-कोई। हाथ फैलाते हुए गुज़ार जाता है। मोड़ के लोग चबूतरे के बदन से सटकर सभी को जाना पड़ता है। ये लोग पहले सुबह शाम यहाँ बैठते थे। चुम्बक की तरह यह जगह अभी भी उन्हें खींचती है। फिर भी ये लोग पहले की तरह जम-जम नहीं जाते। उतना समय नहीं है और फिर वे फ़ालतू जोखिम उठाने को तैयार नहीं हैं। अब जान का सवाल है। काम आये बग़ैर चारा नहीं है इसी लिए। फिर भी गोरा ने बार-बार मना किया था "मरने की इच्छा हुई है ? जवाब में सोना हँसा था, वही विचित्र हँसी, "ए० बी० और कोई ठीया नहीं जानता।

"इसी लिए।"

"वह कुछ नही होगा।"

इस आधे घटे मे ही पान की दूकान के वटू ने तीन-तीन वार होशियार किया है—मुझे जाने क्यो ठीक नही लग रहा है। सरक जाओ सव। वटू को डराने के लिए वे गला खोलकर हँसे हैं। और वटू जुबान सी कर वैठा है। गुस्सा आने पर उसके मुँह से वात नहीं निकलती। और आज वटू ने फोकट मे सिगरेट भी नही माँगी।

चौरस्ते के मुहाने पर लक्ष्मीकातपुर और कैनिंग लाइन की पैसेंजर ट्रेन की रोशनी छिटकी। उसके वाजू में लाइन। वीच मे इस चौरस्ते का तिरछा मोड। और साथ चिपकी हुई वस्ती। मोड पर वस का रास्ता और यो ही एक रास्ता आडे आ मिला है। मोड पर गैस-वत्ती नही है। ढिवरी वत्ती का ज़माना कव का वीत गया है। अव ट्यूवलाइट। ट्यूवलाइट के खम्वे के नीचे सीमेंट का पलस्तर किया हुआ गोल चवूतरा। वहाँ खडे होकर पहले स्ट्रीटकार्नर मीटिंगें होती थी। भैंदा मछली की तरह प्रणवेश 'मुल्क मे सेफ्टिपिन वन रही है, लिहाज़ा उद्योग मे हम पीछे नही हैं' कहने के वाद नकियाते हुए चिल्लाता था 'वदे माताराम' और टिप्पणी चस्पाँ करने की कोशिश करता नाटा मास्टर, "तो फिर चूतड मे सेफ्टिपिन चुभोकर ही मुल्क आगे वढ जायेगा, क्यो ?" कोई कुछ नही वोलता था। कुछ कहने की किसे गरज है ! चुनाव से पहले इस तरह का ज़रा कांग्रेस-कम्युनिस्ट होता ही है। अव सव चूहे के विल मे घुसे हैं। यहाँ तक कि भेडी[1] के किनारे तोडकर घोर वर्षा मे ग़रीव-गुरवा पर दुख-दर्द की गाज वनकर तोप की तरह जव वाढ आयी थी तो रिलीफ की एक वूंद भी उन्हें नही छू सकी थी। जो भी ज़रूरत पडी, गोरा के दल वालो ने ही जुटाया।

ट्यूवलाइट की हलकी रोशनी उनके चेहरे पर गोल होकर गिर रही है। लैम्पपोस्ट को चारो ओर से घेरकर वे लोग फैलकर वैठे हैं। रोशनी धुंधली-सी। कैसा माया का-सा भाव। माया का जाल। उनके शरीर का

---

1 छिछली तलैया, जिसमें मछलियाँ पाली जाती हैं।

कुछ हिस्सा स्पष्ट दिखता है। बाकी धुंधला-सा। हल्की रोशनी में दिखायी नहीं पड़ता। सोना के सपनील चेहरे पर सपन का जाल बिछा है। गुनगुनाते हुए कोई पंक्ति गाता है।

हवा गोरा के भूरे बालों पर हमला कर रही है। कपाल पर कटे का लम्बा दाग फीकी रोशनी में चमक रहा है। पतली चमड़ी ताँबई रंग। दाग एक नजर में ताँबे के फाँस की तरह लग रहा है। गोरा टाँगें मोड़कर बैठा है। पतली हवा की हुज्जत थम रही है। कमीज के बटन पूरे खुले हैं। घास की तरह रोएँदार सीने से पसीना सोख रहे हैं हवा के झोंके। धौंकनी की तरह सीना ऊपर-नीचे हो रहा है। एक पब्लिक-बस गुजरी। मानो बेगम स। दोनों आँखों से रोशनी का फव्वारा छोड़ती हुई। उसके पीछे चूना-सुरखी की दुकान की ईंटें ढेर सारी। और दीवार पर पोस्टरों के गड्ढे। कई दिन पहले बौछारें बरसी थीं। हटते-हटते गोरा दीवार पर पीठ टिकाकर खड़ा हो गया था। निशाना ठीक ही लगाया था। बूढ़ों ने हाँक लगायी थी। खासी आवाज। उसी से चौंक उठा। नन्टे कहता था "कैपसूल। एक निगमन से ही साफ। नन्टे समाज की आजकल जब-तब याद आ जाती है। सीना भारी हो उठता है। आँखें जलती हैं। मन में मानो आग का गोला फँस जाता है। गोरा का उस समय होश नहीं रहता। उदास हो जाता है। छोटी उँगली के पोर पर सुरसुरी चींटी की तरह मौत चलती है।

'मुझ में वर्ग-घृणा नहीं है।

'कैसे समझा ?

देख नहीं रहा किस तरह चैन से बैठा हूँ।

'इसका नाम चैन से बैठना है ?

'नन्टे की बात सोच।

'नन्टे ?'

"हाँ नन्टे। उस तरह भौंहें सिकोड़न की क्या बात है !

'नन्टे का साहस ध्यान से बाहर हो गया था।

देख ! एक बात याद रखना आदम-आदम से इन्सान [illegible] होता है।

"तुम खुद जानते हो, कह क्या रहे हो !"

"इसका मतलब ? नन्टे हठी था ?"

"गोरादा !"

"क्या ?"

"तुम माथा ठडा रख नही पा रहे हो ।"

"नही, जल रहा हूँ । इतना होने पर भी ठडा रहे तो वह इसान का माथा नही रहेगा ।"

"तो ?"

"मुर्दे की खोपडी हो जायेगी ?"

बायी तरफ कॉर्ड लाइन । टिकिम-टिकिस करके एक मालगाडी चली गयी । ओवर ब्रिज की बीमे कराह रही हैं । जाने कैसी मरोडने की आवाज है । और ब्रिज की फाँक से इस्पात के फाल की तरह पटरियाँ आधे-अँधेरे की केंचुल उतार हिंसा से चिलक उठी । मन्टू ने मुँह पर रोक लगायी । अचानक वह चुप मार गया । मन्टू का हाथ ठुड्डी की दाढी छूते हुए खेलने लगा । उसने सोचा—बात न बढाना ही बेहतर है । ताजा कच्चा घाव अभी भी कम नही हुआ, सूखना तो दूर की बात । कभी सूखेगा या नही, किसे पता ! कही एक आवाज हुई । दबी हुई । बीरू और मन्टू ने कान खडे किये । बीरू खम्बे पर बदन छोडकर रुख जानने की कोशिश करने लगा । सोना ने कोई घास नही डाली । यो ही वह कम परवाह करता है । असल मे वह सूँघकर समझ लेता है । बीरू की बडी आँखें गहरे ध्यान मे बन्द होने लगी हैं । जरा कुछ जानकर ही ढीला होकर बैठा, "कुछ नही ।"

"बॉस ?"

"हाँ ।"

सोना का मुँह चिडचिडा उठा, "कही अन्त राखाल की गाय के झुड की तरह न हो ।"

"यानी ! राखाल तो झूठमूठ लोगो को इकट्ठा करता था ।"

"इतनी उचपिच करने पर ऐसा ही होगा ।"

बीरू की पतली मूँछो की रेखा विरक्ति से एक ओर छिटक गयी । गरदन उछालकर वह उठ खडा हुआ । दोनो हाथो से पैंट के पीछे लगी धूल

गाड़ी। शहर धीरे धीरे धूल-धक्कड़ से अँटता जा रहा है। टीन के पिंजरे भर हवा भी नहीं खींची जाती। बीरू चप्पल घसीटते हुए सिगरेट खरीदने के लिए मोड़िया की दूकान की ओर गया। दूकान के सामने काई लगे हुए चबूतरे की तरह रूप खून के दाग लगे जिसे पत्थर पर अशोक स्तम छाप दस पैसे का सिक्का खट-से फेंका। अशोक स्तम के पहिये के नीचे कुचली जाकर, कलिंग राज्य का रक्त मज्जा सड़-गलकर इतने दिनों में मोड़िया की दूकान के पत्थर की तरह सख्त नफ़रत से जम गये हैं।

मोड़िया की दूकान के कबूतरखाने की दीवार पर शरीर के सारे उभारों को दिखाती अभी-अभी नहायी औरत की तसवीर वाला एक कैलेण्डर झूल रहा है। सिगरेट निकालते हुए मन्टू ने कहा बीरुआ!"

"क्या?

'जरा सरक आओ न।

'क्या?

"कल आया था इसी टाइम।

उसके बाद?"

'पूछताछ कर रहा था।

'अच्छा।

'ज्यादा देर तक मत रहो।

होंठों के बीच सिगरेट घुसेड़कर बीरू की निगाह ने आसपास चारों ओर देख लिया। पानी की गुमटी पर जलती रस्सी झुलाते हुए झूम रही है। रस्सी की ओर एक नजर डाल बीरू ने चलना शुरू किया। यहाँ से जलाने पर सिगरेट चटपट खत्म हो जायेगा। रास्ता बहुत ही खाली-खाली लग रहा है। रह रहकर दो-एक रिक्शों की टुँगटाँग की आवाज आ रही है केवल। बीरू बदन झाड़कर चल रहा था। ट्यूबलाइट के नीचे लैम्प पोस्ट के पलस्तर किये गोल-से चबूतरे के पास जाकर ठेलता हुआ गाड़ी के तीन जनों के बीच बैठ गया 'मन्टू दियासलाई दे।' सिगरेट को दोनों उँगलियों के बीच थामने लगा।

मन्टू ने झुककर जेब से दियासलाई निकाली 'ले।

सोना ने एक बड़ी जम्हाई ली। दो आँखें अपने आप बन्द होने लगीं

"तुम खुद जानते हो, कह क्या रहे हो।"

"इसका मतलव ? नन्टे हूठी था ?"

"गोरादा।"

"क्या ?"

"तुम माथा ठडा रख नही पा रहे हो।"

"नही, जल रहा हूँ। इतना होने पर भी ठडा रहे तो वह इसान का माथा नही रहेगा।"

"तो ?"

"मुर्दे की खोपडी हो जायेगी ?"

वायी तरफ कॉर्ड लाइन। टिकिम-टिकिस करके एक मालगाडी चली गयी। ओवर ब्रिज की धीमे कराह रही है। जाने कैसी मरोडने की आवाज़ है। और ब्रिज की फांक से इस्पात के फाल की तरह पटरियाँ आधे-अँधेरे की केंचुल उतार हिंसा से चिलक उठी। मन्टू ने मुँह पर रोक लगायी। अचानक वह चुप मार गया। मन्टू का हाथ ठुड्डी की दाढी छूते हुए खेलने लगा। उसने सोचा—वात न वढाना ही वेहतर है। ताजा कच्चा घाव अभी भी कम नही हुआ, सूखना तो दूर की वात। कभी सूखेगा या नही, किसे पता। कही एक आवाज हुई। दवी हुई। वीरू और मन्टू ने कान खडे किये। वीरू खम्वे पर वदन छोडकर रुख जानने की कोशिश करने लगा। सोना ने कोई घास नही डाली। यो ही वह कम परवाह करता है। असल मे वह सूंघकर समझ लेता है। वीरू की वडी आँखें गहरे ध्यान मे वन्द होने लगी हैं। ज़रा कुछ जानकर ही ढीला होकर वैठा, "कुछ नहीं।"

"वॉस ?"

"हाँ।"

सोना का मुंह चिडविडा उठा, "कही अन्त राखाल की गाय के झुंड की तरह न हो।"

"यानी। राखाल तो झूठमूठ लोगो को इकट्ठा करता था।"

"इतनी उचपिच करने पर ऐसा ही होगा।"

वीरू की पतली मूंछो की रेखा विरक्ति से एक ओर छिटक गयी। गरदन उछालकर वह उठ खडा हुआ। दोनो हाथो से पैंट के पीछे लगी धूल

झाड़ी। शहर धीरे-धीरे धूल-अक्कड़ से अँटता जा रहा है। सीन के पिंजरे भर हवा भी नहीं खींची जाती। बीरू चप्पल घसीटते हुए सिगरेट खरीदने के लिए बोड़िया की दूकान की ओर चला। दूकान के सामने काई लगे हुए चबूतरे की तरह अस्प चूने के दाग लगे घिसे पत्थर पर अशोक स्तंभ छाप दस पैसे का सिक्का खट-से फेंका। अशोक स्तंभ के पहिये के नीचे कुचली जाकर, कमिय राज्य का रक्त मज्जा सड़-गलकर इतने दिनों में बोड़िया की दूकान के पत्थर की तरह सख्त नफ़रत से जम गये हैं।

बोड़िया की दूकान के कबूतरखाना की दीवार पर शरीर के सारे उभारों को दिखाती अभी अभी नहायी औरत की तसवीर वाला एक कलेण्डर झूम रहा है। सिगरेट निकालते हुए मन्टू ने कहा बीरू!

“क्या?”

‘जरा सरक आओ न।’

‘क्या?’

“कल आया था इसी टाइम।”

उसके बाद?

‘पूछताछ कर रहा था।’

“अच्छा।”

‘ज़्यादा देर तक मत रहो।”

होंठों के बीच सिगरेट घुसेड़कर बीरू की निगाह ने आसपास चारों ओर देख लिया। पानी की गुमटी पर जलती रस्सी झुलाते हुए झूल रही है। रस्सी की ओर एक नजर डाल बीरू ने चलना शुरू किया। यहाँ से जलाने पर सिगरेट चटपट खत्म हो जायेगा। रास्ता बहुत ही खाली-खाली लग रहा है। रह रहकर दो-एक रिक्शों की टुँमटाँय की आवाज आ रही है केवल। बीरू बदन झाड़कर चल रहा था। ट्यूबलाइट के नीचे लैम्प पोस्ट के पलस्तर किये गोल-से चबूतरे के पास जाकर ठेलता हुआ खाकी के तीन जनों के बीच बैठ गया 'मन्टू दियासलाई दे।" सिगरेट को दोनों उँगलियों के बीच खोंसने लगा।

मन्टू ने झुककर जेब से दियासलाई निकाली भी।

सोमा ने एक बड़ी जम्हाई ली। दो आँखें अपने-आप बन्द

थी। उसने पलकें खीच रखी है। वीरू का गला अचानक तेज हो गया, "जानते हो न पचाननतल्ले के उस ओर झमेला हुआ है, हम लोगो के सुकु को वेधडक पीटा है।" सोना ने अकुश के साथ गरदन झुकाकर कहा,"हाँ।" वीरू की वात का सिरा मन्टू ने पकडा, "इसी लिए केलो दा ने मुझे बुलाकर कहा, 'अरे भाई हम निरामिष मध्यम वर्ग के हैं। यही मव सात-पाँच वड-वडा रहा था।' असल मे पचाननतल्ले का एक्शन अगर यहाँ हो, खाल वचाने का धधा।"

वे लोग वारी-वारी से हाथ वढाकर सिगरेट पी रहे थे। मन्टू ने अत मे ली। वह सुट्टा मारने मे उस्ताद है। मन्टू ने राख झाडी। वीरू ने झपट्टा मारकर सिगरेट का टुकडा ले लिया, "सुकु को कुछ हुआ तो वल्टू की लाश ।"

मोना "अपनी वकवक ज़रा वन्द कर ।"

मन्टू "मुहल्ला अभी तक ठडा था, अव ।"

गोरा "वर्ग-सघर्ष वल्टू मेरा छात्र था, शात निरीह लडका।"

वीरू "अव देखो न जाकर। पाँव मे हटिंग शू, जेव मे छह गोलियो वाला पिस्तौल।"

मन्टू "हैज़ा, चेचक और महामारी की तरह यह सघर्ष फैलता जा रहा है।"

गोरा "उन लोगो ने तो हमारे घर तक हमला किया था। किताव वगैरह खीचकर ले गये, पिताजी को धमकाया।"

सोना "वैसे कुछ भी कहो, नाले के पार की उनकी लाइब्रेरी मे आग लगाना ठीक नही था।"

वीरू "वैसे ठीक है।"

गोरा "नही, यह कतई ठीक नही हुआ। इसे सैद्धातिक लडाई नही कहा जाता।"

वीरू कुलवुला उठा "मशोधनवाद अभी भी मुख्य दुश्मन है। उनके साथ वहस वन्दूक की नली से होगी।"

सोना "ठहर। देखो गोरादा, हम लोग तो उनके साथ लडना नही चाह रहे हैं। मगर सुकु को वे वाकई उठा ले गये हो तो ?"

मीरू : "तो क्या, गोल पार्क की तरह एकदम स्वर्ग बन जायेगा बस !"

मन्टू अचानक सीधा होकर बैठ गया। आँख और मुँह में आग की चिनगारी। बायें हाथ से नाक की छोर और ठोड़ी से पसीना पोंछ लिया "वाकई। गोलपार्क की बात याद है ! लाल झंडे को माँ-मौसी की गन्दी गालियाँ निकल गयी थीं। हिम्मत देख सब ताज्जुब में आ गये। अपने आप कहा 'हाँ सोना ने माँ का दूध पीया है।' कांग्रेसी मस्तान लोग तीन हफ्ते तक मुहल्ले में घुस नहीं पाये। अंत में क्षमा वगैरह माँगी तभी न।" मीरू के मुँह से फुलझड़ी फूट रही है। पुल से एक तिरपाल ढँकी लारी निकल गयी।

कसोवा के साथ सोना की पहले बहुत प्यार-दोस्ती रही है। रिश्ता आज का तो नहीं। वही सोना जब हाफ़पैंट पहनकर रेल की पटरियों पर पाँव रखते हुए स्कूल जाता था तभी से केसोवा के साथ उसका याराना है। उसी खूँटे पर सुबह शाम चाय के वक्त सोना चार सभी दीवार पर पीठ टिका पाँव फैलाकर बैठा रहता था। श्यामवर्णा पतली-दुबली मीनू सोना के साथ चलकर एक दिन हाव रोड के मोथिया की बीबी के पास आयी। सोना मोतिया के साथ पोखर के किनारे बातचीत कर रहा था। वे दोनों भ्रम में होने वाली बातों का सिलसिला जारी रखते हुए हवा की तरह बस्ती की पतली गली में खो गयीं। गोरा को तभी लगा था "वाह ! बहुत अच्छी है !" उसने पीछे से नहीं पुकारा। उन दोनों की धुँधली छाया आँखों से ओझल हो गयी। उसके बाद एक दिन खिदिरपुर के जुलूस में जाते हुए पहला माल[1] चार्ज करने से कुछ पहले सोना ने कहा था "जानते हो मीनू गाँव जाना चाहती है।"

पुल से एक लारी निकल गयी।

"सामान स्मगलिंग का माल।"

"तिरपाल से ढंका हुआ है इसलिए ?"

"बिलकुल नहीं।"

"फिर ?

"ड्राइवर को मैं पहचानता हूँ। मैकनामारा के कलकत्ता आते समय मैं पकडा गया था न !"

"तो क्या ?"

"तभी इस ड्राइवर से बातचीत हुई थी। वे लोग नकली दवा का कारोबार करते हैं।"

"इसी लिए इतना सीना तानकर निकल गया।"

"जेब मे पूरा मन्त्रिमडल जो डाल रखा है।"

सोना ने जीभ निकालकर होठ गीले किये। उसके बाद मुँह के दोनो तरफ़ से होठो को खीचने लगा। जाडा है। गर्मी के दिन पूरे हो गये। असल मे सोना की यह आदत बन गयी है। जब-तब होठो पर जीभ फेरता है, मुंह विकृत करके। सोना की जीभ ने चक्कर लगाया, "पहले कहने से क्या हो रहा था ?"

"क्यो ?"

"बन रहा है ?"

"रोकता ?"

"ज़रूर।"

"फ़ायदा ?"

"स्कूल मे बम मारने से अधिक ही होता।"

मुट्ठी हिलाकर सोना ने बात कही। मन्टू का खयाल है, बूर्जुआ शिक्षा-दिक्षा उठा देना ही ठीक है। मगर तर्क से मुक़ाबला नही कर सकता, इसी लिए चुप रहता है। सोना की बात उसके सीने पर छन से लगती है। साथ-ही-साथ चेहरे का भाव बदल गया। गोरा ने दबे स्वर मे डाँट लगायी, "सोना !" सही डाँट नही, ज़रा अपनेपन का पुट लिये हुए थी। असल मे उन लोगो ने उसे मानर खा है। कामरेड गोरा, कहते-कहते चुप। दो हाथ जमा देने पर भी कोई आपत्ति नही है। सोना तो कहता है, "गोरादा ग़लती नही कर सकते। मन्टू इतनी ज्यादती पसद नही करता।" गुरूडम। डाँट खाकर वह चुप मार गया। गोरा का चेहरा साधु-सत की तरह हो उठा, "तू कमूनिम है न।" बाकी आगे कहना नही पडता। गोरा की आँख की पुतलियो में सोना बात को तैरते देखता है—हमें धैर्य रखना चाहिए।

और धैर्य शब्द मानो बचपन की भावर्शलिपि के संयुक्ताक्षर की तर
जिसे याद कराने में माँ का पसा टूटता था। सोमा रोकर आफ़त म
था। मन्टू ने गोरा की ओर तिरछी नजर से देखा। आँख के इशारे
गोरा ने सारे मामले का अन्दाजा लगा लिया। और साथ-ही-साथ
हँसी आ गयी।

बूढ़ों को सुधारते-सुधारते अब यह हालत हो गयी। सुधारना
में चिढ़ाने की आदत बन जाती है। उसके बाद यह आदत क्व समका
गयी समझ नहीं पाया। धाराप्रवाह बात करते-करते अचानक व
निकल जाता है। संभाल नहीं पाता।

बूढ़ों के पेट पर बम मारने पर भी एक अक्षर नहीं निकलता
रानधा के पल्ले पड़ा था मरना जिन्दगी भर अनपढ़ रह जाता
र नारानदा की नजर पहले से ही रही है। मुमूस से शुरू करके
स की हड़ताल के समय इलाज के दिमाग़ सड़ने तक—गाव में बू
ोत अलग था। और चौबीसे आदमी को नारानदा सीम से स
ाना चाहता है। लेकिन उस पर सिर्फ़ नजर ही थी इसम अधिक
ी। नारानदा दस हाथों से काम करते हैं। मैस कम्पनी म छँगाई
बाद से खाने में सिर्फ़ चना चबेना खाते थ। घर पर चूल्हा नहीं
।। दो एक बार मजाक-मजाक म घर के बारे म बताते थे।
ाता कुछ पता नहीं था। मिनती भाभी सिलाई-कढ़ाई और छाटा
ाम करके संभालती थी। दिन भर मे ज़रा-सा भाड़ भात या दम
टी बनाकर शाम को चार के लगभग तीन बच्चों को लेकर बैठती
र ठीक उस समय का नियमित अतिथि होता था बूढ़ो। मिनती
ुस्कर कहती थी इस धाइम खाने स दिन भर पट भरा रहता है।'
ा झाड़कर अच्छी फिर सर उठाकर हँसता आ "दिन और आ
ा?'

कबूतरखान की तरह कतारबन्द घरों का पता चलता मिन
र मेहमान आया हुआ है। बैठा हुआ मेहमान। नारकाण पुन ती
दों की बगल मे काई लम्बी परदम बढ़ाकर बल्ली की तरह
ाकर पूछती, "कौन है र, मिनती।"

'67 के बाद नारानदा ने उस कबूतरखाने में बैठकर कहा था, "यह मजदूर पार्टी नहीं है। दुनिया-भर के धंधेबाजों का अड्डा है।" थोड़ा-बहुत सभी लोगों को ऐसा लग रहा था। नारान दा की बात का खुलासा हो रहा था। दुख-दर्द और विपत्ति में आगे बढ़कर छाया की तरह जिसने साथ दिया है, उसी की बात याद आयी थी नारानदा को। वह है बूडो। नारानदा शुरू-शुरू में ढेरों इश्तहार बाँटने के लिए कहते थे। या सिगकल के गेट पर जाने के लिए कहकर चलती हुई बस का हैंडल पकड़ कर झूल जाते थे। रास्ते के बीचोबीच अचानक हाँक लगाते, "बूडो, फेलू की माँ को एक बार अस्पताल ले जाना।" और '67 के बाद हिलते दाँतों जैसे लाल मकान के कबूतरखाने में रात-भर अगरबत्ती जलने लगी। वर्ग-परिचय पाकर लड़ते गये दो जबरदस्त इंसान। मोमबत्ती गलकर फटी हुई दरी पर गिरने लगी। नयी लड़ाई शुरू हुई। और सान पर चढ़कर दिन-ब-दिन बूडो की धार सामने आने लगी। वह कोड़ा बन गया। फिर भी इतने बड़े कांड के बाद भी बूडो 'कम्युनिस्ट' शब्द उच्चारण नहीं कर पाया। जीभ के सिरे पर आटे की पूरी की तरह वह शब्द गोल-मटोल होकर जाने कैसे 'कमूनिस' बन गया और बूडो के मुँह से यह बात सुनते ही उन्हें ठीक सीने के बायीं ओर हृत्पिंड की धड़कन का पता लगा। दोनों आँखें ठहर जाती हैं। उस समय वे गहराई से मानो कुछ सोचने लगते। फिर भी कोई थाह नहीं मिलती। पाँव की सफेद चमड़ी पर बड़ी या छोटी कँटिया की तरह काँटा चुभ जाता है। जंगली बेर की तरह खून की बूँद उभरती है। देखते-देखते वे बिंदियाँ फूल की कली की तरह हो जाती हैं। उसके बाद पत्तियाँ खुलती। उसके बाद खुशबू।

"बीरू!"

"बोल।"

"कितना बज रहा है, देखा है?"

"ना।"

मन्टू ने दोनों उँगलियाँ होठों से दबाकर, आखिरी कश खींचकर, सिगरेट फेंक दिया। मुँह में शायद तम्बाकू घुस गया था। थू-थू करके उसे निकाल दिया। पीछे की कॉर्ड लाइन पकड़कर फिर एक डीजल गाड़ी

काँखती हुई चली गयी। एक झमक रोशनी की बाढ़ से चार तरोताजा चेहरे फीके आसमानी रंग की धूमिल रोशनी से उबर कर, साफ़-साफ़ उभर आये एक बार फिर। मन्टू की बैठी हुई नाक तवे की तरह चमक उठी।

कितने बजे आज की बात है ?

नौ के लगभग।

मन्टू और बीरू बकबक करते जा रहे हैं। चिड़चिड़-चिड़चिड़ करके जुबान से बातें निकल रही हैं। सोना निर्विकार है। होंठ सी कर बैठा है। अपने दोनों पंजे बिछा दिये हैं। कमाई मोड़कर तिरछा होकर बैठा है। गोरा सिगरेट के लिए उतावला हो रहा था। किसी न उस पर ध्यान नहीं दिया। मन्टू गोरा की ओर देख रहा था। सोचा आदमी उतावला है। पैठ नहीं पा रहा है। उतावला होने के अलावा चारा ही क्या है? ए० बी० के आज की बात है ठीक नौ बजे। अभी कितना बज रहा है कौन जाने। ए० बी० को तो होश भी नहीं रहता। बिना देखे चलता है। मिट्टी से अँटे पैजामे पर रास्ते की धूल चढ़ाकर एक-सा बन जाता है जैसे कोई दुश्मन है ही नहीं। एक बार फँस जाने पर फिर कोई बचाव नहीं रहेगा। मजबूत संगठन बनाने का सपना सँजोए मजदूर बस्ती में चेहरा डुबोये रहता है। धुन के चाँद की तरह हमेशा आसमान पर ही लटका रहेगा। और हाथ से इशारा करेगा। यहाँ इस जगह यहीं तो मैं हूँ।

विजयदा अब नौकरी नहीं कर रहे हैं ?

'ठीक-ठीक नहीं पता।

'नौकरी चाकरी तो खत्म हो गयी।

'क्लोजर और लाकआउट का बड़ा ताला तोड़ना चाहिए।

विजयदा की लड़की को देगा सड़क पर मुड़क रही है।

कितने दिन से घर नहीं जाते ?

छह-सात महीना हो रहा है।

पेट की तरह धीवराताल्ले की बस्ती आँखों के सामने उभर आयी। और विजयदा का चपटा चेहरा। रंगकल में काम करते समय चूल्हे पर केतली चढ़ी ही रहती थी। गोरा का जुल्म सबसे अधिक था। कहीं भी

गोरा का पता न पाने पर विजयदा के घर पर वे लोग उसे खोजने जाते थे। खाट पर नगे वदन, विजयदा की काली-कलूटी सूखियाग्रस्त लडकी को गोद मे लेकर पुचकारते देखा जाता। आखिर मे विजयदा को थाने ले जाकर एक हाथ तोडकर ही छोडा गया। काम से हाथ धोना पडा। अब हॉकरी कर रहा है। वह हारने वाला नही है। गोरा अचानक वडवडा उठा, "कल जाऊँगा एक वार।" सोना सुन्न मारे था। उसने अचानक वात को रोक लिया, "मैं साथ चलूँगा।" गोरा ने प्यार मे सोना की ओर देखा। सोना ने गरदन हिलायी। इसका मतलव—अकेले जाकर वखेडा खडा करो। जान तो तुम्हारी अकेले की नही है कि जो चाहोगे वही करोगे। गोरा उसके होंठो की टेढी रेखा देख हँस पडा। अचानक दस वैटरियो की रोशनी उसके पाँव के पास आ गिरी। गोरा के सीने के पास धक-से जैसे कुछ रुक गया। हाथ-पाँव के तलुए सनसना उठे। तभी एम्वुलैंस झट-से आगे निकल गयी।

"वाढ का पानी घुस रहा है।" मन्टू का हाथ ठुड्डी तलाश रहा था।

"तपसे की आखिरी मीटिंग की वात तुझे याद है। डोंगी से चलकर हम पहरेदार के शैल्टर पर पहुँचे थे। चारो ओर सिर्फ भेडी[1]। भेडी का छिछला सीमानुमा पानी। वीच मे टापू की तरह जमीन का टुकडा। आसमान पर पूरा चाँद। उस नाव पर वैठक, चीनी पार्टी की मीटिंग की तरह। वह दिन कैसा व्यस्त दिन था! उस दिन ही वात शुरू कर चुका था। यूँ फर्क रहने पर भी ए० वी० की वात दिल मे वैठ गयी थी, लोकल कमेटी के सदस्यो को कैसे भी वर्कर वैल्ट मे अपनी पनाह वनानी पडेगी। चवूतरे पर वैठकर कुछ पेटी-वूर्जुआ लडको के साथ गरमागरम वातें झाडने से नही चलेगा। यहाँ अगर अपना गढ मजवूत न वना सके, तो फिर चाहे कितना ही छात्र-युवा वगैरह-वगैरह करते रहो, सव दो दिनो मे खत्म हो जायेगा। अभी-अभी लाइन पकड रहा था। और यह लाइन एक वार दिमाग मे घुसने पर उसके वाद सभालने मे कुछ भी नही लगता। मगर मौका नही मिला। जिस गति मे पुलिस झपट रही है

गोरा की आँखो की पुतली मे एक अनजान पछी मृत्यु-यन्त्रणा मे पख

---

1 छिछली तलैया, जिसमे मछलियाँ पाली जाती है।

फड़फड़ाने लगा। आसपास अमल-बगल गारा की आँखें घूम रही हैं। गले के स्वर में भी बेचनी दबी नहीं रही "कितना बज रहा है, मदू ?

"घड़ी कहाँ है ?

अन्दाज स ?

दस तो होगा ही।

'क्या कह रहा है ?

' परेशान मत हो। वह आयेगा जरूर।

भा। ए० बी० तो टाइम का पाबन्द है।

'शायद खोचर[1] पीस लगा है।

अशोक बसु का नाम वे लोग न जाने कब के भूल गये हैं। यहाँ तक कि उसका नाम भी याद नहीं रखा। अब सहज में ए० बी० कहते हैं। इस खोचर लोग भी जान गये हैं। वही तो उस दिन भावलपट्टी स विराज करके एक बड़ई को उठाकर ले गये थे और उससे पूछा था—ए० बी० को नहीं पहचानता। फिर एक नया नाम देना पड़ेगा।

कपास के लम्बे फटे हुए बाग पर गोरा हाथ फेर रहा था। यह जगह बीच-बीच में सरसराती है। बचपन में एक बार पुल पार करते समय औंधे मुँह गिर पड़ा था। बाँस से चोट लगकर माथा कट गया था। लगातार छह महीने भुगता था। दवादारू से कोई फ़ायदा न देखकर टोटका पकड़ा। केंचुए का तेल। खोचर का नाम सुनते ही गोरा को केंचुए का तेल याद आ जाता है और वह जगह सरसरा उठती है। देखते-देखते उसका गाला गरम हो गया। कान स आग-सी मृ बहने लगी। तालतला के सड़ मुहल्ले का कमरतोड़ रास्ता आँखों के सामने उभर आया जो नई दिन बना गया था। और मन्टे औंधे मुँह गिरा था। खाली हाथ तीन दौघर भी मन्टे के साथ मुकाबला नहीं कर सकते थे। सब वहीं से शुरू हुआ।

तीन आदमियों का एक दल आवरब्रिज के नीचे से धीरे-धीरे आ रहा है। जगह अँधेरे में है। चेहरा दिखायी नहीं पड़ता। गाना विकम हो रहा है "आज फिर हथियार साथ में नहीं है।' किसी ने पुकार नहीं दिखायी।

---

1 पुलिस विभाग का आदमी।

सब खिच-से गये। गोरा ने झट-से पीछे देखा। नही, ठीक है। मन्टू खुद-ब-खुद उठकर चारो ओर पगला चक्कर लगा रहा है। गोरा ने तब तक उनके हाथ मे स्टेंसिल का टीन देख लिया है।

"बैठ।"

"ठहरो न।"

मन्टू मे हमेशा ही बेचैनी ज्यादा रहती है। बहुत अधिक चौकस रहता है। कॉलेज के चुनाव के समय भी इसी तरह बेचैन रहता था। मन्टू ज़रा और निश्चित होना चाहता है। छिपकर तीनो के धुंधले दल को निशाना बनाकर आगे बढ चला। सोना के चेहरे पर विरक्ति की छाया, "धत्, डरपोक कही का।" और मन्टू पान-बीडी की दूकान से सटकर खडा है। कमीज़ के भीतर हाथ डालकर रिवाल्वर का बहाना बनाया। चट से गले की आवाज़ बदल ली, "कौन ?"

"मैं।"

"बूडो।"

"हू।"

मन्टू आड से निकल आया। बूडो का दल खडा हो गया था। ग्वालपाड़े का बूडो। बूडो का ग्रुप। ब्रश और स्टेंसिल लेकर वालिंग करने निकला है। वे लोग इधर और नही बढे। बूडो ही उन्हे चक्करदार रास्ते से ले चला—फोर्थक्लास स्टाफ़ क्वार्टर के भीतर से होते हुए। यही नियम है। वरना नौसिखुओ का दल चारो को एक जगह बैठा हुआ देखकर कही कुछ और न समझ ले। कोई वैसा टैम्प्टिड भी नही है। यह सब अंग्रेज़ी अब बूडो ने भी सीख ली। स्प्रिंग फैक्टरी का बूडो। उसकी बीवी का कभी-कभी अचभा होता है, "यह तमाम अंग्रेज़ी-वंग्रेज़ी कैसे सीखी।" बूडो हँसता है, "हाँ, लिखने को कहते ही सारी विद्या निकल जायेगी। सब-कुछ सुन-सुनकर सीखा है। हाँ, मगर मतलब जानता हूँ। टैम्प्टिड का मतलब है, सीता की अग्निपरीक्षा।"

चूने की बाल्टी उतारकर चेचक के दाग़-भरे चेहरे वाले लडके ने ज़रा दम लिया। फिर चलना शुरु किया। सिगकल के निवारण के हाथ मे कूंची। छंटाई मज़दूर निवारण की फटी खाकी पैंट पर कतला मछली की

तरह ढेर बन गया है। और बूढ़ों के हाथ में माचों का [illegible] की तरह हिल रहा है।

"आज रेल क्वार्टर भर देंगे।"

"बहुत जल्दी निकला है!"

"नहीं और रात को भूसा के बच्चे पोंछने [illegible] है। [illegible] सीढ़ी और बड़ी-सी एक धून की बाल्टी लेकर।"

"अच्छा मजाक बना है।

"हाँ।"

बूढ़ों का रूप धूमिल छाया की तरह अँधेरे में [illegible]। [illegible] ने बस्टबिन के दूसरी ओर खड़े होकर उन्हें बिल्ली की तरह [illegible] देखा। काफी देर पहले पश्चिम का [illegible] हो गयी है। [illegible] बकरी के चमड़े की तरह तना हुआ-सा लग रहा है। मन्नू [illegible] पोस्ट के बीच बैठ गया। जब से रेजगारी निकालकर [illegible] गिन रहा है। सोना फिर होंठ चाट रहा है। गोरा [illegible] पर हाथ फेर रहा है।

"कुल साठ पैसे हैं!"

सोना ने बहुत सोचे बगैर कहा, "काफी हैं।

"तू तो अकेले ही दो डबलरोटी निगलता।"

"माफी देना।"

"फिर दोपहर के खाने पकड़ लेने पर छदाम की भी [illegible] रहेगी।

बिन खाये भी सात दिन तक जूझ सकूँगा।"

"बक मत!"

"बाबा साठ पैसे में खाने का मसला निपटजायेगा।

इस पर और बातचीत नहीं हुई। कमाकस होने पर मन्नू ही इन्तजाम करता है। भात-रोटी और बीमार की जिम्मेदारी जान कम उसी पर आ पड़ती है। गोरा की इन चीजों पर कोई नजर नहीं है। सिर्फ चाय पीकर ही दिन काट सकता है। मँगा मुखम कहता है "गोरा तो जरा-भर भूखों रह जाता है।" साँझ के समय मँगा मुखम से उसकी भेंट होती थी। [illegible] रोड

के कच्चे नाले से सटा, तारकोल के टीन से घिरा छोटा-सा चबूतरा। बीच मे बडी इमली के पेड का बडा-सा तना। और बैटरी का बक्सा। तारकोल के टीन से नटी रबर फैक्टरी और खुले टट्टर मे खुडो की चाय की दूकान। ओवरटाइम से पहले जरा वक्त मिलता है। ठीक उसी समय गोरा हाजिर होता था। गैठी हुई गजी उस समय रबर की कालिख और मशीन के तेल से तर है। सुबल हाथ मोडकर ऊपर उठाता। लाल सलाम। गोरा का हाथ भी मुट्ठी बँधकर ऊपर उठता था। इसी को लेकर एक दिन तूलकलाम हो गया था। ब्रजेन बाबू के जूते के तले की तरह सूखे पिचके चेहरे पर इस बात ने सिरिज से सुर्ख खून दौडा दिया था और काले रबर की गेंद से पम्प करके प्रेशर नापने की सीसे की गोली रेस के घोडे की तरह दौड रही थी, "नमस्कार कहने से क्या आदर्श सड जाता है।" पुराने पायो की टूटी खटिया ने गोरा के बाप की गठिया के दर्द से खोखली हड्डियो के चरमराने की-सी आवाज की थी। और गोरा हँसा था। निर्मल, सरल हँसी। फिर भी भाले की फाल की तरह उद्धत, "यह मामूली बात नही है, समझे।"

गोरा को कोई बात कहने की फुर्सत दिये बगैर ही सुबल पूछता था, "खाया है कुछ ?" उसे जुबान खोलने का मौका ही नही देता था। फिर तो हडहडाकर मेलगाडी चल पडती। रबर कारखाने के यूसुफ और नाटे अली को गोरा के बारे मे खूब पता है। इसी लिए जबरदस्ती टिफिन से रोटी निकालकर उसे एक-आध रोटी खिला देते हैं।

ह्यूज रोड पर एक के बाद एक झडा फहरेगा।

आज ही तो स्प्रिग फैक्टरी की चिमनी के माथे पर बाँध दिया है। फडफड करके उड रहा है। नीचे एक पोस्टर लगा दिया है। गोरा ने कोई बाधा नहीं डाली। कोई और वक्त होता तो इसे लेकर गजब का काड होता। आज मिजाज ठीक नही है। कमजोर ट्यूबलाइट अँधेरे के साथ मुकाबला नही कर पा रही है। धुंधला, अधमरा अँधेरा पाइप की तरह टूटे-फूटे और कच्चे नाले मे कराहते हुए उठकर आ रहा है। बीरू बेचैन हो उठा, "अब बैठना ठीक नहीं है।"

"ऊँ हूँ।"

"इसी वक्त राउड पर आते हैं।"

'हम लोगों के चले जाने पर ए० बी० मुश्किल में फँस जायगा।

"अब नहीं आयेगा।

"उसकी बात कभी भी इधर उधर नहीं होती।"

दीक ने कुछ कहते-कहते बात को बीच में ही निगल लिया। बेचैनी बढ़ती ही जा रही है। ए० बी० के चरित्र को लेकर दो-एक बातें हुए। थोड़ी देर चुप्पी। मन्टू ने आवाज करते हुए पीठ खुजलायी। मुँह बिचका लिया। और रात बढ़ रही थी। मोड़ और भी सूना होता जा रहा है। मास्टरटाइम पूरा करके दो-दस की लिफ्ट के अन्दर साथ भी एक-एक करके लौट गये। अब यह पहुँचकर बदन को तर करने वाली ठंडी हवा बह रही है। बसंत की हवा। चोरा की कमीज का कोना फड़फड़ आवाज करता हुआ उड़ रहा है। सोना आँखें छोटी किये ठाक में रहा था। हवा की ठंडक। मन्टू पाँव का टखना दबा रहा था धीरे-धीरे। मैकनामारा में आगमन पर पुलिस की लाठी खायी थी। अब कभी-कभी दोनों टखने सूज उठते हैं।

आँखों के सामने मेडिकल कॉलेज के पीछे का रास्ता उभर आया। नारों का विचित्र छंद और गति अभी भी दौड़ते हुए जुलूस की तरह उसकी स्मृतियों में छा गये—'मक मैक मैकनामारा—गो, गो गो बैक!' कंधे के साइडबैग में चिपका आमफटिया बड़ 'मास' लेकर जुलूस से जरा हटकर चल रहा था। जुलूस के आगे-पीछे गाढ़ा काला रंग। आठ-दस वैन चल रही थी। मैकनामारा हेलिकॉप्टर से शहर का चक्कर लगा रहा था। कलकत्ता शहर। जुलूस विश्वविद्यालय से सटी हुई पतली गली के मुहाने पर पहुँचते ही अपने को और नहीं सँभाल सका। तीन वैन जुलूस के साथ थीं। हेलिकॉप्टर से मैकनामारा इस अजब शहर की जाँच-पड़ताल कर रहा था। और नष्टे बहुत ही दिक्कत से ढोकर लाये गये 'मास' के इस्ते माल के लिए दाँत पीस रहा था। सामने वाली वैन उस जकड़ा रही थी। विश्वविद्यालय से सटी हुई गली पर आते ही किसी ने कॉस्टेबुल की लाठ छीन ली। और एक ने लाठी। काली-दुबली-पतली एक लड़की ने एक पुलिस वाले का हरा टोप छीनकर आसमान में उछाल दिया। उसके बाद ही टीयरगैस-हुड्डी ने वार करना शुरू किया। और बम। भोर मारा

कलकत्ता शहर का सीना चीरकर आसमान की ओर दौडा। हैलिकॉप्टर उस वक्त भी चकरघिन्नी खा रहा था। मन्टू खडा हो गया था, एक मनिहारी की दूकान के शेड के नीचे। सादा कपडे पहने दो-तीन पुलिस वालो ने आकर उसे खीचकर वैन मे ला विठाया। जेल से निकल आने के वाद से ही वीच-वीच मे दर्द चिलक उठता है।

उसी दिन की ही तो वात है, जव खोचर के दौडाने से गोवरा तेजी से क़ब्रगाह की दीवार लाँघ गया था और उसके पाँव मे मोच आ गयी थी। ज़रा-सा चूकते ही काम तमाम हो जाता। सुकु दीवार के एकदम उस पार था, इसलिए। उसने झट से उसे खींचकर उठा लिया। अत मे न सभल पाने के कारण दोनो ही गदे नाले के भीतर औंधे गिर पडे थे। कीचड की सडी वदवू फिर भी नाक मे नही घुस सकी थी, पुलिस वाले की गालियो की वजह से। पागल साँड की तरह वह गालियाँ वक रहा था।

मन्टू टखने की मालिश करते-करते हवा की नमी से खुश हो उठा। 'समझे !' गोरा को सम्बोधित करके उसने वात को खीच दिया। गोरा ने अनमने भाव और चितित आँखो से मन्टू की ओर देखा। मन्टू के गालो मे गड्ढे पड गये थे। भरे हुए चेहरे पर गड्ढे। पहले शरीर भी भरा हुआ था। अव धूप-पानी-तूफान सहने और पेट के धँसने से शरीर खिच गया था। मगर चेहरा अभी भी फूला-फूला-सा है। पाण्डु रोग मे ग्रस्त रोगी की तरह।

"जेल मे एक वडा जवरदस्त गाना सुना था। खूव याद हो गया था।"

"सुना दे।"

वीरू ने होठ टेढे किये।

मन्टू ने गला खखार कर गाने की कोशिश की। दो-एक टूटे-फूटे शब्द। हिन्दी और वँगला मिली-जुली।

कैदी वोले वीमार वीमार, डागडर वोले वीमार नही।
कम्पाउण्डर को दिया चवन्नी भर्ती से इनकार नहीं

थोडी चुप्पी। वीरू का मुहासेदार, विरक्त, निर्विकार चेहरा। मन्टू वेचैन हो रहा है। गोरा खुले गले से मजाक करता है।

'तू अब कविताएँ नहीं लिखता ? जमती घास, नयी रेखा और जाने क्या-क्या।

"घुस्स।

मन्टू ने उदास होने का बहाना किया।

और ठीक उस वक्त उसके कान की नसें सुरसुरा उठीं। गोरा और बीरू तब भी कविता को लेकर मज़ाक कर रहे थे। मन्टू आधा हाथ सरक गया। कान की नसें कँपकँपाते हुए धीरे-धीरे एक सनसनाहट छोटी-सी लहर की तरह सारे बदन में फैलती जा रही है। जैसे कोई उसे कोड़ा लगाकर सीधा कर रहे हैं। ढीलेपन का भाव छँटता जा रहा है।

आज की मीटिंग बहुत ज़रूरी थी।

सोना ने अफ़सोस के साथ कहा।

और बात सुनते ही गोरा सीधा हो गया। वह अचानक खड़ा हो उठा। आज की मीटिंग में ए० पी० के साथ मामला रफ़ा-दफ़ा हो जाता। इस तरह लटके रहने से तो चलन से रहा। मिट्टी में दाँत गड़ाकर कुछ-न-कुछ करना चाहिए। शुरू के दिनों में इतना अकेला नहीं था। सभा पकड़कर मारे जमाता था। रात रात जागकर इश्तहार लगाता था। और दस-बीस लोग मिलकर बीच मैदान में इकट्ठे होते थे। दो-तीन सालों में सब कुछ जाने कैसा उलझ गया है। अब दीवार पर इश्तहार लगाते समय अचानक पीठ में कैप्सूल धँस सकता है और पोस्टर के सफ़ेद कागज़ पर लाल धब्बे लग सकते हैं।

रात गहराने के साथ-साथ सन्नाटा पूरे इलाके पर छा गया था। मेहनतकश और आधे भूखे लोगों का इलाका। टोकरी की तरह बस्ती। धुआँ। कतारबंद चिमनियाँ आसमान में कालिख पोत रही हैं। सड़क के नल से छर छर की आवाज़ निकल रही है। थोड़ी देर पहले एक खजैला कुत्ता नल के पास पूँछ हिला रहा था। किसी शराबी का नकियाया स्वर कानों में बज रहा है—जिन् द् पी इ इ। रात भर सारे इलाके में लड़खड़ाते शराबियों लावारिस कुत्तों और लोफरों का राज चलता है। और गोरा का दल रात रात जागकर दीवारों पर आग के टुकड़े की तरह एक-एक शब्द चटका देते हैं। सोना ने अपनी परदम मुसकाई

"धत्तेरे की !"

"क्या हुआ ?"

"इस तरह बैठे रहना भला अच्छा लगता है ?"

"क्या करेगा ?"

"तुम्हे तो पता है कि घोडे के अड की तरह पोसाना मुझे अच्छा नही लगता। और बहस-मुबाहिसा मुझे आता ही नही । मार्क्स का इस नम्बर का वाल्यूम, लेनिन के । इससे बेहतर है बाबा, मुझसे पहरा देने, पुलिस का घिराव तोडने, आग की चिनगारी बिखेरने के लिए कहो। सोना का एक पाँव ठीक है।"

सोना आग लगाकर रास्ता बनाना चाहता है। वह लडाई को समझता है। युद्ध ! कोई खेल-कूद नही है। जरा-सा चूकते ही जान मरे हुए मेढक की तरह चपटी होकर पडी रह जायेगी। इसीलिए झमेले की बू पाते ही इकहरी चोटी का रिबन हवा मे उडाते हुए लम्बी गली से मीनू दौडी आती है, "सोनादा कहाँ है ?" पिछली बार उसके सवाल के जवाब मे उसकी ओर देखते ही गोरा की आँखो मे बारिश की बूंदो की तरह पानी पकडा गया था।

वीरू ने पतले बालो को माथे से हटाकर हिस्हिस् आवाज करते हुए कहा, "मेरा मन कह रहा है ।"

"क्या ?"

"क्या कह रहा है ?"

"वे तीनो ही झुक पडे।"

वीरू तुतला रहा है—"ए० बी० पकडा गया है।"

"फालतू बक-झक मत कर, वीरू !"

गोरा का बिगडा मूड टुकडे-टुकडे होकर बिखर गया। मन किसी तरह की लगाम नही मानता। कहीं काँटा चुभा रहता है। एक-एक करके भी कम नहीं पकडे जा रहे हैं। फिर ए० बी० की चालढाल बहुत ढीली है, जैसे दुनिया मे उसका कोई दुश्मन ही नही। पाजामा-कुर्ता लटरपटर करते हुए चलता है तो कोई होश नहीं रहता। इसके साथ प्यार। उसके साथ गले लगना। जरा-सी भी सावधानी नही बरतता।

'कस रेड हुई है ।

कहाँ ?

बी० सी० में ।

'बासूचर में ?

''हाँ ।

तीनों का सिर एक-दूसरे से भिड़ गया है। वे एक-दूसरे के पास सरक आये हैं। गोरा के मुँह से कोई बात नहीं निकल रही है। ऐसी हालत जिन्दगी में पहले कभी नहीं आयी। जैसे-जैसे दिन गुजर रहे हैं वैसे-वैसे सब-कुछ हाथ से बाहर होता जा रहा है। कोंच-कोंच कर पुलिस तंग कर रही है। संभालते हुए भी आग कोयला बनी जा रही है। गोरा गांधी का चेला नहीं है कि कहे 'पड़े-पड़े पिटाई कराते रहो मगर । सामने भूल रहा है बबसूरत-सा एक 'ममर'।

ऐसे समय गोरा का मारानवा की बात याद आयी है। हाल ही में मजदूरों के बीच घुसा था। बातचीत चल रही है। दो-एक शेल्टर भी बनाये हैं। दो चार लोगों के रहने लायक। ऐसे समय यह हुज्जत। देर बरदाश्त नहीं हो रही है। लोगबाग हथियार वगैरह छोड़ अपने अपने इलाकों में जाना चाहते हैं। लड़के। मौका देखकर सरकार ने लोचर लगा दिया है। यही सोचते हुऐं गोरा चिल्ला पड़ा "साला जरा सुस्ताने का टाइम भी नहीं दे रहा है।

देखो आज की मीटिंग ।

गोरा ने भी साथ-साथ सिर हिलाया हाँ आज ही लाइन लेकर इस पार उस पार कुछ भी हो जाता। हाथ बाँध कर मीर मूसा बनकर अब बैठा नहीं जाता। बिना लड़े ना करने पर कौन से जहन्नुम में जाओगे। इधर चोचरों की चौकसी के सामने टिकना मुश्किल। सचमुच अगर बो-बस को गिरा देने का काम होता तो वह पीछे नहीं रहता। मगर इससे कुछ होने वाला नहीं है। इस लाइन में गलती है। अगर जरा वक्त मिलता।

'मगर ए० बी० क्या यह सब मान लेगा ?

"देखा जायेगा। आदमी तो समझदार है।

ए० बी० की बात उठते ही सोना ने गरदन मोडकर फिर रास्ते की ओर देखा। बीरू की बात याद हो आयी। बीरू की ओर सुलगते कोयले की-सी दहकती आँखो से कई क्षण स्थिर देखता रहा। बीरू बेचैन हुआ, "क्या ?" सोना ने आँखें फेर ली। गोरा भी कुछ देख नही पा रहा है। फिर सोना ने बीरू की ओर सीधे देखा। जलते हुए कोयले के टुकडो—दोनो आँखो से हवा टकरा कर चिनगारी बिखेर रही है। बीरू चिल्ला पडा, "मामला क्या है ?" सोना ने दांतो को खट की आवाज के साथ जोडा, "ए० बी० को अगर कुछ हुआ तो तुझे जिन्दा नही छोडूंगा। यह सारी अपशकुनी बातें निकाल दूंगा।"

"सस्कार !"

"कतई नही।"

"फिर क्या ?"

"क्या भला, ऐसा उसने क्यो कहा ? घर पर एक बार पुलिस नेकुडी हिलायी थी कि बेहाला ननिहाल मे हवा। ऐसी बात कहते समय ।"

मन्टू ने एक हाथ से सोना का चेहरा अपनी तरफ मोडा। हलकी-सी मुस्कान है मन्टू के होठो पर, काली आँखो की पुतलियों मे, 'तेरा कुसस्कार अभी तक नही गया।" सोना ने और नही छेडा। नाराज होकर बैठा रहा।

"क्या करोगे ?"

"हाँ, क्या करोगे ? कब तक और बैठे रहोगे ?"

गोरा ने इन बातो का जवाब दिये बगैर बीरू से फिर सिगरेट मांगा। बीरू ने अनमने भाव मे सिगरेट थमा दिया। हुस-हुस करके कश खीचने लगा। सोना खभे पर भार डाले एक स्पष्ट-सी आवाज को पकडने की कोशिश कर रहा है। ट्यूबलाइट को धूमिल रोशनी मे अब कुछ भी चलता नजर नहीं आ रहा है। अधकार गाढा होता जा रहा है। रास्ता बिलकुल खाली है। कोई नही है। बीरू फुसफुसाया, "चलो, निकला जाये।"

"ठहरो।"

निवारण को लौटने देखा जा रहा है। फटी हाफपैंट देखकर उसे

पहुचाना गया। घुटने तक पैंट उतर आयी है। धीरे धीरे कदम रखता हुआ आगे बढ़ रहा है। पतली-पतली टाँगें। आज शायद पेट में दाना नहीं पड़ा है। लड़खड़ाते पाँवों को देख गोरा सोच रहा था। बीवी को ससुराल भेज दिया है। बच्चा अनेपी। असल में मौत के सामने मरेपी उसे देखना नहीं चाहता निवारन। उसकी छाती धँस गयी है। तीखा चेहरा। सिगफस की नौकरी पर आने के बाद चेहरा और तीखा हो गया है। अब दिन रात काम मिलने पर राक्षस की तरह पिल पड़ता है। मगर हाँ यह सब पोस्टर लिखना-उखना उसे रास नहीं आता। अब निवारन का शरीर साफ़ दिखने लगा है। चेहरे का मस्सा तक। हालाँकि उसके दोनों पाँव ही नजर को खींचते हैं। पकी पीली-सी हड्डियाँ। तेल पी हुई लाठी की तरह। पाँव के रोम तक नजर आ रहे हैं।

'हो गया?

'नहीं।

'तो?'

"मुझे लोग अभी भी कह रहे हैं मेरी तबियत ठीक नहीं है।

'क्या हुआ?

'जाने कैसा चक्कर आ रहा है।

बात कहते-कहते निवारन बैठ गया। निवारन का बड़ा चेहरा उसके चीमड़ बदन से मेल नहीं खाता। जैसे उसे हलके से किसी ने ऊपर लगा दिया हो। हाथ की नसें विद्रोह में उभरी हुई हैं। उनके सिरों के ऊपर आसमान सारी के सितारों की तरह झिलमिल कर रहा है और ठंडी हवा बह रही है। गोरा न प्यार से पूछा 'यूनियन क्या कह रही है?"

"भेड़ों का दल! क्या कहेंगे भला?

बातचीत जरा झोंका खा गयी। निवारन पहले की बात का सूत्र खींचता गया "काशी बाबू का कारखाना तो साला मेरी आँखों के आगे खड़ा हुआ है। शुरू-शुरू के दिनों में हम कुल तीन लोग थे। कसाई का काम होता था। और तेल एक थी। काशी बाबू उस समय चीनापाड़े में एक औरत के साथ रहते थे। घर से काली कौड़ी नहीं लगायी। सूअर की तरह डटे तब तीन प्रेस बने। और अब साले ने मुझे ही लात मार दी।

समझे गोरा दा, कारखाने मे आग लगा दूंगा। जरूर लगाऊँगा, साले किसी की भी नही सुनूंगा।" तभी गोरा को लगा कि वह एक ऐसे विशालकाय मजदूर को देख रहा है, जो अपने सख्त मजबूत हाथो से मशीन तोडे डाल रहा है। उसके चेहरे की सिलवटो, हाथ की मछलियो मे गुस्से की आवाज गर-गर कर रही है।

गोरा निवारन के स्वर का उतार-चढाव ध्यान से सुन रहा है। बात करते-करते आक्रोश की तेजी मे निवारन का गला गर्र-गर्र करने लगा है। निवारन का रग-ढग गोरा अच्छी तरह जानता है। काम गँवाने के बाद से वह और भी अधिक चिढा हुआ है। शुरू-शुरू में गोरा या मन्टू के साथ वह थोडा-बहुत बहस-मुबाहिसा भी करता था। अब वह हर रोज गरम हो उठता है। उसकी बीवी ने पहली बार एक मरा हुआ बच्चा जना था। तभी से निवारन बहुत टूट गया है। दूसरे को दूध-बार्लि नही दे सका, वह भी गया। दो बार के दबाव से बीवी कुबडी हो गयी थी। कमर टूटने और शरीर सूखने के बाद भी किसी तरह जिन्दा है। फिर इस बार तो कोई बात ही नही है। निवारन ने बीवी को इस बार मरने के लिए भेजा है। तीन दिन मे एक वक्त जरा-सा खाना देने की ताकत भी उसके बाप मे नही है। निवारन का अब आगे-पीछे कोई नही रहा।

"खाया है?"

"कब?"

"दिन-भर मे एक बार भी खाया है?"

"हां। आज दोपहर को बूडो ने खिलाया है।"

"तू कमूनिस है ना!"

"सच कह रहा हूँ, खिलाया है।"

"अच्छा।"

निवारन को यही एक बीमारी है। भूख से सूखकर मर रहा होता है, फिर भी जुबान से किसी को कुछ नहीं कहता। गोरा ने हजार दफा उससे सिगकल के टिफ़िन की घटी के वक्त गेट पर जाने के लिए कहा है। मजदूरो का मन-मिजाज समझकर, छँटाई के खिलाफ जबरदस्त लडाई शुरू करने का मौक़ा तलाशना चाहिए। ऐसी बातें निवारन नही छूता। जबडा

हिलाकर उसने जम्हाई ली। ज्यादा खींचने पर बिगड़ जाता है वे साले मुसलमों की जात के हैं सब! शिबू को पिछली बार पीट-पीट कर मार डाला था। यह बात थोड़ी ही याद है। सब साले निगल रहे हैं बच्चा पैदा कर रहे हैं और गरदन मोड़ सिमकम में घुसकर खूनी पानी की बाढ़ ला रहे हैं।"

निबारन ने कांव-कांव कर सांस छोड़ी। असल में सांस नहीं छोड़ी एक आवाज की। बोर देकर बात करने से पहले ही निबारन न यह आवाज की थी। पहले की बात का सँवार बुहार कर हटाता है। उसके बाद ही आवाज निकलती है सु सु सु। चपटी नाक सु-सु आवाज से भूल जाती है 'साला मैं भी मर रहा हूँ (निबारन के कपाल पर बूँदें उभर रही हैं। एक-दो करके। आँधी-तूफ़ान की चोट खाया चेहरा सख्त हो उठा।) इतनी तुक-तुक करके क्या होगा? सभी आशाएँ छोड़कर मर जाऊँगा फिर जो भी रहे क़िस्मत में।

'क़िस्मत में?

हाँ उसी में।

वह फिर तेजी से निकल गया। ओवरब्रिज के नीचे से निबारन का लम्बा शरीर छाया की तरह ओझल हो रहा है। उस ओर देखते हुए फुसफुसा कर मन्टू ने कहा 'अब वह बिलकुल मारने-मरने पर उतारू हो उठा है।" मन्टू की बात बह गयी। कोई बोझ नहीं रहा है। सिर भारी भारी-सा है। ए० बी० के बारे में सोचकर उसने रास्ते के सुदीस मोड़ की ओर देखा। आँखों में जलन। दो रातों से पलकें भी नहीं जाड़ सका है। अब बोझ कर नहीं रख पा रहा है। मन्टू ने गोरा से पूछा "पिछले हफ्ते बीतलातल्ला गये थे?

'क्यों?

'मुझ पूछ रही थी।

हूँ।

"एक बार मिलने में क्या जाता है तुम्हारा!"

क्यों?

"मौसी तो पानी भी नहीं ले रही हैं।

"माँ जैसी ही है।"

"तुम भी भला कैसे हो!"

"इतना जो वक रहा है—तू घर गया था एक वार ?"

"वाह।"

"क्यो ?"

"जाकर पकडा जाऊँ, क्यो ?

"ओफ! और मुझे भेजकर पहरा वैठायेगा, यही न ? उसके वाद सव मिलकर ।"

नीद भगाने के लिए सोना उठकर चक्कर लगाने लगा। वीरू चुप है। गरदन कटी हुई मूर्ति की तरह लटकी है। यूँ भी लडका कमजोर है। इतनी ज्यादती वरदाश्त नही हो रही। वीरू का सिर गोरा के कधे पर आ टिका है। गोरा अनमने भाव से वीरू के वालो मे उँगलियाँ चला रहा है, "मुझे कोई दिक्कत नही होती, तुम लोगो के साथ हूँ न। आजकल क्या होता है, जानते हो ? दिन-भर मे एक वार जरा वक्त वचाकर, तुम लोगो के साथ जमकर वैठ न पाने से, जाने कैसा सुन्न-सा हो जाता हूँ! पुलिस का झमेला वढने के साथ-साथ लगाव भी वढ रहा है, देख रहा हूँ। सव जव एक साथ रहते हैं, तव कुछ याद नही रहता। उस समय लगता है, वाकई दुनिया को तोडना-गढना कोई वडी वात नही है। अकेला होते ही तरह-तरह की वातें मन मे आती हैं। कमजोरी महसूस होने लगती है।"

अव वे चार हैं—मन्टू, वीरू, सोना और गोरा। और तारकोल की तरह अँधेरा। अँधेरे मे चार मूर्तियो के हाथ, पाँव और होठ हिल रहे हैं। फिर भी चारो जैसे खो से गये हैं। कितनी देर से वैठे हैं, खयाल ही नहीं रहा। चुम्बक की तरह यह मोड उन्हे खीचे हुए है। या एक मकडे के मुँह से निकली अँधकार की तार से वुने जाले मे चारो ही फँस गये हैं ? सोच रहे हैं। चाहने पर उठकर जा सकते हैं। उठूँ-उठूँ करके भी वैठे है। जव चाहूँ, उठूँ। सोच रहे हैं, यह तो हाथ हिला रहा हूँ, पाँव हिला रहा हूँ। उठने मे अव कितनी देर ? जवकि ये फँस गये हैं। शायद किसी के सीने के भीतर छमछम घुँघरू वज रहा है, डर की मुद्रा लिये नाच की धुन पर। दाव लिया है डर ने गला। सव डरपोक समझेंगे, इसलिए साँस वद किये

हुए हैं ऐसा भी नहीं है। असम में मन के अन्दर बातचीत चल रही है। पुलिस आ जाय तो भी क्या ! सोना का वानसट है न। चट से दौड़ जाऊँगा अस्पताल के मैदान में हाईड्रेन्ट पारकर वो बम हाथ में लेकर खड़े होने पर बस। इसके अलावा ए० बी० का ही तो रिस्क अधिक है। क्या हुआ, वह आ क्यों नहीं रहा है ?

जो कुछ बातचीत चल रही है वह आपस में ही है। इसका कोई लक्ष्य कोई उद्देश्य नहीं है। बात-दर-बात निकल रही है। असम में चारों तरफ के माथे एक बड़ा-सा आ लगन के कारण डूबे हैं। आगे कौन-सी आशंका ? ठेइस नम्बर बस्ती की उस सफ़ेद बिल्ली की तरह गोरा की नाक जाम कौन-सी एक बू सूँघने के लिए घास पर बैठी है। साढ़े आठ के लगभग चारों इकट्ठा हुए। दो घंटे बीत गये। अभी भी कितने मिनट-सैकिंड गुज़रे जा रहे हैं उनके बदन के रोमों पर से। सुरसुराते हुए। जबकि इतनी देर में एक बार भी याद नहीं आया कि असम में वे पाँच लोग हैं। और उस पाँचवें नम्बर आदमी का पता नहीं जिसे लेस्टर का इंतजाम करना था वह हाजरा रोड में सी० पी० एम० के दस्तू गिरोह के हाथों पड़ गया था। बाकई दस्तू का गिरोह उसे उठाकर ले गया है या नहीं इसकी भी कोई गारंटी नहीं है। ले गये होंगे तो अब तक उसे सड़ नाले की कीचड़ में गाड़ दिया होगा। इस ख़याल ने एक बार भी मन में दरार पैदा नहीं की। लाइन पर गाड़ियाँ गुज़री हवा और ट्यूबलाइट की स्वप्निल नीली रोशनी के नीचे वे लोग मूर्तियों की तरह पड़े हुए हैं।

अचानक सोना धैर्य खोकर गर्म हो उठा।

'नहीं !

"क्या ?

'अब उठ।

ए० बी० ।

'इस्स ।

तालु में जीभ टिकाकर मन्द्र स आवाज़ की। सोना का हाथ आदत के मुताबिक जेब में चला गया। हथियार भरकर चलने की आदत है। आम

"माँ जैसी ही है।"

"तुम भी भला कैसे हो !"

"इतना जो वक्त रहा है—तू घर गया था एक बार ?"

"वाह !"

"क्यो ?"

"जाकर पकडा जाऊँ, क्यो ?

"ओफ ! और मुझे भेजकर पहरा बैठायेगा, यही न ? उसके बाद सब मिलकर ।"

नींद भगाने के लिए सोना उठकर चक्कर लगाने लगा। वीरू चुप है। गरदन कटी हुई मूर्ति की तरह लटकी है। यूँ भी लडका कमजोर है। इतनी ज्यादती बरदाश्त नही हो रही। वीरू का सिर गोरा के कधे पर आ टिका है। गोरा अनमने भाव से वीरू के वालो मे उँगलियाँ चला रहा है, "मुझे कोई दिक्कत नही होती, तुम लोगो के साथ हूँ न। आजकल क्या होता है, जानते हो ? दिन-भर मे एक बार जरा वक्त बचाकर, तुम लोगो के साथ जमकर बैठ न पाने से, जाने कैसा सुन्न-सा हो जाता हूँ ! पुलिस का झमेला बढने के साथ-साथ लगाव भी बढ रहा है, देख रहा हूँ। सब जब एक साथ रहते हैं, तब कुछ याद नही रहता। उस समय लगता है, वाकई दुनिया को तोडना-गढना कोई बडी बात नही है। अकेला होते ही तरह-तरह की बातें मन मे आती हैं। कमजोरी महसूस होने लगती है।"

अब वे चार हैं—मन्टू, वीरू, सोना और गोरा। और तारकोल की तरह अँधेरा। अँधेरे मे चार मूर्तियो के हाथ, पाँव और होठ हिल रहे हैं। फिर भी चारो जैसे खो से गये हैं। कितनी देर से बैठे हैं, खयाल ही नही रहा। चुम्बक की तरह यह मोड उन्हे खीचे हुए है। या एक मकडे के मुँह से निकली अंधकार की लार मे बुने जाले मे चारो ही फँस गये है ? सोच रहे हैं। चाहने पर उठकर जा सकते हैं। उठूँ-उठूँ करके भी बैठे हैं। जब चाहूँ, उठूँ। सोच रहे हैं, यह तो हाथ हिला रहा हूँ, पाँव हिला रहा हूँ। उठने मे अब कितनी देर ? जबकि वे फँस गये हैं। शायद किसी के सीने के भीतर छमछम घुँघरू बज रहा है, डर की मुद्रा लिये नाच की धुन पर। दाब लिया है डर ने गला। सब डरपोक समझेंगे, इसलिए साँस बद किये

हुए हैं ऐसा भी नहीं है। असल में मन के अन्दर बातचीत चल रही है। पुलिस आ जाये तो भी क्या! सोना का चानसट है न। चट से दौड़ जाऊँगा अस्पताल के मैदान में हार्डकोर वासकर दो बम हाथ में लेकर खड़े होने पर बस। इसके अलावा ए बी० का ही तो रिस्क अधिक है। क्या हुआ वह आ क्यों नहीं रहा है?

जो कुछ बातचीत चल रही है वह आपस में ही है। इसका कोई लक्ष्य कोई उद्देश्य नहीं है। बात-दर-बात निकल रही है। असल में चारों शंका के आगे एक बड़ा-सा आ' लगने के कारण डूबे हैं। जाने कौन-सी आशंका? तहसनम्बर बस्ती की उस सफ़ेद बिल्ली की तरह गोरा की नाक जाने कौन-सी एक बू सूँघने के लिए घात पर बैठी है। साढ़े आठ के लगभग चारों इकट्ठा हुए। दो घंटे बीत गये। अभी भी कितने मिनट-सैकिंड गुज़रे जा रहे हैं उनके बदन के रोमों पर से। सुरसुराते हुए। जबकि इतनी देर में एक बार भी याद नहीं आया कि असल में वे पाँच लोग हैं। और उस पाँचवें नम्बर आदमी का पता नहीं जिसे मेस्टर का इंतज़ाम करना था वह ब्रूज रोड में सी० पी० एम० के बस्टू गिरोह के हाथों पड़ गया था। वाकई बस्टू का गिरोह उसे उठाकर ले गया है या नहीं इसकी भी कोई गारंटी नहीं है। ले गये होंगे तो अब तक उसे सड़ गाने की कीचड़ में गाड़ दिया होगा। इस ख़याल ने एक बार भी मन में दरार पैदा नहीं की। साइन पर गाड़ियाँ खुली हुआ और ट्यूबलाइट की स्वप्निल नीली रोशनी के नीचे वे लोग मूर्तियों की तरह गड़े हुए हैं।

अचानक सोना धैर्य खोकर गर्म हो उठा।

'नहीं!

"क्या?

अब उठ।

ए० बी० ।"

'इस्स !

दाशु में बीच टिकाकर मन्टू ने आवाज़ की। सोना का हाथ आदत के मुताबिक जेब में चला गया। हथियार लेकर चलने की आदत है। आज

छोड आया, यह खयाल नही रहा। एक दर्द चिलक उठा। दोनो हाथ मलने लगा।

और एक आवाज़ उठ रही है। अस्पष्ट दवा हुआ एक शब्द पहले रुक-रुककर, फिर सिलसिलेवार लगातार। भो-ओ—ओ-भो-ओ-ओ। सर-सराता हुआ। वर्र की आवाज की तरह शब्द। सुना है, वर्र एक वार पीछे पडने पर सात हाथ पानी के नीचे जाकर भी डक मारती है। जहर उँडेलती है। आवाज धीरे-धीरे तेज हो रही है। झुण्ड-दर-झुण्ड वर्र मानो मोड निशाना वनाकर दौडते हुए आ रहे हैं। मन्टू उस समय भी कान लगाये है। अन्दाजा ले रहा है। गोरा और सोना ने आँख मिलायी। वीरू उठ खडा हो गया है। मगर हिल नही पा रहा है। सोना ने इसी बीच ह घुमाकर सिगरेट का कश लिया। थोडा तम्बाखू निकालकर आखिरी खीचा। कश खीचकर टोटा फेंक दिया। फुटपाथ से टकराकर रोशनी हलकी-सी फुलझडियाँ खिली। वर्र की आवाज की तरह शब्द उस स मिट्टी कुतरकर खा रहा है। डक चुभोते हुए आगे वढ रहा है। उसके ही व्रेक लगाने की आवाज़। फिर धूल का भँवर।

"खोचर!"

"ढेला!"

ट्यूवलाइट का खभा अपनी जगह खडा है। गोल-सा सीमेंट चबूतरा खाली पडा है। सूखा हुआ एक शालपत्ता भँवर मे गिरा है। भर मे सारा इलाका खाली हो गया। सोना ने वायें हाथ से ढेला मारा ट्यूवलाइट को निशाना वनाकर। खवे हिलाकर ढेला गेडे की तरह चपटी नाक पर लगा। आधे अँधेरे मे फिर एक पत्थर दौडा। सोना ने फैलाकर फेंका था। झनझनाहट की एक आवाज़ उठी। पतले शीशे टुकडे अँधेरे की कोख मे सबे के हर तरफ छिटककर विखर गये। अन्ध मे दौडते हुए तलुओ मे एक छरछराहट की आवाज हुई। चवूतरा फाड-फाडकर देख रहा है। चारो ओर जलेबी की तरह पेंचदार गली वाए वैठी हैं निगलने के लिए। एक-एक करके वे सभी घेरे के अन्दर गये।

अँधेरा जाग रहा है। धोती-कमीज़ पहने हुए छह-सात सडमुस्टड

से उतरे। चेस के पी पर पसा उठ-बैठकी बदन। फिर भी बदन पर भरोसा नहीं। काली रिवाल्वरों को साँप के फन की तरह निकालकर आगे बढ़ रहे हैं—"भागो मत। भागो मत।" मिरगी के रोगी की तरह अफ़सरों के चेहरे विकृति में मुड़-मुड़कर एक-से बन गये हैं। काले-काले बड़े दाँतों की कतार बाहर निकल आयी है। फटे बाँस-सा गला चढ़ रहा है "हैंड्स अप!"

वे चारों छिटक गये। पनवाड़ी की दुकान का टट्टर झट-से गिर गया। खाली रास्ते का सीना चीर रहे हैं पुलिस के बूट। खोचर के पीछे-पीछे सी॰ आर॰ पी॰ वाले बंदूक लेकर तीनों गलियों के मुँह रोककर खड़े हो गये। विचित्र-सा सन्नाटा। उसके बाद ही भगदड़ की आवाज़। हृत्पिण्ड की धड़कन। चौराहे का मोड़ रणक्षेत्र में बदलने की प्रतीक्षा में कातर। ताक-झाँक करके खोचर लोग गली में घुस पड़े। वैन में हेडलाइट बुझा दी है। जमा हुआ अँधेरा। वैन का इंजन चालू रहने के कारण जाने कैसी आवाज़ हो रही है। सीने में दबी हुई आवाज़।

चमेली की तरह पेंचदार गली के भीतर से एक आवाज़ चक्कर लगाकर उठ रही है 'खोचर!'

फ़ोर्थ क्लास स्टाफ़ क्वार्टर्स के भीतर से बूढ़ो अपना मुँह ढककर घात लगाये निकल आया। उनकी धुँधली छायाएँ चमक उठीं। छाया का निशाना बनाकर खोचर और सार्जेण्ट के रिवाल्वर ने आग उगली। माओ का स्टेनगन थरथराते हुए काँप उठा। साथ-ही-साथ बूढ़ो ने हाँक लगाकर हाथ का माल फेंक दिया। धमाके के साथ हवा में माल मसाले[1] की बू तैर गयी।

धागे की तरह फैले वर्कशाप और रेलवे क्वार्टर्स के भीतर से बूढ़ो के संगी-साथी भी अब पटरी पर चढ़ गये। खोचर लोग कदम-ब-कदम पीछे हटने लगे। पचास-साठ गज़ की दूरी पर दो दल—खोचर पुलिस, सी॰ आर॰ पी॰ और पटरी पर हाथों में पत्थर लिये गोरा का दल। गोरा लड़ाई चलाना चाहता है। मगर खोचरों ने पोज़ीशन ले ली है। चारों ओर से घिर गये हैं। बम रहता तो वह क्षण भर में रास्ता निकाल लेता। गोरा गरज रहा है 'साले चौंच-चौंचकर रास्ता बना रहे हैं।' साला भगजाने

---

1 बम बनाने का मसाला।

मे हथियार की कमी भूल गया है। वूडो के दल के पास भी कुछ नहीं है। उधर से आग उगलती हुई गोलियाँ इधर-उधर दौड रही हैं। लाइन के पीछे का हिस्सा घिराव मे नही आ सका। एक बार गली पकड़ने पर सीधे ह्यूज रोड पर निकला जा सकता है। बस जरा वक्त चाहिए। वरना पीठ छेदकर फोडी भी जा सकती है। सोना बायें हाथ से जादू खेल रहा है। सी० आर० पी० और खोचरो के दल अधाधुध गोलियाँ चला रहे हैं। सोना को निशाना लगाने का मौका नहीं दे रहे हैं। पाँच मिनट उन्हे रोक सकने पर ही वे भाग सकते हैं। किसी भी तरह मौका नहीं मिल रहा है। पाँच हाथ सामने गिरकर गोलियाँ इधर-उधर छिटक रही हैं और फटाश-फटाश की आवाज के साथ जमीन पर गिर रही हैं। गड्ढे बनाती हुई। दो कदम आगे बढने के लिए बदूक लेकर झुक रहे हैं, अपने को सभाल नही पा रहे हैं। और लाइन के पत्थर तीरो की तरह दौड रहे हैं, साँय-साँय आवाज करते हुए।

गोरा की छोटी-सी निहत्थी फ़ौज सभाल नही पा रही है। लगातार पसीना चू रहा है। हाथो से टपक रहा है। हवा भी गर्म हो उठी है। वसत की हवा। जाल की तरह मौत का फदा धीरे-धीरे उन पर घिरता आ रहा है। दाँतो को भीचकर गोरा ने अपना होठ काट लिया, "दोनो ओर मरको।"

दूसरी तरफ खोचर लोग भी लाइन पर चढ रहे हैं। लाइन से वे लोग साँप की तरह लिपटे हुए हैं। इस बीच पाँच-छह लोग वूडो के साथ शिवतल्ले से खिसक गये हैं। सिर्फ सोना का बायाँ हाथ चल रहा है। गोरा लाइन के किनारे झाडियो के भीतर मन्टू को लेकर औंधा गिरा। खोचरो को नजर नही आया। वे लोग चुपचाप पडे हुए हैं। सोना को घेर लिया गया है। मन्टू चिल्लाने जा रहा था, गोरा ने मुँह पर हाथ रख दिया।

वे लोग हाँफ रहे थे। धुकपुकी चल रही थी। काला, तेल चुपडा, चेचक के दागो से भरा खोचर का मुँह थरथर काँप रहा है। फटे बाँस जैसे गले से निकलती आवाज तक काँप रही है, "अभी तक जिन्दा है क्या?" सोना को दोनो हाथो से खोचरो ने जकड लिया है। वह काँप रहा है। सोना अगल-बगल ताक रहा था। उसका हाथ शायद नीचे दबा गया था।

साथ ही-साथ रिवाल्वर की ठंडी नली कपास की नस पर आ लगी। सोना ने हाथ ऊपर उठाये। वह ताक में है। चेचक के गड्ढेनुमा दागों से भरे चेहरे वाले सोचर के मुँह से गन्दी गालियों का फन बिखर रहा है। इसके बाद ही सोना को धमकाना शुरू किया। जाते-जाते सोना की आँखों ने मुड़कर न जाने क्या एक बार देख लेना चाहा। झाड़ियों के भीतर से सोना की दोनों आँखें गोरा को बड़ी-बड़ी लगीं। बड़ी-बड़ी दो आँखें। अचानक जाने कैसे सोना की दो आँखें और बड़ी हो गयीं।

"मस्टू!

"कोई चारा नहीं है।

'सा-ला!

सोना का बालों भरा सिर जब तक ओझल न हो गया गोरा एकटक उधर देखता रहा। शायद बालोंगाड़ी तक पहुँचने से पहले ही एक झटका मारकर सोना गली के रास्ते की तरफ़ मुड़ जाये। जबरदस्ती सोचने की कोशिश की, 'सोना को ले नहीं जा सकता किसी भी तरह नहीं।

और चौराहे के मोड़ पर आते ही राइफल का कुन्दा सोना के सिर पर आ गिरा। साथ ही तारकोल की सड़क पर होंठ सट गये। शरीर ढीला हो गया। सड़क पर एक क्षणिक लाल रेखा रिबन की तरह घूम गयी।

'साला हथियार कहाँ है? हथियार?

'पता नहीं।

'हथियार का नहीं पता?

ना।

"पाइप?

'नहीं पता।

बूट की चोट से सोना के होंठ कुचल गये।

"मैस्टर?

"ना।

अफ़सर का फूला हुआ बदन गुस्से से थरथर काँप रहा है। दस-बारह चोचरों के बूटों और बंदूक के कुंदों से सोना की दोनों आँखों में माला

अधकार फैला दिया। वह और सिर नही उठा पा रहा है। वडे-वडे वालो वाला सिर भारी हो गया है, शरीर मे कोई जान नही। होठ भी वेजान होते जा रहे हैं—न-न-न-न-ना। धीरे-धीरे खोचरो के चेहरे वहुत लम्बे-लम्बे हो आये, हाँडियों की तरह। उसके वाद अपने आप आँखें वद होने लगी थीं। और ठीक तभी सोना को गाल के नीचे ठडा-सा स्पर्श मिला। नली को गाल के नीचे की नरम गद्दीदार जगह टिकाकर उन्होंने फायर किया। आँखो की पुतलियों मे दर्द की एक सूक्ष्म रेखा जगाकर सोना ने आखिरी वार होठ हिलाया, 'न-न-ना।' फिर आँखें ही नही रही। सव-कुछ पत्थर हो गया है। खून के परनाले टेढे-मेढे होकर गरदन पर से वहने लगे, पशमीने की तरह मुलायम वालो के सिरे से। अफसर का झूला हुआ होठ किलविला उठा, "जल्दी, एकदम। वक्त वरवाद मत करो।"

खून के वाद वे लोग आतकित हो उठे। जल्दी-जल्दी सव-कुछ झटपट पूरा किया जाने लगा। सोना के वेजान शरीर को उठाकर वैन के पेट मे डाल दिया। सी० आर० पी० का गिरोह झट से वैन मे चढने लगा। दरवाजा खीचने की आवाज हुई। वैन ने धुएँ का गुवार उगल दिया। इजन की आवाज रात के सन्नाटे को तोड, धरती पर वर्र का डक मारते हुए सामने की वस्ती को निशाना वनाकर दौडने लगी।

मोड के लैम्पपोस्ट के नीचे अधकार गला दावे हुए है। वारूद की वू उस समय भी नाक के सिरे को जला रही है और वैन का धुआँ दायरे वना रहा है। धुएँ की गाढी मलाई फट गयी है, धुनी हुई रुई की तरह विखर रही है। अत मे धुआँ धागे की लच्छी की तरह विखर रहा है। तभी गोरा, मन्टू और वूडो खम्वे के नीचे आ खडे हुए। अँधेरे मे उनके शरीर नज़र नहीं आ रहे। मन्टू के कन्धे पर साइडवैग। खम्वे के नीचे धीरे से उसने वैग रखा। और तभी उसके पांव के पास खून चिपचिपा उठा। अँधेरे मे लाल रग नज़र नही आया। वे तीनो झुक गये हैं, खून के थक्के को घेरकर। फलस्वरूप वे उस गड्ढे को देख पाये। गोली का दाग पहचानने मे आजकल उन्हें ज़रा भी तकलीफ नही होती। तकलीफ़ होती है सीना लेकर, सीने का असहनीय दर्द देकर।

तीन जोड़ी पाँव मानों धरती पर पड़े हुए हैं। [illegible] के [illegible] के पास नीली जिल्द की छोटी नोटबुक पड़ी है। [illegible] [illegible] के सीने में बारह की [illegible] बन गया [illegible] गया फटे बाँस की तरह [illegible] ज़रूर आनन्द [illegible] में [illegible] जायेगा।"

बूढ़ा ने कम्बल के नीचे से धीरे से [illegible] उठा [illegible] के घर नहीं जाऊँगा कह रहा हूँ किसी भी तरह नहीं जाऊँगा।"

नोटबुक [illegible] जेब में डाल ली। [illegible] को [illegible] भरने लगे। घना अँधेरा उन्हें धीरे-धीरे निगल रहा है। [illegible] का [illegible] अँधेरा थोड़ी देर बाद ही भीगा होगा और [illegible] तरह [illegible] के सीने का [illegible] लेकर धीरे-धीरे [illegible]।

"बस [illegible] बन्द।"

बूढ़े का दाहिना हाथ मुट्ठी के साथ [illegible] के अन्दर [illegible]। [illegible] की तरह मुलमियों से [illegible] का [illegible] [illegible] हो उठा। [illegible] की [illegible] के [illegible] [illegible] दे [illegible]। [illegible] के मुँह की [illegible] [illegible] की [illegible] मुँह बाये हुए हैं। [illegible] के [illegible] हैं। [illegible] की तरह [illegible] [illegible] का [illegible]। [illegible] से [illegible] रहा था [illegible] और [illegible] की [illegible] है। [illegible] [illegible] लिया "[illegible] बन्द है [illegible] कर।"

बूढ़ा [illegible] हाथ [illegible] की तरह [illegible] के [illegible] का [illegible] हाथ [illegible] लिया [illegible]।

और [illegible] शब्दों की [illegible] के [illegible] से [illegible] की तरह [illegible] नहीं। [illegible] की [illegible] भी नहीं [illegible] गया है। [illegible] की [illegible] नहीं। [illegible] में [illegible] है। यहाँ [illegible] होगा [illegible]

जानते हैं। लोकनाथ गार्डन लेन के किराये के कबूतरखाने के ताले में एक पतली चाभी लगाकर गोरा हाथ घुमायेगा । उसके बाद रग, कागज़, 'देशव्रती' पतली-पतली किताबें—इन सबको ढकेलकर तीनो शरीर टूटी चौकी पर, सीनातोड आर्त्तनाद के बीच चूर होकर गिर पड़ेंगे। चाय के कुल्हड पर सिगरेट की राख गिरेगी । मन्टू शायद कागज़ पर कूँची से 'कामरेड सोना' लिखकर कई बार काट-पीट करेगा। उसके बाद झट से उठ खडा होगा। तब सुबह होगी। साइडबैग को झूलने के लिए एक काबिल कधा मिलेगा और बैग के भीतर एक प्रतिज्ञा कठोर हो जायेगी, बूडो या सुकु की उँगलियो के स्पर्श की उत्कठा मे।

'कल' के भविष्य ने ही मन्टू को रोके रखा है। बूडो ने हाथ खीच लिया है, इजन के पिस्टन की तरह। ठीक ऐसे समय, जब उनके कानो मे एक ओर पर्वत के गिरने की आवाज उभरी है और उन्हें एक ज़बरदस्त शपथ का झडा खडा करने की ज़रूरत है। बहुत ही ज़रूरी है। फिर भी उस शपथ के खोल मे जो उत्तेजना घुस गयी है, उसमे गोरा का कोई हाथ नही है। कल उनके सामने पुराने हमलावरो को लाना चाहिए। यूँ गोरा को पता है कि यह बडी बात नही। गोरा चाहता है, कल तमाम बेलियाहाट्टा शोक मे सीना पीटे। समझे उनके वीर योद्धा को, युद्ध के अर्थ को। पूछें, घेर लें और उनकी पूछताछ की बर्छियो से सारे शरीर बिंध जायें।

गोबरपट्टी के पास आकर गोरा ने जेब से चाभी निकाली। "तुम लोग चलो, मैं ज़रा बाद मे आऊँगा।" मन्टू और बूडो की आँखो मे विचित्र उद्वेग, "क्यो ?"

"सोना के घर जाऊँगा।"

वे दोनो किसी कुशल मूर्तिकार की छेनी से घडी मूर्तियो की तरह क्षण-भर के लिए स्तब्ध खडे रह गये।

अज्ञातवास

मरे नाले की बदबू और हड्डीकल की चिमनी का धुआँ हड्डियों का चूरा, धून बेलियाघाटा के अँधेरे को गाढ़ा कर रहे थे। एक प्राणी की ताजा मृत्यु के शोक में डूबी बेलियाघाटा की रात। सत्तर का बेलियाघाटा बारूद की बू सीने में लिए आँख की पुतली में नाखून गड़ाये पड़ा है।

ब्रिज पार करने के बाद फुसफुसाकर दो बार बात हुई थी। उसके बाद वे झट से गायब हो गये। शीतलातल्ला के सामने पचरास्ता वाले मोड़ की बगल से गोरा ने फिर बस का रास्ता पकड़ा है। अब अकेला है। बिलकुल अकेला। और अकेले रहने से ही जो राक्षसी सूनापन गोरा को निगलने लगता है उसका बड़ा पेट अब दर्द से भरा हुआ है। जलन और दर्द सीने की हड्डियों के पिंजर को ठमककर कैसे एक ताकत को जन्म दे रहा है! सीने के भीतर अजीब-सी एक ताकत पैदा हो रही है और दोनों हाथों से अँधेरा चीरकर गोरा भागा जा रहा है। चल रहा है या दौड़ रहा है सामने का कोई पैमाना नहीं है। रह रहकर एक आवाज जाग रही है—हुम्-हुम्-हुम्। और साँस भाप के भभके की तरह थम रही है जैसे वह कच्ची भाप निगल रहा हो लगातार। होंठ नहीं हिलते। जीभ नहीं हिलती। एक जिंदादिल लड़के का नाम मन में नाचता है। गोरा बड़बड़ा रहा था सोमा सो ना !

सोमा नहीं है। नहीं है। यह बात गोरा से बेहतर और किसे पता है? कई घंटे पहले तक जिस लड़के ने इंसान की भलाई के लिए अपना शरीर

खैरात किया, जो लाइन से पत्थर उठाकर हाथ मे लिये आसमान फाड़कर हँसा था, उसे पीट-पीटकर, कुचल-कुचलकर खत्म किया गया है। गदे पोखर की उपलो से पाथी दीवार और तारकोल के टीन से घिरी बस्ती की वगल से सटकर चलते हुए गोरा वात हजम नही कर पा रहा है। इसान की आँतो मे हाजमे की इतनी ताकत नही है।

राव की तरह लसदार, वेवकूफ, वेहोश नीद इसानी लोथडो पर थपेडे लगाकर उन्हे वेसुध किये हुए है। और अँधेरे की केंचुल तोडकर, गूँगे रास्ते के सीने पर बुडबुडाता हुआ गोरा चला जा रहा है, शोक-सवाद लेकर। बूडो पहले ही कह वैठा था, "काट डालने पर भी नही जा सकूँगा। अपना यह ज़िन्दा चेहरा अव ज़िन्दगी-भर सोना की माँ को नही दिखाऊँगा।"

गोरा ने भी ज़वरदस्ती नही की। वाकई सोना की माँ को वह कैसे समझायेगा ? और गोरा ? शोक-सतप्त, गरीवी से मारे ज़िन्दा इसान से वही भला क्या कहेगा ? हाँ, अगर सारा देश फट पडता, लाखो लोग लडते हुए मर जाते, धक्का सभालकर फिर हथियार हाथ मे लेकर दौड पडते तो कोई वात नही होती। फिर तो वदले की धधकती हुई आग दौडती होती—आग।

वाजू की दीवार जैसे आँत निकाल लेगी। ऐसी ही दीवारो का सिलसिला। और दोनो आँख जल-जलकर खाक हो गयी। दीवार का सीना फाडकर अक्षर उभर आये। आँखे धीरे-धीरे झुलसकर राख होती हैं। लाल और काले रग के मोटे अक्षर दिन-व-दिन आग वनते जा रहे हैं। 'आँसुओ को ताकत मे. व-द लो।' और आगे वढने की ज़रूरत नही। सव-कुछ याद आ गया। अच्छा, यह सव कुछ क्या उन्होने जनता के लिए लिखा था ? या कि जनता के सीने के टूटे पजर को जोडना होगा ? पता था, नन्टे के वाद और एक । उसके वाद . । गोरा के सीने मे वात गडकर वैठ नही सकी। ऐसी ही एक वात गोरा ने रामायण मे पढी है। वही वात, जव सुग्रीव के साथ राम का साक्षात्कार हुआ था—सीता रावण द्वारा अपहृता—वैदेही की फेंकी हुई निशानियाँ इधर-उधर विखरी हुई हैं—श्री-राम वैदेही के चिह्न देख शोकाकुल। श्रीराम को उत्साहित करने के लिए सुग्रीव ने कहा था 'शोक को शक्ति मे ।' सिर्फ उद्दीप्त करने के लिए।

बरना वाकई क्या शोक शक्ति में रूपांतरित होकर काफूर हो जाता है? शायद रामायण या बीबार की बात में यह नहीं समझाया गया। फिर फिर भी गोरा को शोक की बात ही याद आयी। मिले हुए दाँत एक दमघोंटू शोक। यह शोक बढ़कर अब वह कहाँ जायगा? मन्टे दपदपाकर चला गया उसके बाद सोना। गोरा के सोने म मौत की स्थिर चमक अब मानो जिंदगी भर लिपटी रहेगी। मन्टे और सोना ने जबरदस्ती गोरा के शरीर पर अधिकार कर लिया है और व उसे सामने की ओर ठेल रहे हैं चलो गोरादा आग चलो!

अब रात के अंतिम प्रहर का सीना चीरकर गोरा सोना की माँ के पास जा रहा है। जाकर क्या कहेगा और कहने के बाद सोना की माँ पर क्या घटेगी, यह सब-कुछ वह सोच नहीं पा रहा है। उसे सिर्फ पता है इस बसे शरीर को किसी तरह खींचकर सोना की माँ के सामने ले जाना पड़ेगा। उसके बाद सब खत्म। उसके बाद जैसे गोरा खुद ही खत्म हो जायेगा। सोना की माँ गुस्से में गोरा के सिर के बाल नोच डालना चाहे तो भी उसे कोई एतराज नहीं होगा। असल म गोरा विशेषतात से कुछ एसा ही चाह रहा था। एक प्रचंड शारीरिक प्रताड़न—ठीक वैसा ही जैसा पिछले साल मेहतर पट्टी के लड़के को महुँबत के कान्‍मे पर हुआ था। जहर उतर आया था सारे बदन पर। होठो की जोड़ा सकड़ी होकर नीली पड़ गयी थी। आँखें झपझपा रही थी। भने वालो वामा ओझा बड़बड़ाकर मंतर पढ़ते हुए बमबिछुटी से लड़के को कोड़े लगा रहा था जगाये रखने के लिए, झपकी भगाने के लिए। जहर की झपकी। लड़के की देह फूल उठी थी। फिर भी दोनों आँखों मे झपकियाँ आ रही थी। आश्चर्यजनक झपकी।

सोना का घर। जब लगी टूटी फटी पीली टीन का छाजन धम्बा से भरी दीवार आँगन में काई। सब मिलाकर एक बीभत्स तसवीर गोरा की आँखों के आगे तैर रही थी। और वह सोना के घर की दीवार में उग पीपल के नन्हे पौधे की ओर सीधे खिचा चला जा रहा था। मन्टू बूढ़ो—बीछ—सब अलग-अलग दिशा में छिटक गये हैं। सारे बैसियाहट्ट

समाचार फैलता जा रहा है। भोर होने से पहले ही सब तरफ़ समाचार फैल जायेगा

"पुलिस के साथ संघर्ष में सोना नामक युवक मारा गया—युवक के पास रेडबुक—और रिवाल्वर। और आपत्तिजनक पर्चे.. ।" असल में यह सब पहले से ही कम्पोज़ किया हुआ रहता है। सिर्फ़ युवक का नाम बदलता है। और सारे बंगाल की माँएँ अपने अभागे, बेकार, ज़िंदादिल लड़कों का नाम खोजती हैं छापे के अक्षरों में, अखबार में, अखबार की खबरों में। गोरा को पता है कि भोर के अखबार की इस निर्भीक, निरपेक्ष, निरीह पंक्ति पर आँखें फिराकर बेलियाघाटा के चायखानों में सब गुस्से में गरजेंगे—सालों ने कत्ल किया है, क़त्ल! और ह्यूज़ रोड से हवा की रफ़्तार से खबर दौड़ती हुई रबर फ़ैक्टरी के नाटे अली के चपटे मुँह पर लथपथ होकर बेलाग गुस्से को जन्म देगी—सूअर के बच्चे हरामी लोगों ने सोना को मार डाला । तपसे की बाढ़ में लोकनाथ गार्डन लेन ने लौंदे जैसी जिस बुढ़िया को कंधे पर लादकर सोना ने आम रास्ते पर तिरपाल के नीचे ला बिठाया था और जाड़ा भगाने के लिए आधा कुल्हड़ चाय उसके मुँह के आगे लगा दी थी, वह अवश्य ही बहुत कातर होगी। पेट में न पाला तो क्या बेटा नहीं होता? बुढ़िया को पुत्र-शोक जगेगा। उफन पड़ेगा। साठ साल की फ़ज़ीहत के बाद एक संवाद मुँह फाड़कर छिपकली की पूँछ जैसे कंठ के काग को उखाड़ लायेगा—कौन सोना वही जिसने गले तक पानी में खड़े होकर सबका उद्धार किया था—बड़ी-बड़ी आँखों वाला वही काला छरहरा लड़का। अहा हा-हा! बुढ़िया दंतहीन मसूड़ों और पिचके हुए गालों में से सारी ज़िंदगी के दुखों को समेट लम्बी साँस छोड़ेगी एक बार। और फिर उसका सिर सीने के ऊपर झुक आयेगा।

अचानक गोरा के भीतर अभी-अभी पैदा ताक़त ने ऐंठन-सी पैदा की, जैसे कान के पास बड़बड़ाकर कोई कह रहा है, 'डटकर मुक़ाबला करना पड़ेगा। डटकर। तू कमूनिस है न। डरपोक कहीं का!'

यह बात कौन कहता था—तू कमूनिस है न? ओहो, बूड़ो कहता था। अकसर कहता था। और सोना ज़रा-सी चूक होने पर कहता था—डरपोक। और इन तमाम बातों के टुकड़े मिलकर एक बड़ी बात बन जाते हैं। एक-

एक बात में खतरनाक ताकत होती है। आदमी भूल नहीं सकता। कभी नहीं। जैसे कि गोरा नहीं भूल पा रहा है। बातों के भी हाथ-पाँव निकलते हैं। अच्छा-खासा जिंदा आदमी बन जाता है। एक इंसान। हाड़-मांस का इंसान।

भोर होने से पहले ही भेंटना पड़ेगा। बैठकर सारी बातचीत खत्म करनी पड़ेगी। उससे के करिया गुरु के घर पर मीटिंग। अपने-अपने कतरे की दीवार लाँघकर सब हाजिर होंगे। गोरा पर फिर एक व्यवहार लिखने का उत्तरदायित्व आ पड़ना जैसा मन्टे के मामले में हुआ था। तासतला का मन्टे। क्या था हेडिंग अहा याद आ गया शहीदों का आत्मबलिदान व्यर्थ नहीं जाता। मन्टे और सोना दोनों एक बसे थे उनमें आश्चर्यजनक समानता थी। सोना को हजारों खतरों में भी गोरा ने हँसमुख होते नहीं देखा। खतरा उठाने में उस्ताद। गोबर-पट्टी के निराव को तोड़कर भागते समय गोरा ने सोना का शांत-स्थिर भाव देखा है। दीवार लाँघकर जब वे इधर-उधर तेजी से भागने में व्यस्त थे सोना सीधे-सादे आदमी की तरह धीरे-धीरे चलते हुए जोचर की आँखों के सामने से निकला था। जाने क्या कहा था गोरा ने। ठीक याद नहीं आया। असल में उसे भ्रम काया था बहुत बहादुरी दिखायी? जवाब में लड़का हँसा था खफ्त हमक दिखाकर—धत्त! अभी भी मानो हँस रहा है—ध त्त! नहीं तो हँसा था अभी कुछ घंटे पहले। सीने में एक दर्द उभरा। बीच-बीच में सीने में दर्द उभरता है। साथ-ही-साथ मीनू की बात भी याद हो आयी। पतली पीठ पर एक चोटी झुलाती हुई जैसे गली के सुनसान में से दौड़ी आयेगी, गोरादा सोनादा कहाँ है? और आखिर 'कहाँ' शब्द पर आँखों की पुतलियों से छलकेगा, गोरा दा!

उससे की बाँस-गुमटी के पास ए० बी० सियालदह से आती हुई चलती गाड़ी से उतरेगा। कसलियों से ही सारे इलाके को भाँप लेगा। झट से। उसकी आँखों पर उस समय हाई पावर का चश्मा नहीं होगा। रास्ते में उसे नहीं पहनता। गुरु के घर चरमराती चारपाई पर बैठते समय चश्मा लगाएगा। ए० बी० की बात याद आते ही कहीं से सोना की बड़ी-बड़ी आँखें सामने दौड़ आयीं। कल ए० बी० अमर समय से आता

ए० वी० पर गुस्सा आने लगा। वैसे इस गुस्से की व्यर्थता वह नही समझता हो, ऐसी वात नही है। सव-कुछ समझ कर भी एक दर्द सालता है, अपने हाथो की उँगलियाँ काटने को जी चाहता है।

मालीपाडे के नीम के पेड की सूखी टहनियों को छूते समय गोरा ने भैंस के पेट की तरह फैले मेघ को देखा। फिर आँधी आयी, देखते-ही-देखते। दुनिया-भर की धूल उडाकर, पाँचू कुम्हार की जग-लगी टीन को धडधडाते हुए। आसमान काला करके। तूफान उठा। तूफान उठा गोरा के दुवले-पतले सीने मे, वदले के भाव से हड्डियाँ कँपाते हुए। 'वदला' शब्द जैसे गोरा के दिमाग़ के भीतर खौलने लगा। वेलियाहाट्टा के गाढे अँधेरे को फुलायी हुई साइरन की-सी एक आवाज सारे इलाके मे गर्‌र-गर्‌र कर रही है। आँखो की पुतलियों पर धूल के थपेडो के तीखे हमले को हाथो से काटते हुए गोरा को ए० वी० की वात याद आने लगी। और वह तेजी से चलने लगा। गरम भाप के भभके-से चल रहे हैं अव। ए० वी० के हाई पावर के चश्मे के भीतर से निकल कर आती हुई दोनो आँखें जाग रही हैं। गोरा को पता है कि कल सुवह ए० वी० क्या कहेगा ? उसकी नाक के कोने पर पसीना उभर आयेगा। वहुत देर तक वोल नही सकेगा। उसके बाद भिचे दाँतो से वदले की ख्वाहिश उसकी दोनो आँखो को और जरा वाहर धकेलेगी, वायें गाल के धूप से जले हिस्से मे एक विचित्र-सी थिरकन होगी, 'कामरेड, हत्या का वदला चाहिए एक्शन।' और भी वहुत-सी व्याख्या करेगा। रह-रहकर उँगलियो को चटकाने के अदाज मे हिलायेगा। एक्शन की वात अचानक याद आते ही गोरा की आँखो के सामने रथ का पहिया उठाये, पसीने से तर, कर्ण का असीम साहसी चेहरा तैरने लगा। और रक्षा-कवच। जैसे यह कर्ण का रक्षा-कवच है। एक्शन ! सोना होता तो क्या कहता ? वह अवश्य ही पगला जाता। उसके मुँह से वोल नही निकलता। फिर ठडा होता धीरे-धीरे सारे इलाके के इसान इकट्ठा होने पर । और ए० वी० हलके-हलके मुस्कराता, 'तुम लोगो को चुनावी पार्टी मे जाना चाहिए था।'

गोरा और आगे नही सोच पाता। गोरा को अव कुछ भी महसूस नही हो रहा है। नीम के पेड के माथे पर अटके भारी मेघ की ओर तेज

भोरा और कुछ भी नहीं सोच पा रहा है।

बाकी रात छँटती हुई साफ़ हो रही है। साफ़ हो रही है धीरे धीरे। पंजर ठेलकर वह बेग फिर से काम रहा है। उफन-उफन कर। वह बेग भोरा को खींचते हुए चलाने लगा। पुलसीकल का भोंपू बजने से पहले ही यह लोक-समाचार पहुँचा देना पड़ेगा। उसके बाद जैसे उसके बाद बाकई उसे छुट्टी मिलेगी। भोरा के होठों की दरार के बीच अनखिली हँसी की एक छोटी-सी लहर उठी। भोरा पागल की तरह बड़बड़ाया "ससास।'

नारायनदा के आस-पास रहने पर भोरा को भरोसा रहता है। समझता है, जानता है वह आदमी। उस विश्वास आदमी को देखते ही जाने कैसी हिम्मत बंधती है। आस्था उपजती है। उस एक आदमी न ही तो यहाँ रक्तबीज की झाड़ियों को जन्म दिया है। भोरा कहो या मन्टू या सोना—जिसका भी नाम क्यों न लो सभी उसे आदमी के हाथों तालीम पाये हुए हैं। प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र में होने की वजह से भोरा और बूढ़ो साथ-साथ रहे हैं। साये की तरह। आदमी का साया। पेन का साया। और कितना कुछ मन में आता है। तीन बच्चों को लेकर मिनती भाभी पेट पर रस्सी बाँध कर एक और ही क़िस्म की लड़ाई लड़ रही है। बिहार के मोतीहारी जाने पर हुई जंग की खबर सुनने के लिए मिनती भाभी के कान में कान लुकाता है उत्कंठा में उम्मीद में। हाँ देवरजी कुछी में सुना है इस बार बाढ़ आयी है।' मिनती भाभी की पलकों पर स्निग्ध छाया। जरा गंभीर हो कर भोरा ने मुँह खोला, 'हाँ बाढ़ आ रही है भयंकर बाढ़ ।" एक बार नारायनदा के रहते भोरा को बहुत ताज्जुब हुआ था। उस दिन माँ से झगड़ा करके भोरा उधर चला आया था।

पिताजी उसी दिन रिटायर हुए थे। ए॰ जी॰ बेंगल के बही-खाते में जिन्दगी के चालीस साल मक्खी जैसे हरफ़ों में आँक कर वे हाथ मल रहे थे। सबसे छोटे लड़के की गरदन की बायीं ओर की नसें फूल गयी हैं। ग्लैंड टी॰ बी॰। चार जनों के मुँह में दाना डालने का रास्ता बिलकुल बंद हो गया। उस समय विश्वविद्यालय का ठप्पा भोरा के चूतड़ों पर ताजा-ताजा लगा था ठीक वैसे ही जैसे सूअरपट्टी के जिबह किये सूअर

की जांघ पर गुणा का निशान लगाया जाता है। झगडा अचानक किस बात पर शुरू हुआ था, गोरा को याद नही। खटपट चल ही रही थी, "और कोई तो पार्टीबाज़ी नही करता, पार्टीबाज़ी करने पर नौकरी नही मिलती।" ऐसी बातो की धुन ने उस दिन अचानक सुर बदला, "तब पार्टी ही करो, मेरी गरदन पर बैठकर खाते हुए शर्म नही आती ? यह कौन-सा आदर्श है ? शोषण की बातें बढ कर बकते हो, क्या यह शोषण नही है ?" उसने बात को आगे नही बढाया था। चुपचाप चला आया था। उसके दिमाग़ को केवल एक बात ताकत दे रही थी सिर्फ, नारानदा की बात, "एक पेट भला कोई समस्या है ? पगला कही का !"

आगे से घर पर खाना नही खायेगा। रात को नारानदा के घर पर ही खा लिया करेगा। घर से निकलते समय मिनती भाभी ने किश्तो मे कहा था, "मझली की दवादारू किये बग़ैर चल नही पा रहा है। लगातार छह दिन से बुखार चल रहा है। घटने का नाम नहीं। बदन से आग छूट रही है, बकझक रही है, दवा न मिलने पर ।"

दिन-भर गोरा नारानदा के साथ रहा। लौटते समय मोतीझील बस्ती के पीछे युनाइटिड मिल के हसन भैया के साथ मुलाकात। व्यास ब्रिज की सीढियो पर ही बैठ गये। हसन भैया ने खैनी मल और फूंककर नारानदा की हथेली पर रखी। होठो को खोल खैनी मसूडे के नीचे ठेलकर नारानदा ने थूका। "असल मे मालिक लो [illegible]" और हसन भैया के [illegible]

और वही आदमी जब हुसन के साथ होता है तो बिलकुल अलग। गोरा को बीच-बीच में जलन होती थी। कैसी विचित्र जलन ?

'तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते ?"

'किसने कहा ?"

'नहीं। यूं ही।"

फिर सुनो मेरी माँ कहती थी—मरती है नारी उड़ती है राख उस नारी की बनती है साख। हम लोगों की वही दशा है।" हुसन भैया के ऊपर वाली दंत-पंक्ति में सोने का बिन्दी की तरह न जाने क्या चमक उठा। सीने के पिंजरे में हँसी की ज्वार पालकर छह साल तक लगातार प्रेम करने के बाद बदली-इंके दिन जिस लड़की को घर लाया था और वराम के कमरे वाली भाभी के कहने पर उसके माथे पर सिन्दूर लगा दिया था नारायणा को उसी के मुख पेट की बात याद नहीं रहती बीमार लड़की की बात याद नहीं रहती। और यह सब याद न रख पाने का दर्द कितना गहरा है, इसे गोरा अच्छी तरह जानता है। सख्त आदमी। वह और एक तरह की चंप। अघोषित युद्ध। नारायणा के मुँह से ही सुना है 'साउथ बैंकेबाटा उस समय पार्टी की सबसे कमजोर जगह थी। पार्टी का उस समय बँटवारा नहीं हुआ था सिंगल पार्टी थी। ज्योति बाबू तो हाल में बैरिस्टरी पास करके लौटे हैं। भोलादा उस जमाने का आदमी है। कहा जाये तो हमे अपने हाथों बनाया था उन्होंने। मर-द्वार नहीं है कहाँ से बहते हुए आये थे किसी को पता नहीं। मुँह से खून थूक-थूक कर रबड़ फ़ैक्टरी में घूंटे गाड़े थे भूखों रह कर बदन पर जुल्म सहकर सीना छलनी हो गया। अंत में तपेदिक हो गयी। फ़ैक्टरी हिलाकर लाल कपड़ा बिछाकर गाना गाकर भी जिलाया नहीं जा सका। यह दधीचियों का देश है समझे गोरा! इस तरह के कितने हैं ? कितने ?"

आज की लड़ाई अलग है। खून-खराबा। मस्टे और सोना। आँखों के सामने बिछा दिया गया उन्हें। हुबली पर जान लेकर आग में कू है। कौन बड़ा है गोरा समझ नहीं पाता। लैम्पपोस्ट के नीचे बरे की फ़ैल ताजा गर्म खून को देखने के बाद स गोरा संभल नहीं पा रहा है।

उसी वक्त ही पेट[1] चार्ज करके कुन्भेन बनाना चाह रहा था। शायद युद्ध नहीं होता, और होने पर एक कच्चे घाव का दर्द ही उगला गया होता। लेकिन उगलकर सीना तो हलका होता।

यहीं से ही रेल-लाइन की बगल से सटा हुआ जहरीला झाड़ उसकी आंख की पुतली में उभर आया। वह क्यों मन्टू के पंजे खींचकर छिप रहा था? जाने की बात तो गोरा की ही है। उसी ने तो उन्हें रास्ता बताया था। गोरा से सोना कम-से-कम पांच साल छोटा था। और गोरा दा पर कितनी आस्था थी उसकी! गोरा ने भी तो उसे साथ पकड़-पकड़कर कम नहीं चलाया। सारे समाज की खाल उधेड़कर सब-कुछ पहचनवाया था, "यह देख, देख कैसे मुंह से खून थूकते हुए आदमी जीता है क्यों क्यों?" और सोना नाम के उस बड़े-से लड़के की आंख में और भी जानने की राक्षसी भूख जगती है। तपना है वह। लड़के ने पागलों की तरह हाथ लगाया। पोस्टर लिखना सीखा। शुरू-शुरू में हाथ की लकीरें अच्छी नहीं खिंचती थीं। उलझ-उलझ जाती थीं। धीरे-धीरे एक घसीट में लिखना सीखा। मन्टू ने ही धैर्य के साथ उसे सिखाया था। हाथ पकड़-पकड़कर। मामूली बात के लिए सोना ने पोस्टर बहुत ही कम लिखे हैं। अक्षर-दर-अक्षर सजाकर वह इन्सान के मन में झटका देना चाहता था। बातों को जड़ देना चाहता था। पोस्टर नहीं, जैसे कविता। पोस्टर लिखने को बैठते ही वह कविता कर डालता था। ऐसी बहुत-सी बातें लिख डालता था, जो कविता बन जाती थी। पहचानने का कोई रास्ता नहीं रहता था। और पोस्टर से जिस लड़के ने तुरन्त अभियान शुरू किया था, कपाल की रगों में एक छेद बनवाकर उसने विश्राम किया। अनन्त विश्राम!

पुतलीकल बायें हाथ छोड़, कच्चे नाले को लांघकर तेइस नम्बर की बस्ती। यहां बस यही एक उनसन है। बस्ती की कोई इज्जत-आबरू नहीं है। टीन के छाजनों और चार दीवारों से बने कबूतरखानों की घनी बस्ती। फलस्वरूप गिनती से बाहर चली गयी बस्ती। तब नम्बर लगाये

1 देसी बम।

गम है। पंछी की चोंच की तरह मुँह खुला पाते ही गम हवा सी करके बोल उठी। मालीपाड़ा की बुरी किस्मत पर चक्कर काट रहे मेघ इस ओर अभी भी बड़े होकर टूटे नहीं हैं यह सच है। मगर पुतलीकस के इर्दगिर्द एक अजीब दमघोटू वातावरण घिर रहा है। पाँव-दर-पाँव धीरे धीरे। और भैंस की तरह मेघ को अब सींग उग रहा है। अब वैसा नहीं। बिलकुल एक भैंस। सींग टेढ़ा करके आसमान के सीने को निशाना बनाकर दौड़ रहा है। फाड़ डालने के लिए आसमान का सीना। इतने दिनों में आसमान का भी आम का समय आ गया है। और कितना कितना समय! जला हुआ सीना धुएँ की भाप के जमते-जमते आसमान अब खत्म होने के करीब है।

पुतलीकस की सफ़ेदी हवा में उड़ाते हुए हवा झपट्टा मार रही है। पुतलीकस की आसमान छूती चिमनी साँप की तरह बल खाता धुआँ उगल रही है और सारा इलाक़ा भेरकर मोतियाबिंद गिर रहा है।

सोना के घर के दरवाजे को धक्का देते हुए गोरा पसीने से तर-ब-तर हो रहा था। गोर गयी रात के ठंडेपन से भी गरमी छँट नहीं रही है। भीतर की आग। आग की गरमी। रात के सन्नाटे को चूर चूर करती हुई दरवाजे पर धक्के की आवाज आ उठी। गोरा और देर नहीं रुक पा रहा है। बदन में कोई दम नहीं है। सुन्न। और दरवाजा खोलने में उतनी ही देर हो रही है। भीतर से कोई आवाज नहीं। लैंपपोस्ट के नजदीक से मौसी जैसे तेइस नम्बर की बस्ती के इसी मकान का सीना फाड़कर घुसी गयी है। दरवाजे का धक्का नशे की तरह चढ़ रहा है। अंत में खाँसी के साथ कफ़ की घरघराहट भरे गले की आवाज आयी।

"आ रही हूँ।"

पट से एक आवाज हुई। दरवाजा पूरी तरह घूम गया। सोना की माँ का पतीली की तरह चपटा मुँह पलक की दरार से अनिद्रा की जलन भरी आँखों सहित दीख पड़ीं। पानी की तरह निराकार चेहरा। उत्कंठा का नाममात्र नहीं है। गोर वाली रात में गोरा को देख जरा भी भय नहीं हुए। ताज्जुब की क्या बात है? इस सबकी अभ्यस्त हो गयी

आधी रात को खिडकी और दरवाजा खटखटाता है, "माँ ! ओ माँ !" और चुपचाप उठकर दरवाजा खोल देना पडता है। शायद आँचल धरती पर ही लोटता रहता है। उठा लेने तक की फुरसत नही होती। रात-विरात नही है उनकी। इन लडको के लिए रात और दिन मे कोई फर्क नही है। जब-तब धमाके की तरह हाजिर होते है। जैसे धरती चीरकर प्रकट होते हैं। जरा कुछ मुँह मे डालते हैं, झटपट नहा लेते हैं। किताब तलाशते हैं, "मेरी उस पतली-सी किताब क्या हुआ ?" कभी-कभी आते ही कातर हो जाते हैं, "मौसी, जो कुछ भी हो थोडा-सा दीजिये । उफ ! दिन-भर पेट मे दाना नही पडा।"

और कभी-कभी मुंह मे कुछ भी नही डालता। एक पल भी खडा नही होता। कोई बात कहकर धूमकेतु की तरह ग़ायब हो जाता है। गाय ब ! और दरवाज़े पर बूटो की चोटें पडती रहती हैं। संगीनो की नोकें मकान को चारो ओर से घेर लेती हैं। हँडिया-पतीला तोडते हुए गाली-गलौज चलता रहता है। और सोना की सत्तर साल की विधवा बुआ गले की बत्तीस शिराएँ जोक की तरह फुलाती है "खजहा कुत्तो का गिरोह आया है। यम को क्या आँख नहीं है .इन लोगो को मौत क्यो नही आती ?"

आस-पास, अगल-बग़ल, दसो दिशा में होशियारी फैलती। होशियार। बाज़ ने झपट्टा मारा है। होशियार। नज़र तेज़ । लडके खिसक जाते। बहाना बनाकर चुपचाप पडे रहते। खतरा जिस तरह घात लगाकर आता है, जाते समय इतना छुपा नही रहता । जाते समय उडिया ठाकुर के चूतडो पर नाल-लगे बूट वाली लात पडती, "सूअर का बच्चा ! खबर नही दे सकता—कब सब आते-जाते हैं—साला ! एक दिन दूकान तोड दूंगा ।" उसके बाद डर से और नही ठहरते थे। जान का डर किसे नहीं है ? पुलिस है तो क्या जान नही है ? खोचर है तो क्या उमे डर नही है ? जल्दी-जल्दी हमला खत्म करके धुआँ उगलते हुए लौट जाते थे। जाते समय धापा के चावल बेचने वालो को ज़बरदस्ती उठा लेते थे। और जिस ओर दीवार पर लिखावट कम है, उसी पामर बाजार के चौडे रास्ते से लौटते थे। वरना आसमान से पुष्पवृष्टि की तरह अचानक दस-दस

सेर के बाद गिर सकते हैं। फिर तो वापस मातृगर्भ में लौट जाना पड़ता।

खतरा टल जाने पर धीरे-धीरे अच्छी तरह इधर-उधर देखकर निकल जाते थे। इस तरह की बखेड़े का सामना करने और उन्हें बेवकूफ बनाकर निकल जाने को लेकर हफ्ता भर मजेदार किस्सा चलता था। उस समय कैसा रोमांचक था सब-कुछ ! हाथों के रोम खड़े हो जाते थे। एक सनसनाहट दौड़ने लगती थी । बेरोक दौड़। पाँव कटने से तेजी से खून निकल रहा है। एक बार खदेड़े जाने पर मग्दू का पाँव कटकर सफ़ेद मांस निकल आया था। जान हाथ में लेकर दौड़ रहे थे सब। पीछे साँ साँ गोलियाँ छूट रही हैं। ग्वालपाड़े में बूढ़ो के घर में सब चट से घुस गये। बूढ़ो की जोरू ने बैगनी साड़ी का पल्ला फाड़कर मजबूती से बाँध दिया। बूढ़ो की जोरू की साड़ी बहुत प्यारी और साबुत थी । थोड़ी देर बाद खून गिरना बन्द हुआ। बूढ़ो के घर ऊबड़-खाबड़ फ़र्श पर बैठकर जमके गप्पेबाजी शुरू हुई। और सपना / स्वप्न । होंठों से धुएँ के छल्ले बनाते हुए मग्दू दोहरा रहा था क्रान्ति सफल होने के बाद मैदान में एक विशाल समारोह होगा। सारा मुल्क उजाड़कर लोग आयेंगे । इंसानों का जमघट । जमघट। और खून की बूँदों-सा सुर्ख झंडा गर्व से खुशी से पतपत करके उड़ता। चक्र वह दिन ! और सोना गा उठता था। जब तब यह गाना उसके होंठों पर मधुमक्खी की तरह मँडराने लगता था 'मुक्त होगी प्रिय मातृभूमि।"

धीरे धीरे उस रस से सिंचने भूखे इंसानों की हड्डियां में से जलन निचोड़ने के ख़्याल से वह अपने को रोक नहीं पा रहा है। अब तो ये एक एक मुहल्ले के गले में कॉटों के तार गले में लपेट-लपेटकर फंदा डाल देते हैं। लैंपपोस्ट के नीचे जवान खून की गर्म बाढ़। अभी शोक है। गुस्सा और मातम।

सोना की मृत्यु का समाचार लिये मोरा सुन्न-सा खड़ा है। दरवाजे के एक पल्ले की दरार में से सोना की माँ का रक्तहीन कागज-सा चेहरा झाँक रहा है। मोरा की जुबान से कोई बात नहीं निकलती। और जैसे एक तूफ़ानी रात का अंत होना ही नहीं चाहता । सोना की बुआ की तरह

गठिया हो गया है। रस भर रहा है। हिल-डुल नहीं सकता। फिर भी इसान का हृत्पिंड धुकधुकाता है। इसान ज़िन्दा रहता है। ज़िन्दा रहने की असह्य टक-टक ध्वनि अभी भी गोरा के कान मे वज रही है। सोना की माँ गोरा की ओर देख विचित्र ढग से हँसी। हँसी के साथ-साथ रत्ती-भर विस्मय, "क्या वात है रे ? इस समय आया है ? वह हरामज़ादा कहाँ है ?"

सोना की माँ का चेहरा अव साफ दीख रहा है। सारे चेहरे पर ज़रा मास नही है। गाल धँसने से गड्ढे उभर आये हैं। पुतलीकल की तारकोल की छोटे-मोटे अँधेरे गड्ढो से पटी सडक के गड्ढो की तरह। जवकि एक ज़माने मे यह चेहरा भरा-पूरा था। और अव आँख के नीचे पिसे चदन की तरह के दाग। उम्र के दाग़। अभाव के चिह्न। सोना की माँ गोरा के गूँगे चेहरे की ओर देखते हुए वेचैन हो उठी थी। मन के इनारे-किनारे तरह-तरह के शक फन निकाल लेते हैं। फुँफकार उठते हैं। दरवाज़े के पल्ले को झट से पूरी तरह खोलते हुए सोना की माँ ने कहा, "कल एक वार आया था, कहा ज़रा मुँह मे कुछ डाल ले—इतने दिनो के वाद आया है। ज़रा कुछ मुँह मे न डालने पर मन वश मे नहीं रहता। मेरी वात नुनता रहा । इतनी वडी थाली लगा दी थी, लडके के लिए। कहा और सारी आशाएँ तो मेरी पूरी कर दी हैं तूने, अव इन्हे निगल कर मेरा उद्धार कर (रुककर साँस ली)। घर की हालत तो तुझे सव पता है। क्या छिपाऊँ, घर मे दाना तक नहीं था। शिवू की दूकान से उधार मे थोडा चावल और आलू लायी। सोचा, ज़रा उवाल दूँ। इधर-उधर फिरता रहता है। खाता है या नही खाता, कौन देखता है ? और दिनो-दिन चेहरा कैसा वनता जा रहा है। वालो मे एक वूँद तेल तक नही पडती। खैर मुँह मे भात का कौर तो डाल ले। तभी कही से एक लड़का आकर कान मे जाने क्या फुसफुसाया कि वस। भात की थाली जैसी की तैसी पडी रह गयी। दीवार लाँघकर पलक झपते ही हवा हो गया। उसी समय से ही सीने पर चावल-सा कुट रहा है। रात को कौर तक गले से नीचे नहीं उतरा। ज़रा उसे समझाना-वुझाना। मेरी वात तो सुनता

ही नहीं। ऐसे कितने दिन चलेगा। अगर अंधेरा ही रहे तो चाक सकेगा।

किसी ने गोरा की नींद जैसे रस्सी से खींचकर तोड़ दी है। सीने में से बातों का सुर छूटने के लिए छटपटा रहा है। सीने के अन्दर बातें तेजी से उमड़ रही हैं। और सोना की माँ अनुनय सरासर काँपती हुई जा रही है। संताप की अनरूप आकृति में अभागिन माँ का दिल टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया है। गोरा ? तू इस तरह क्यों देख रहा है ? ए गोरा सोना कहाँ है ? बाप मारा ! बोलता क्यों नहीं है ? ए गोरा !"

और सीने के भीतर अचानक पैदा होने वाली उस आश्चर्यजनक ताकत ने गोरा के पंजर को बेंधते हुए उसमें जैसे उपजा दिया 'सोना नहीं है...!"

तूफान का आभास देते हुए सारे पूर्वाकाश को काला करके भैंस की तरह जो मेघ सींग हिला रहा था इतनी देर में वह सोना के घर के सड़े गले दरवाजे के पल्ले पर बड़ी-बड़ी बूँदों के रूप में टपकने लगा। फटांग फटांग करता हुआ पल्ला खुलने-बंद होने लगा रगड़ खाते हुए। बेहोश-से गोरा के होंठ हिल रहे थे। और सोना की माँ का पतला शरीर जैसे हवा के एक तेज झोंके से कातिवार आँगन में गिर पड़ा। फिर सीना-तोड़ आर्तनाद। फिर कराहने लगी। सोना को गर्भ में धारण कर जीवन रस की बूँद-बूँद से रचकर, जन्म देकर आज सोना की माँ होंठों में दबी यंत्रणा से टेढ़ी होकर धनुष बन गयी थी और उसकी गरदन की नसें असहनीय दर्द से कमान की डोरी की तरह खिंच गयी थीं और उसके मुँह के कोनों से झाग निकल रहा था। फिर वही दर्द सौ गुना होकर लौट रहा है।

"एक कौर भात भी नहीं खाया रे !"

उसके बाद तेइस नम्बर की पूरी बस्ती की सीमा फाड़कर रुलाई का रेला उठा। आन कौन लोग कलेजा निचोड़कर घनीभूत स्नेह से सोना का नाम लेकर पुकारने लगे। फिर बारिश उतरी। शुरू में हलकी हलकी। उसके बाद बड़ी-बड़ी बूँदों के जाल में सारे दक्षिण देसपाड़ा के सिर पर

धुएँ को रोकते हुए। वारिश उतरी सारा वेलेघाटा को ढँकते हुए, छुरी की नोक की तरह।

कच्ची नींद मे उठकर तेइस नम्बर की पूरी वस्ती एक लूले आतंक को लेकर धडधडाते हुए सोना के घर के आँगन मे कतारवद खडी हो गयी। शोक, दुख और गुस्मे मे उनके वदन रह-रहकर काँप रहे थे। किसी की ठुड्डी दीर्घश्वास के साथ सीने पर झुक आयी। हड्डियाँ-उभरे सीने। गोरा को वोध नही है। राक्षसी खालीपन लेकर दोनो आँखें आदमियों की दगल-भीड मे जाने क्या ढूंढती हैं!

वारिश के वीच पुतलीकल का सुवह की पारी का भोंपू वजा। कान का परदा फाडने वाला भोंपू। भोंपू की आवाज से अचानक गोरा को होश आया। आज वेलियाहाट्टा वद। सिर हलका हो रहा था धीरे-धीरे। इतने इसानो के शोक, दुख, गुस्से की जलन से गर्मी खाकर गोरा विचलित हो उठा। अव खमा नोचने का वक्त नही है। अभी कितना काम है। वहुत सारा काम।

कुछ वोले विना वह छिटककर निकल गया। सोना की माँ के विलाप मे अव शब्द नही हैं। शब्द गल-गलकर वस अस्पष्ट-सी कराह के रूप में निकल रहे हैं। तारकोल की सडक पर उतरने से पहले सोना ने वुआ को चवूतरे पर वैठे देखा था। वुढिया ने एक वूंद आँसू तक नहीं गिराया। गले की वत्तीस नसें फुलाकर उसे होशियार नही किया। अव किसे होशियार करेगी? चवूतरे पर निर्जीव पडी है। जाने के लिए उन्मुख गोरा की ओर देख वडवडायी, "कहाँ छोड आया रे उसे, तू कहाँ छोड आया रे?"

वुआ के गले मे पहले जैसा तीखापन नहीं है। जरा ठहराव है। अव विचित्र ढंग से स्थिरता है। गोरा ने वुआ की अस्पष्ट अँधेरी आँखो मे से आग की चिंगारी निकलती देखी। दपदपाती हुई। देखते-देखते उसने चलना शुरू किया। और वोलने के वह आसपास भी नही गया। उसे वोलना अच्छा नही लग रहा है। क्या वोले, क्या वात करे! वात को घोकर पीयेगा क्या वह? अभी वात का मतलव है काम। जिंदा रहने का मतलव

ही है काम। और काम का मतलब है उथल-पुथल। उथल-पुथल। बेसिया हाट्टा बंद।

पुलकीकस पीछे छोड़कर ग्रान्ड रोड की चौड़ी तारकोल की सड़क। बायीं ओर मेहतरपट्टी। ऊबड़-खाबड़ जमीन। दोनों तरफ डोमपाड़ा चमारपट्टी और मजदूर बस्ती कतार-दर-कतार चली गयी हैं। रास्ते के पेड़ पर सन्नाटा है। उधर खतरा कम था। बंगाल पुलिस का इलाका। पहले बागतला हाट भेड़ी और मेड़ों और जंगलों से भरा इलाका पार करके कीचड़ से लथपथ रामजी किसकू के डेरे पर पहुँचे थे सब। ऊँचा टीला। छावन और तालपत्तों की झोंपड़ी। सोना तो पहली दफा आकर ही खुशी से पागल हो उठा था। उसने रामजी के साथ दोस्ती कर ली थी। उसके बाबा-परदादा शायद कभी संथाल परगना में रहे थे। उसके बाद भाटे के खिंचाव से छिटककर इधर चले आये। बहुत पहले की बात है यह। उस समय पुल भी नहीं बना था अंग्रेज भी नहीं गये थे। उस समय यहाँ बँसवाड़ा था। भरी दोपहरी में यहाँ चीता बोलता था। हाथों की ताकत, हँसुओं के जोर से जंगल काट-काटकर और जला-जलाकर और गेहुँअन साँपों का सफाया करके जमीन तैयार की थी। रामजी की अम्मा कहती, किस्मत का लिखा जमीन पर कब्जा नहीं हुआ। सरकारी कागज का लिखा कौन मिटायेगा? चपटा मुँह बैठी नाक और मोटे होंठों की अचानक याद आ जाती है। तभी मोरा को बर्छी की धार की तरह तेज बाँस की पत्तियों और बारिशों की याद आने लगी। टिप-टिप बारिश। बबूल के पेड़ के काँटों में बादल फँसा हुआ था। और बारिश टपक टपककर गिर रही थी। रामजी के डेरे की गरम मिट्टी खोदकर माता सूअर गड्ढे में अपना बदन छुपाये बैठी थी। लड़के का शरीर मोरा के कंधे पर। पुकारते ही रामजी हाजिर हुआ। डरा घमकाया 'पेस्टर नहीं मिल रहा था तो इसे पहले सान में क्या आ रहा था?" लड़के का सारा मुँह झुलस गया था। बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। जिस पर पुलिस का हमला। उस बार भड़का किसी तरह बच गया था। घुटने की चकती हट जाने की वजह से पाँव बारा घसीटकर चलता था। लड़के को पेस्टर देने में ही रामजी फँस गया। मगर उसने एक भी बात नहीं उगली। अंत में उसे जेल में डाल,

दिया गया। गोरा से जो भी बनता है, उसके डेरे पर हर महीने दस-पद्रह रुपये पहुँचा देता है। एक और इसान है, जिसे नाटा अली 'पक्के रग का आदमी' कहते हैं। सन् अडतालीस मे गरजा था वह। और अब इस सत्तर मे। बीच में बहुत-से झाड-झखाड पैदा हुए। कालिकापुर के परे, बहुत भीतर जाकर गोरा ने डामूकदिहा के चाचा को देखा है। काकद्वीप की अहिल्या की पाषाणदेह मे जब प्राण जगे थे, उस समय चाचा की बायी आंख पित्त की तरह गल गयी थी। और फिर यह तो गाधी का देश है। गोरा को याद आया कि जब वह नादान था तो कितना व्याकुल होकर, कितनी बार वह 'देश' शब्द का मतलब खोजता फिरा था। 'भारत के उत्तर मे ऊँचा हिमालय पर्वत है।' भूगोल के मास्टर साहब की नसवार से अँटी चपटी नाक अचानक याद हो आयी। मन्टू तो स्कूल-कॉलेज की शिक्षा के ठाठ ज़रा भी बरदाश्त नही कर पाया। गोरा को अभी भी कितनी ही बातें याद आती हैं। सोना की बात, रामजी किसकृ की बात। रामजी और सोना दोनो ही उस देश मे पैदा हुए हैं, जिसके उत्तर मे ऊँचा हिमालय है। हालांकि रामजी अभी दमदम सेंट्रल जेल की साढे तीन हाथ की कोठरी मे दिन गुज़ार रहे हैं और सोना ने दक्षिण बेलेघाटा के कच्चे नाले के घिराव मे खून बहाया है, जहाँ वह पैदा हुआ था।

इससे आगे बेलेघाटा लोकल कमेटी के साथ-साथ तपसे बानतला होकर मगराहाट तक गांवो का सिलसिला चला गया है, जिसका पुलिस को अच्छी तरह पता हैं। इसीलिए अब सिर्फ बगाल पुलिस नही रही। अब यहाँ भी कलकत्ते की पुलिस आती है। नरम मिट्टी के सीने पर काँटेदार बूट जमकर बैठ जाता है।

महुआपाडा के कीचड से सने ढलुआं रास्ते के मोड पर ही बूढे पीपल की जटाएँ उतर आयी हैं। पीपल के नीचे मां शीतला का थान। शीतला-थान की बगल मे कीचड-भरे रास्ते से होते हुए गोरा सुकु की झोपडी मे घुसा। पीछे भेडी-दर-भेडी। फन्टे के ज़माने मे कितने दगे हुए थे? अमीर ग़रीबो मे, ग़रीब गरीबो मे। गोरा ने एक पलक दिगन्त को छू रहे पानी की ओर देखा। भोर की रोशनी पानी के सीने पर छिटक रही है। और बस रास्ते के किनारे चीनापट्टी से दो-तीन चमडे के चीनी व्यापारी पीली

आधा लिये बैठे धँसे सूरज को उगते देख रहे हैं। ये लोग रोज आकर सूरज को उगते देखते हैं। स्वास्थ्य के लिए शायद। गोरा ने उधर देखा ही नहीं। मेड़ी के पानी में लालिमा बिखेरता हुआ सूरज उग रहा है। धीरे धीरे। गड्ढी और मेड़ी और बीच में मेड़ का सीना चीरकर नारियल के पेड़ का मुलायम तना साफ़ दीख रहा है। मेड़ी के किनारे से लगा उसका ज़मीन पर झुग्गियों का घर। घर नहीं कबूतरखाना। बरसात में द्वीप की तरह तैरता है। ईंटों पर तख्त टिकाया गया है। आँगन में पाँव रखते ही छह-सात जोड़ी हवाई चप्पलों पर नज़र पड़ी। बाबा आदम के ज़माने की मन्टू की साइकिल एक ओर पड़ी है। कोई आवाज़ नहीं है। लापरवाही यहाँ तक कि बाहर कोई [illegible] भी तैनात नहीं। चुपचाप घेरा पड़ने पर बचने का कोई रास्ता नहीं है। पता भी नहीं लगेगा। असल में परवाह ही नहीं है।

गोरा के पाँव की आहट से मन्टू ने केंकड़ी की तरह जुड़े दोनों घुटनों के बीच से सिर उठाया। एक नज़र डालकर फिर सिर घुटनों में डाल दिया। ए० बी० बीड़ी सुलगाए रखने के लिए तेज़ी से सुट्टा खींच रहा था। छोटे तख्तपोश पर सब गुड़ी-मुड़ी बने बैठे हैं। खूब पता लग रहा है कि थोड़ी देर पहले कुछ बातें हुई हैं। पिछली रात की घटना की रिपोर्ट मन्टू या बीरू ने आकर दी है। वही सिलसिला अभी भी जारी है। शायद कुछ कहते-कहते आँखों के आगे फिर से पूरा दिन जीवित हो उठने की वजह से किसी की ज़बान से कोई बात नहीं निकल रही है। ए० बी० शायद सब कुछ बारीकी से सुनकर समय पर न पहुँचने की वजह से मन-ही-मन जल रहा है। गोरा पाँव फैलाकर बैठ गया। और बैठते ही देखा कि बायें कोने की टूटी जगह खाली है। सोना वहीं बैठता था दीवार पर पीठ लगाकर। सारा बदन को ढीला करके। मीटिंग वगैरह में वह ज़्यादा सिर नहीं खपाता था। दोनों आँखों को मूँदकर बदन दीवार पर छोड़ देता था।

सबकी ज़बान बन्द है। बीड़ी का जलता सिरा चमकते लाल बिन्दु की तरह उभरा हुआ है। ए० बी० के नाक के सिरे पर लाल आभा चमक रही है जिसकी वजह से नाक अजीब लम्बी और धारदार लग रही है। चश्मे के पतले शीशों के भीतर से उसकी बड़ी-बड़ी आँखें बाहर को उभरी हुई हैं

दिया गया। गोरा से जो भी वनता है, उसके डेरे पर हर महीने दस-पन्द्रह रुपये पहुँचा देता है। एक और इसान है, जिसे नाटा अली 'पक्के रग का आदमी' कहते है। सन् अडतालीस मे गरजा था वह। और अव इस सत्तर मे। वीच मे वहुत-से झाड-झखाड पैदा हुए। कालिकापुर के परे, वहुत भीतर जाकर गोरा ने डामूकदिहा के चाचा को देखा है। काकद्वीप की अहिल्या की पाषाणदेह मे जव प्राण जगे थे, उस समय चाचा की वायी आंख पित्त की तरह गल गयी थी। और फिर यह तो गाधी का देश है। गोरा को याद आया कि जव वह नादान था तो कितना व्याकुल होकर, कितनी वार वह 'देश' शव्द का मतलव खोजता फिरा था! 'भारत के उत्तर मे ऊँचा हिमालय पर्वत है।' भूगोल के मास्टर साहव की नसवार से अँटी चपटी नाक अचानक याद हो आयी। मन्टू तो स्कूल-कॉलेज की शिक्षा के ठाठ ज़रा भी वरदाश्त नही कर पाया। गोरा को अभी भी कितनी ही वातें याद आती हैं। सोना की वात, रामजी किसकू की वात। रामजी और सोना दोनो ही उस देश मे पैदा हुए हैं, जिसके उत्तर मे ऊँचा हिमालय है। हालांकि रामजी अभी दमदम सेंट्रल जेल की साढे तीन हाथ की कोठरी मे दिन गुजार रहे हैं और सोना ने दक्षिण वेलेघाटा के कच्चे नाले के घिराव मे खून वहाया है, जहाँ वह पैदा हुआ था।

इसने आगे वेलेघाटा लोकल कमेटी के साथ-साथ तपसे वानतला होकर भगराहाट तक गांवो का सिलसिला चला गया है, जिसका पुलिस को अच्छी तरह पता है। इसीलिए अव सिर्फ वगाल पुलिस नही रही। अव यहाँ भी कलकत्ते की पुलिस आती है। नरम मिट्टी के सीने पर कांटेदार वूट जमकर वैठ जाता है।

महुआपाडा के कीचड से सने ढलुआं रास्ते के मोड पर ही वूढे पीपल की जटाएँ उतर आयी हैं। पीपल के नीचे मां शीतला का थान। शीतला-थान की वग़ल से कीचड-भरे रास्ते से होते हुए गोरा सुकु की झोपडी मे घुसा। पीछे भेडी-दर-भेडी। फन्टे के ज़माने मे कितने दगे हुए थे? अमीर ग़रीवों मे, ग़रीव ग़रीवो मे। गोरा ने एक पलक दिगन्त को छू रहे पानी की ओर देखा। भोर की रोशनी पानी के सीने पर छिटक रही है। और वस रास्ते के किनारे चीनापट्टी से दो-तीन चमडे के चीनी व्यापारी पीली

वाभा लिये अंड चमे सूरज को उगते देख रहे हैं। व लोग रोज आकर सूरज को उगते देखते हैं। स्वास्थ्य के लिए शायद। मोरा न उधर देखा ही नहीं। भेड़ी के पानी में लालिमा बिखेरता हुआ सूरज उग रहा है। धीरे धीरे। गवही और भेड़ी और बीच में मेड़ का सीना चीरकर नारियल के पेड़ का मुलायम तना साफ दीख रहा है। भेड़ी के किनारे से लगा इसुमों जमीन पर मुर्गों का घर। घर नहीं कबूतरखाना। बरसात में द्वीप की तरह तैरता है। ईंटों पर तख्त टिकाया गया है। आँगन में पाँव रखते ही छह-सात जोड़ी हवाई चप्पलों पर नजर पड़ी। बाबा आदम के जमाने की मन्टू की साइकिल एक ओर पड़ी है। कोई आवाज नहीं है। लापरवाही यहाँ तक कि बाहर कोई खबरदार भी तैनात नहीं। चुपचाप घेरा पड़ने पर बचने का कोई रास्ता नहीं है। पता भी नहीं लगेगा। असल में परवाह ही नहीं है।

मोरा के पाँव की आहट से मन्टू ने सँड़सी की तरह मुड़े दोनों घुटनों के बीच से सिर उठाया। एक नजर डालकर फिर सिर घुटनों में डाल दिया। ए० बी० बीड़ी सुलगाये रखने के लिए तेजी से सुट्टा खींच रहा था। छोटे तख्तपोश पर सब गुदड़ी बने बैठे हैं। खूब पता लग रहा है कि थोड़ी देर पहले कुछ बातें हुई हैं। पिछली रात की घटना की रिपोर्ट मन्टू या बीरू न बढ़कर दी है। वही सिलसिला अभी भी जारी है। शायद कुछ कहते-कहते आँखों के आगे फिर से पूरा दिन जीवित हो उठने की वजह से किसी की जबान से कोई बात नहीं निकल रही है। ए० बी० शायद सब कुछ बारीकी से सुनकर समय पर न पहुँचने की वजह से मन-ही-मन जल रहा है। मोरा पाँव फैलाकर बैठ गया। और बैठते ही देखा कि बायें कोने की टूटी जगह खाली है। सोना वहीं बैठता था दीवार पर पीठ लगाकर। सारा बदन को ढीला करके। मीटिंग वगैरह में वह ज्यादा सिर नहीं खपाता था। दोनों आँखों को मूँदकर बदन दीवार पर छोड़ देता था।

सबकी जबान बन्द है। बीड़ी का जलता सिरा चमकते लाल बिन्दु की तरह उभरा हुआ है। ए० बी० के नाक के सिरे पर लाल आभा चमक रही है जिसकी वजह से नाक अजीब ढंग से और बारबार जल रही है। चश्मे के पतले शीशों के भीतर से उसकी बड़ी-बड़ी आँखें बाहर को उभरी हुई हैं

जैसे फट से एक आवाज़ होगी और आँख की पुतली खून बिखेर देगी, "इस हड़ताल-वडताल से कुछ भी नही होगा।"

छोटे-से कबूतरखाने का बरामदा। बरामदे का छाजन। धुआँ बेचैन हो रहा था। धुएँ का ढेर। ए० बी० ने झुककर फर्श पर घिसकर बीड़ी बुझा दी। वहाँ काला-सा एक दाग़ पड गया। ऊलजलूल। सारे बदन की जलन लेकर मन्टू ने फटी आवाज मे (मन्टू के गले मे दर्दीले गीत बहुत अच्छी तरह उभरते हैं। उसका सोज़ से पुर गला अचानक इस तरह कैसे फट गया ?) पूछा, "क्या क्या क्या करना चाहते हो ?"

सवाल टाँगकर मन्टू सीधे ए० बी० की ओर देख रहा है। थोड़ी देर के लिए चुप्पी। ए० बी० ने फिर एक बीड़ी जलायी। मीटिंग मे बैठने पर ए० बी० लगातार बीड़ी पीता है। आज उसकी मात्रा और भी बढ गयी है। पार्टी के ऊपरी नेतृत्व के साथ ए० बी० का सीधा सम्पर्क है। पूरे साउथ बेलियाहाट्टा का उत्तरदायित्व, लोकल कमेटी के मत्री की जिम्मेवारी ए० बी० पर है। फलस्वरूप ए० बी० की ज़ुबानी ही पार्टी का निर्देश आयेगा। और एक डाँवाडोल हालत मे वे सभी बेचैनी के साथ एक निर्णायक बात सुनने के लिए बैठे हैं—जो बात उनको नुक़सान से बचाने मे मदद करेगी, सोना के कत्ल का बदला लेने के लिए हिम्मत जुटायेगी, और दक्षिण बेलेघाटा के नगे-भूखे लोगो के दिलो मे घुसने का दुर्गम रास्ता बतलायेगी।

बीरू ने दोनो हाथो को मुंह पर फेरा। जाने कैसी एक आवाज़ हुई। रात-भर जागने से आँखो की जोड़ी जल रही है शायद। तिरछी आँखो से निवारन गोरा को देख रहा था। शीशाकल का निवारन वही पट्टीदार फटी हुई हाफपैंट पहने हुए है। अभी थोड़े ही दिनो मे वह इस कोर मे आया है। सोना के रहते ही। सोना ने ही कहा था, "निवारनदा को कोर मे लेना चाहिए। एक तो मज़दूर हैं, दूसरा वक्त दे रहे हैं।"

ए० बी० ने बीड़ी के जल्दी-जल्दी कश खीचकर उसे निवारन की ओर बढाया। दियासलाई की तीली तख्तपोश पर लकीर खीचते हुए कहने लगा, "कामरेड , सोना ही पहला नही है। उससे पहले हमने नन्टे को खोया है। शासक वर्ग अपने गुडो का गिरोह लेकर हर जगह हम लोगो पर टूट

रहा है क्योंकि वे जानते हैं कि यह एक क्रांतिकारी पार्टी है...।"

धीरे धीरे गले में आवेग जागने लगा। जाने कब ममममे भाव से चश्मा उतार लिया है। भारी पलकें बंद होने लगी थीं। मगर पलकों की थोड़ी हलकी-सी दरार रखकर स्थिर हो गयी। ए० बी० की गुरु-गंभीर आवाज भेड़ी के शांत पानी को उछाल रही है। चार-पाँच थोड़ी कान अधीर प्रतीक्षा में खड़े हैं। और बहुत दूर से एक मरा हुआ गला काँप-काँप उठ रहा है—एकमात्र आत्मा बदला।

अब तक गोरा ने जुबान नहीं खोली थी। ए० बी० की बात पर शरीर का ढीलापन टूट गया। कमान तानकर जमे हुए तीर को जैसे किसी ने छोड़ दिया। मुकुमों के डेरे तक आने का समय ऐसी ही आशंका में कटा है। बात सुनते ही गोरा का स्थिर भाव टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया। उधर ए० बी० उस समय भी बोले जा रहा है 'इतने दिनों की अवसरवादी लाइन को तोड़कर पार्टी ने आत्म-बलिदान की महान लाइन को ऊपर उठाया है—कामरेड सोना हमें रास्ता दिखा गये हैं।

'नहीं।

"यानी ?"

'स्वेच्छा से मृत्यु।

'मरन से इतना डर ?"

'तो मरने की होड़ हो रही है क्या ?"

क्रांतिकारी साहस और बलिदान।

'हाँ ठीक है। मगर यह सब-कुछ जिंदा रहने के लिए ही तो है यहाँ तक कि मरना भी।"

ए० बी० की पाँचों उँगलियाँ उसके घुँघराले बालों में बेचैन होकर खेल रही थीं। होंठों के छोर पर अवज्ञा की हँसी थोड़ी घुसगाने तक महसूस हुई। थोड़ी देर बाद ही आँखों की पुतलियों में तारों के सपनों का नशा जमा—एकमात्र पार्टी की लाइन है। नहीं मानने पर पार्टी छोड़नी पड़ेगी। और प्रतिक्रिया के डर से अगर दाँत मिच जाते हैं तो अलग रास्ता नापना पड़ेगा। दूसरा रास्ता।

बहुत देर तक सलाह-मशविरा तथा बहस-मुबाहिसा चलता रहा।

गरमागर्मी भी हुई। फिर दिमागों का पारा नीचे उतरा। एकदम नीचे। दुख की गहराई मे। निवारन और सुकु के हाथ शुरू से ही बदले के लिए कुलबुला रहे थे। अत मे बीरू भी उनके साथ हो गया। सिर्फ़ मन्टू और बूडो बेलियाहाट्टा बद की ज़िद पर अडे रहे। अत में तय हुआ कि हडताल की जो पुकार की गयी है, वह बरकरार रहेगी। एक्शन की भी कोशिश चलेगी। सुकु चट से उठ खडा हुआ एक झटके मे। बाहर नजर दौडाकर आयेगा। उसके बाद सब अपने-अपने रास्तो पर खिसक जायेंगे। पहले ए० बी० जायेगा। पागल कुत्ते की तरह वे उसे खोज रहे हैं। पाने पर नोच खायेंगे। उसके बाद गोरा। उसके बाद धीरे-धीरे बाक़ी सभी जायेंगे।

पहला झडा लगा मोड के लैम्पपोस्ट के ऊपर। बूडो काले कपडे का टुकडा मुंह मे लेकर सर्र से ऊपर चढ गया। थमे हुए आसमान के नीचे लैम्पपोस्ट के माथे पर काला झडा फहरा। नीचे गोरा, मन्टू, अली और विजयदा खडे हैं। बूडो के नीचे उतरते ही उन लोगो ने फिर चलना शुरू किया। बस रास्ते के दोनो ओर की दुकानें बद कराते हुए आगे बढे। कहीं-कही थोडा बहुत बहस-मुबाहिसा भी हुआ। तभी बूडो सामने आ खडा होता। बूडो की हिम्मत की बात इस इलाके के काने टेंगरा तक को पता है। झट से दुकान का टट्टर गिर गया। झमेला खडा हुआ पुतलीकल के गेट पर। तब तक दिन चढ आया था। सूअरपट्टी से दो पहियो वाला छकडा सूअर का मास लादकर घटांग-घटांग आवाज करता हुआ न्यू मार्केट की ओर चला गया। पारी चालू हो रही है। सारे इलाके ने काले बुर्के से अपना चेहरा ढांप लिया। गोरा पुतलीकल के गेट का एक पल्ला पकडकर चमगादड की तरह उस पर झूलने लगा। गेट मीटिंग। बहुत दिनो से वे लोग इस रास्ते से नही आये हैं। शुरू-शुरू मे जुलूस, स्क्वाड, स्ट्रीट कार्नर मीटिंग जैसी बातें लगी ही रहती थी। तब पोस्टर और वालिंग के अलावा कुछ देखने को ही नही मिलता था।

गोरा ने आवाज लगायी। नारों से वातावरण गर्म हो उठा। जोश आने लगा। इसके बाद उसने मुंह खोला। सीना-तोड दर्द से भरा बोल निकला, "दुश्मन को याद नहीं है कि यह बेलियाहाट्टा है निमाई सरकार का बेलियाहाट्टा ।"

अचानक मास[1] गिरा। गोरा के माथे पर लोहे के छड़ की चोट। पुलसीकस के सिक्योरिटी फ़ोर्स का हवाई फ़ायर। बूढ़ों की तरफ़ शिवतल्ले के कांग्रेसी मस्तान लोग लाठियाँ लेकर दौड़ रहे हैं— 'मारो साले बानगी के बच्चों को।' और पुलिस। अचानक लड़ाई का मैदान।

वर्करों की भीड़ के बीच से वे लोग किनारा काटते हुए मेहतरपट्टी के भीतर घुस गये। मास की आवाज़ से कान के परदे फट रहे हैं। हाथ-पाँव कट-फट रहे हैं। और शोक का गहरा काला चिह्न सारे इलाके को घेरकर आसमान के नीचे उस समय भी स्थिर है।

मासे से घटी हुई चिरी दीवार फाँदकर सब मुसरपट्टी के साथ लगे तिरछे पार्क में बैठकर ज़रा सुस्ताने लगे। और इतने में ही सुना कि थोड़ी देर पहले शिवकल के पास एक पुलिस वाला खत्म हुआ है। सुमरपट्टी के पार्क में आकर उन लोगों ने हाथ-पाँव छोड़ दिये। थकान-दर-थकान। बदन पर अब कोई बस नहीं है। खतरे की तेज़ गंध नाक में आकर लग रही है। और क्या-क्या हो सकता है! गोरा मन्टू की ओर देखकर दबी हुई हँसी हँसा। मानी खतरे के हाथ-पाँव निकल रहे हैं। अब देखा जाये कि क्या कुछ होता है!

'मुकु लोगों का काम है।'

बसी ने गुस्से स कहा 'ठीक किया है।'

बसी भीतर भीतर हज़म नहीं कर पा रहा था। पुलसीकस के आगे मास गिरने पर एक किर्चा उसकी ऐड़ी में आ लगा था। एक बोटी मांस उड़ाकर ले गया है। गोरा की योजना थी कि शाम को पाँच-सात जनों का मकर एक स्क्वाड निकालेगा। तूफ़ान की तरह। अभी वे लोग दिशा तय नहीं कर पा रहे हैं। विजयदा बहुत ज़्यादा एक्सपोज़्ड नहीं हैं। हालचाल पता लगाने के लिए उन लोगों ने सलाह-मशविरा करके विजय दा के हाफ़ रोड के मोड़ पर पहुँचते ही अनजीवी मौरैया की तरह दो गाड़ी पुलिस ने पार्क में रेड किया। खतरा लेकर ही जिनकी गृहस्थी चलती है कौए के मुँह से समाचार पाकर वे लोग उड़ गये। गद्दा और

---

1 बम।

पोखरा। और सडा हुआ नाला। और रेलवे ओवरब्रिज पार करके हवा मे ग़ायब हो गये।

वादल ने और पानी नही गिराया। पानी-भरी आँखो की तरह वादल। वादल के नीचे वेलियाहाट्टा। वेलियाहाट्टा का दमघोंटूपन। साँस लेने मे दिक्कत। हवा का नामोनिशान नही। काले कपडो के टुकडे जीभ की तरह झूल रहे हैं। जबकि कुछ भी हिल-डुल नहीं रहा है। स्थिर, निस्पन्द। जैसे सब-कुछ पत्थर हो गया है। पुतलीकल की चिमनी से घना गाढा धुआँ उठ रहा है, वायलर मे आग बनाये रखने के लिए। और यहाँ-वहाँ लोगो की भीड। फुसफुसाकर बातचीत, "देखो क्या होता है, गोरा, लोग छोडने वाले नहीं हैं। अभी तो वस शुरुआत है।"

यानी अब आसमान चीर कर गाज गिरेगी और खामोश वेलियाहाट्टा अचानक निष्ठुर ढँग से फट पडेगा। काली पट्टियो से लिपटे वेलियाहाट्टा के प्राण जागेंगे। वेचैन प्राण।

विजयदा के चले जाने के वाद वे तीनो उठ खडे हुए थे। रेड से पहले ही हवा हो गये थे। नेशनल रवर के पीछे का रास्ता पकडकर नीधे पचानन-तल्ला। सुस्ताने का मौका भी नही मिला। पचाननतल्ला से नाला पार। नाला पार की इस जगह का पता खोचरो को नही है। पत्थरो से अँटे ऊवड-खावड रास्ते के एक तरफ पडे लकडी के कुन्दे पर ही वे वैठ गये। जल्दी से योजना वनानी है। तीन जनो का एक साथ घूमना-फिरना वेवकूफ़ी है। सव साथ-साथ पकडे जायेंगे। सवका अलग-अलग दिशा मे छिटक जाना ही वेहतर है। वाद मे मौक़ा देखकर मुलाकात की जायेगी।

लकडी के कुन्दे के पीछे नाला। गदा नाला। कलकत्ते की कीचड-गन्दगी को लिये गदा नाला। और गदे नाले के दाहिनी तरफ़ किलखाना, हड्डीकल। गायें जिवह होती हैं। और लाइन की वग़ल मे उनकी आँतें हवा मे फुलाकर, धूप मे खीचकर विछा रखी हैं। वदवू निकल रही है।

यूँ ही गोरा का दम घुट रहा था। फिर यह वदवू। दौडने की वजह से सीने मे अभी भी थोडा-थोडा दर्द उभर रहा है। ज्यादा दौडने पर सीने के पास एक दर्द उभर पाता है। असल मे शरीर ही कमजोर होता जा रहा है। तीनो ही पसीने से तर। होठ सूख कर लकडी वन गये। जल्दी मे कोई

बात नहीं निकली। गोरा पस्त हो गया था 'नहीं समझ सका बैसेपाटा को सोना की बात का पता भी नहीं लग सका ।" बूढ़े का हाथ सुलगता रहा है इस वक्त ढील देने पर मरना पड़ेगा।

"सिर्फ मरना और मारना—तुम लोगों के मुँह में क्या और कोई बात नहीं ?

'जो सच है वही कह रहा हूँ।

"कौन-सा सच है ?"

"मरना।"

"मर फिर।

पता लगाकर विजयदा सही-सलामत आ रहे हैं। विजयदा के [illegible] हुई लकड़ी-से शरीर की ओर देख गोरा के मन में आगे कैसी उथल-पुथल जगी। मुखिया रोग से ग्रस्त गोदी की लड़की की बात याद हो [illegible]। सोनारपुर की सीधी-सादी लड़की छिरि भाभी की बात भी [illegible] हो आयी। विजय के न रहने पर सब-कुछ बह जायगा। कौन-स [illegible] जायेंगे वे ? फिर अभी तो गिनती भाभी नहीं है। गोरा [illegible] विजयदा को लेकर खींचतान करना ठीक नहीं है। वहीं जैसे [illegible] का घुन लगा है। गोरा को महसूस हो रहा है। साफ लग रहा है [illegible] कुछ करने को नहीं है। वैसे गोरा कहीं बहुत ही प्रसन्न है। [illegible] पसीने से तर हो रहे हैं 'गोरा तेरी माँ को उठा ले गये हैं।"

"माँ को !"

"हाँ।"

"कह क्या रहे हो ?"

"हाँ। ठीक ही कह रहा हूँ। मगर अपनी आँखों [illegible] मुहल्ले में घुस नहीं सका। बड़तालीस नम्बर की [illegible] मुझसे नहीं दिया। तभी सुना तेरे घर में घुस [illegible] जा सकेगा। लोथड़ों से भर गया है।"

लकड़ी के बड़े-से कुन्दे पर विजयदा न बदन का [illegible] में हड्डियों की सड़ी बू म [illegible] आग लगी है। [illegible] फैल रही है। रुँधे गले से बताकर विजयदा [illegible]

आ घेरा हो। हाथ-पाँव नही फैला पा रहे हैं। मन्टू बारीकी से पूछताछ कर रहा था, जैसे रास्ता खोज रहा हो। रास्ता कहाँ है ? हूबहू नन्टे जैसा हाल। तालतल्ले का नन्टे। सिर पर कोमत लगी थी। और लडका खोचर के दौडाने से एक ब्लाइड लेन मे घुस गया था। उस समय सिर्फ घुसने की बात याद रही थी। फिर निकलना पडेगा, यह बात भूल गया था। तब तक एकमुँहा गली का मुँह उन्होने घेर लिया।

"अली।"

"हाँ।"

"तू डेरे मे चला जा। स्थिति खराब देखने पर बी० सी० मे चले आना।"

"नही।"

"अब बहस का समय नही है।"

"नही, नही।"

"बात मत बढा।"

"नही। यह नही होगा।"

"जा।"

"नही।"

"अली।"

मिजाज बिगडा जा रहा है। पारा चढ रहा है। पारा और ऊपर। विजयदा के मुँह से समाचार सुनने के बाद मे ही रुलाई का एक वेग सीने के भीतर घुमड रहा था। इसीलिए तो गला फाडकर रोया नही जा सकता। जलन बढने लगी। अचानक स्वर धीमा हो गया, "तू तो समझदार है अली, क्यो नही समझ रहा है ? सभी अगर एक-साथ इलाका छोड दें तो सगठन की क्या हालत होगी ? तुझे ज्यादा नही पहचानते। रह जा।"

अली की चपटी नाक होठ पर झूल आयी है। बँगला अच्छी तरह नही बोल पाने पर भी, समझता खूब है। और समझता है, इसीलिए चुप मार गया। मन्टू किसी बात को आधी पेट मे, आधी मुँह मे लिये बेचैन होने लगा। अली की मिचमिची आँखो की जोडी छोटी हो आयी। उसकी

आँखों में आसानी से पानी नहीं आता। छाती फटने पर भी नहीं।

धीरे-धीरे वह चला गया। कितनी अनिच्छा से वह लौटा यह तीनों आदमियों के इस छोटे दल को ही पता है। सिर्फ तीन जने। तीन इंसान।

गोरा बूढ़ो और मन्टू। विजयदा गोरा की ओर मुड़ा अब मुहल्ले में मत घुसना। घुसते ही मारा जायेगा। सारा इलाका छान डाला है। बी० सी० में चला जा मीनू शाम को आयेगी। उसी की जुबानी सब सुनना।

'और तुम ?

'दो दिन एक दोस्त के घर बिता कर देखूँगा। उसके बाद ।

अब इंसान के नाम पर ये तीन जन हैं। तीन जनों का छोटा-सा दल। विजयदा भी थोड़ी देर पहले चल गये हैं। अब मुहल्ले से खबरें लाने-ले जाने का काम विजयदा को ही करना पड़ेगा। यानी कूरियर। उन लोगों ने विजयदा को धुँधला होते हुए गायब होते देखा। गोरा ने खासी नजर रास्ते पर बिछाए रखी।

अचानक वह झट से उठ खड़ा हुआ। मन्टू ने ही तकाजा किया कि चलो अब बैठने से कोई फ़ायदा नहीं है। मकड़ी का कुम्हा पीछे छोड़ गंदे नाले की बगल से छिपे-छिपे चलने लगे। मन्टू का एक हाथ गोरा की पीठ छूकर सीधा हो आया है। उन्होंने तय किया कि लाइन पर चढ़ेंगे। बूढ़ो चीख उठा "एक बार भ नसीहत नहीं मिली।

गोरा और मन्टू ने बात टाल दी। बात वह गयी। लाइन पर से ही शार्ट-कट है। उन्हें बहुत जल्दी हो ऐसी बात नहीं। बदन को ढील देकर ही चल रहे हैं। फिर भी इस शार्ट-कट रास्ते का कैसा खिंचाव है! गोरा के मुँह से अनजाने में एक बात निकल गयी वे क्या हमें न पाकर मेरी माँ को ही गोली मार देंगे बूढ़ो ?"

"हट भला ऐसा होता है क्या ?

मन्टू बूढ़ो की बात बराबर काटने लगा क्यों ? क्यों नहीं होता ? उनसे इंसानियत की उम्मीद रखते हो ? भलमनसाहत की ? ताज्जुब है।

गोरा ने मुँह नहीं खोला। वे तीनों अब जल्दी-जल्दी चल रहे हैं। मन्टू की बात ने असल में उन्हें उकसा दिया है। और गोरा सोच रहा था—

कौन-सी कक्षा में पढ़ा गया था और कितने [illegible]
के पाससे बिन्दु की चूहाल पर हर बहुत पुराना [illegible]
कहता है बापू भी। सिर्फ बापू। [illegible]
निवास तक नहीं था। सूरज की रोशनी पड़ने पर [illegible]
तरह बापू का तमाम्बर तिलमिलाता था। चमकता था। [illegible]
में भी तो बापू के दूर के भीतर [illegible]
पता पाया था। सीता-अनुपम। और [illegible]

बैसाखी में विपत्तियों के शिकार नहीं हैं। [illegible]
निपकम और भी आग कितनी कम। गुड्डू के बाल न [illegible]
गट-गटकर हड्डियों में कूद पचा ली थी। [illegible]
ने आग लगायी, कागजी से ही आग बुझायी। और गुड्डू [illegible]
नाक हो गया। बताती कि [illegible]
किनारा नहीं है। बैसाखी में [illegible]
के उसके शरीर पर नई निशानी है [illegible]
ने मरण को नकारकर गुड्डू ने कहा, "अब [illegible]
कर उसमें समझ पर पूरा।" [illegible]
में। बचपन में।

बापूजी की आग। [illegible]
के पास पर मुर्गी [illegible]

शाम है। ये तीनो लम्बे डग भरते हुए चल रहे थे। वालू के चर की ओर। अब वालू का कही अता-पता नही है। फिर भी वालू का चर, वालूचर। वालूचर का मतलब है चौडा सीना। पूरी दीवार पर स्टैंसिल की छाप। वालूचर का मतलब एक दगल-भर जवान लडके। भविष्य का सपना, पार्टी का आधार। खोचरो को कँपकँपी। वेलेघाट की जान। वेलियाहाट्टा की आन।

यही अत है। वालूचर ही वेलेघाटा का अत है। ग़रीब वेलेघाटा की आखिरी सीमा। उन लोगो ने उसकी सीमा मे पहुँचकर चैन की साँस ली। इसके वाद नाला और भेडी। भेडी और नाला। और ज़रा भीतर जाने पर, मछली की वू पार करके, कीडा खाये पके धान का गीत।

वे लोग काले पानी के सीने पर छाया विखेरते हुए चल रहे थे। घने काले पानी की गहराई मे काई और सेंवार। मुरारी के इकहरे शरीर पर चारो ओर काई और सेंवार लिपट गयी थी। वालूचर का मुरारी। गहरी रात को उन लोगो ने मुरारी को झील के पानी मे ठेलकर लगातार गोलियो से दाग़ा था। गोलियाँ आर-पार निकाल दी थी। झील के पानी ने निष्ठुर ढग से खून के दाग़ छिपा लिये थे साजिश की स्याही मे। सिर्फ झील के किनारे वसे मज़दूर-मजदूरनियो और रेलवे गैगमैनो की झोपडियो पर 'इनक़लाव' की गूंज धक्के मार रही थी। भोर गयी रात 'इनकलाव' शब्द की गूंज से उनकी वेवस नींद टूट गयी। उन लोगो को पता चला कि एक आदमी ने यह वात अपने कातिल के सीने पर फेंक मारी है। और उसके वाद ही गोली की आवाज़। और उसके भी वाद लेक के किनारे पर वने झोपडो के सीधे-सादे लोगो ने वात का मतलव खोजा था। 'इन-कलाव' का मतलव ? जो वात कहकर मुरारी ने राइफल की गोली हज़म की थी, वही वात। उसका मतलव ?

और ए० वी० ने कहा था, 'एक्शन से, सघर्ष से जनता सीखती है।' शरीर पर गोली दग़ने से पहले मुरारी जूझा था। उसके वाद झील का ठडा पानी। और इनकलाव। हनीफ ने ए० वी० से पूछा था—'इनकलाव का मतलव ?' इससे ही सव-कुछ प्रमाणित हो गया। एक्शन का मतलव ही है प्रचार। सगठन। मन्टू वात नही मान सका। वह फुफकार

उठा था 'कामरेड मुरारी हम लोगों की आँखों की पुतली थे। वो जीवित रहते तो पार्टी को और ज्यादा मजबूत बना सकते थे।

"हाँ निश्चय ही।"

"तो क्या जिंदा रहने के लिए होड़ लगाएँ—क्यों ?

"मरे क्यों ? कामरेड मुरारी उनकी आँखों से बचकर भाग सकते थे। जनता के भीतर पैठकर लड़ाई की जमीन तैयार कर सकते थे ।

"शहीद कामरेडों की आलोचना नहीं सुनना चाहता।"

तब कहने के लिए कोई बात नहीं बची। किसी काम के बहाने मन्टू उठ गया था। और गन शाट पाइपगन को ढीली पैंट की जेब में डाले ए० बी० भी उठ खड़ा हुआ। ए० बी० के सिर पर उस समय हजार रुपये का इनाम था। और इसीलिए छोटी पाइपगन हमेशा उसकी जाँघ छूती रहती थी। खून में लोहे का ठंडा स्पर्श। लकड़ी का हैंडिल लगाकर पीम्बर की तरह बना दिया गया है। ए० बी० कहता है 'गन शाट। असल में है पाइपगन।

झील की बगल में दसेक हाथ की दूरी पर पुरानी स्प्रिंग फ़ैक्टरी और सीलनदार भीगा मैदान। बारीक रेत का बालूचर। चार बालूचर को घेरकर मानो सती की देह के टुकड़ों की तरह मुरारी बिखरा हुआ है। इनक़लाब की चिरकती हुई आवाज सारे इलाक़े को भरकर छिपी हुई है, न जाने कब फट पड़े ? ऊपर से कुछ भी पता लगाने का उपाय नहीं है। बालूचर जो है वही है। दाहिनी ओर सारे कलकत्ता का बुहारा साफ़ किया मैला। मैले का पहाड़। पेट फूलकर ढोल बना हुआ कुत्ता मानो पहले पैदा हुआ बच्चा—कफ़न ओढ़े हुए और बदबू। बदबू।

बालूचर के बीच में लम्बे बक़फूस की एक मग्ही कोंपल छूकर धूप का आख़िरी टुकड़ा मुस्करा रहा है। रेल-लाइन के पत्थरों के टुकड़ों और कँटीले बने तारों से ठोकर खाते-खाते ये लोग बी० सी० में आ गये हैं। सारे रास्ते पर जोर-जोर से साँस लेने के कारण ये अब बुरी तरह पस्त हैं। मन्टू की दोनों आँखें कनेर की तरह सुर्ख हैं।

"किसी का अता-पता नहीं है।"

"मामी की दुकान पर चलें।"

"भाभी के लूले पति को कई दिन पहले उठा ले गये थे न !"

"फिर क्या हुआ ?"

"दूकान पर नजर जरूर होगी।"

"चलो तो।"

गोरा हथेलियो से सारा चेहरा ढाँपकर बडबडाया, "जरा गला तर करना भी जरूरी है, कठ एकदम सूख गया है।"

सिर नीचा करके वे लोग भीतर घुसे। भाभी की दूकान का टट्टर पूरी तरह नही उठाया जाता। पहले दूकान मे कोई-न-कोई हर समय जमा रहता था, दूकान गर्म रखता था। शुरू के दिनो मे शायद सवेदना मिली चाय की प्याली के मारे आते थे। अरे, जोरू को कितनी तकलीफ है ! आदमी रेल से दोनो पाँव कटाकर बैठा है। अब पाँव नही है। बेजान मास के पिंड बैंगन की तरह झूलते हैं।

ढलती दोपहर आज बिलकुल खाली है। एकदम सन्नाटा है। विचित्र एकात है। गोरा को देख भाभी की चिकनी नाक की कोर पर एक मलिन भाव सरका। पतले होठो मे हँसी खिली।

"नही है ?"

"ना।"

"बहुत मुश्किल !"

"आज किसी का भी अता-पता नही है।"

"बिल्डिंग मे हैं ?"

"ठीक पता नही है। मगर लग रहा है, नही हैं।"

तभी टूटे हैंडलो और काले दागो वाले सस्ते प्यालो को उलट-पलटकर धोना शुरू हो गया। कलाइयो मे चढी शख की चूडियो की छन-छन बजने लगी। चाय की बात मुँह से नही कहनी पडती। भाभी को पता है, इन लडको को प्यास लगी है। प्यास लगने पर ही आते हैं इस 'भाभी काफे' मे। उनमे मे किसी ने मजाक मे यह बात कही थी। बस, तब से यह बात चल पडी। सभी तूफान की तरह आते है। दो क्षण बैठते हैं। गरम-गरम चाय मे गला साफ करते हैं। फिर चट से गायब हो जाते हैं, कबूतर की तरह।

पैसे के बारे में नहीं सोचना पड़ता। सोचना होता है इन लड़कों को लेकर। इनकी दिल-ओ-जान हेमी को लेकर। दूकान में जमकर बैठकर, गुप-चुप में तूफ़ान उठाये हैं। बातों की फुलझड़ियाँ। कैसी-कैसी बातें! चीन रूस संशोधनवाद क्रांति साम्राज्यवाद के तलुए चाटने वाला कुत्ता— ऐसी ढेरों बातें 'भाभी-काकी' की भाभी की समझ में नहीं आतीं। बेला नाम की भरत बहू। बेला सोचती उफ़! सारी दुनिया को उखाड़ डाला है। फिर भी बेला समझती थी। 'भाभी काकी' की भाभी। उसके समझने लायक बातचीत भी होती थी। बेला समझती है कि ये लोग ऊपर से नीचे तक बदलना चाहते हैं। मंत्री-संत्री का बदलना बदलना नहीं। बिलकुल जड़ से पलटना। एकदम उलट देना चाहते हैं। स्वप्न-कथा सुनते-सुनते आज भाभी के सीने में भी एक तूफ़ान-सा उठा है। नये-नये लड़कों की चमकती हुई आँखों में और पसीने से तर चेहरों पर आस्था है अटूट दृढ़ आस्था।

होगी ही। हाँ होगी ही। सातवें दशक में ही। क्या होगा, बुखार से कहने की आवश्यकता नहीं। ईमान बास नहीं करते। और पाँच उँगलियों से कैसे उठाया जाता है पेट में रोटी कैसे डाली जाती है और वही रोटी आग सेंक में डालकर जुटानी पड़ती है यह बात कामगर ही जानता है। जानता है कि क्या चाहिए, क्या नहीं चाहिए। पेट भर भात चूतड़ पर कपड़ा। और और मुक्ति। मु क ति।

"मेघु देवरजी की हालत अच्छी नहीं है।

चमचा हिमान की खट-खट आवाज हुई। मीरा की ओर एक कप बढ़ाते हुए भाभी बोली। घुटने पर ठुड्डी तिरछी रखी है। आँख की भारी भारी पलकें मुँदी हैं।

अगर अस्पताल में इंतजाम किया जाता।"

'पागल हुई हो।

मीरा का चेहरा बदल गया। विचित्र परिवर्तन। अचानक चेहरे का भाव बदल जाता है। धप से सिर में आग जल उठती है। दाँत भींचकर जैसे कोई फुसफुसाया बस साँस की। आजकल अकसर ऐसा हो रहा है। जब-तब नसें तन जाती हैं। और संवाद की तो कोई कमी नहीं है। एक

एक सवाद गोली की तरह । राइफ़ल की गोली शरीर मे धँस-धँस जाती है ।

"दादा को तो छोड दिया है ना ?"

"हाँ ।"

वह रात जैसे कालरात्रि थी । ए० बी०, नेपु और पाँच-छह जने मिलकर रात-भर वालिंग-पोस्टरिंग करके भोर के लगभग उम लूले आदमी का नाम लेकर पुकारने लगे "रविदा ! ओ रविदा ! क्यो उठोगे नही क्या ?" आदमी को उस दिन बुखार-सा था । देर से ही उठता है । भोर गयी रात ही कालरात्रि है । रात-भर जागने की थकान से अब अगर लुढक जाये तो बचाव नही है । ऐसे वक्त ही दुश्मन आते हैं । और इसीलिए नीद दुश्मन है । दुश्मन को भगाने के लिए गले को एक घूंट गरम पानी चाहिए । स्टेंसिल का पतला टीन, रग का डिब्बा और ब्रश भाभी की दूकान मे ही रहते हैं । चाय गले मे डालने के लिए पहुँचे । मुखबिरो की तो कोई कमी नही, देखते-देखते घेर लिये गये । किस्मत मे पीछे के दलदली जगल को वे लोग अपने वश मे नही ला सके थे । उस ओर से ही वे लोग साफ हो गये । और सरकारी वेतनभोगी अफसर लूले आदमी की बग़ल मे स्टेंसिल खोसकर उसे घसीटते हुए खींच ले चला । इतने झमेले के बाद भी लडको के लिए बेला के मन मे दर्द है । उन्हे देखकर रुलाई आती है । भोर गयी रात को दुस्वप्न देख घडघडाकर उठ बैठती है । खतरे की बू पाते ही खबर पहुँचाने के लिए बेचैन हो उठती है । उसके सारे बदन मे न जाने क्या कुछ होता रहता है । आधी रात तक नीद नही आती ।

दूकान पर कडी नजर है । चाय लेकर बैठने पर अनजान आदमी से इधर-उधर की पूछताछ करते हैं । नेपु के ग्रुप ने एक को अचानक घेर लिया था । बेला की आँखो के सामने । मुरारी उस समय तक शहीद नही हुआ था, वरना कुछ हो जाता । दूकान के चारो ओर कडी निगाह है । किसी भी क्षण हमला बोलकर तबाही मचा सकते हैं । इसानी जिन्दगी को फाड सकते हैं । और ए० बी०-ग्रुप के तो किसी एक को भी पाने पर नोच डालेंगे । फिर भी वे लोग आते हैं । खूब आते हैं । दिन-भर मे एक-न-एक बार आयेंगे ही । न आने के अलावा कोई और चारा नही है । घर छोडे हुए, पुलिस के

जकड़े हुए लोग। सूखी ज़िन्दगी में भरपूर स्नेह की एक बूँद पाने के लिए कितनी गहरी प्यास !

बूढ़ा अभी तक दलान पर खामा मारकर बैठा था। हाल चाल मालूम करने के फ़िराक़ में था। दिनों दिन बूढ़ो जैसे शिकारी बिल्ली की तरह बनता जा रहा है सूँघकर ही उसे खतरे का पता चल जाता है। चाय की तलछट तक गले में उँडेलकर वह झट से उठ खड़ा हुआ 'मेघु के शेल्टर में चलें।" बूढ़ो ने मार्के की बात की है। सबको पसन्द आयी। मन्टू पैसा चुकता कर गरदन नीची किये निकल आया। और अनजाने में ही न जाने किस खिंचाव से उसकी आँखें भाभी की आँखों से मिल गयी। आँखों में आँखें। यानी ज़िन्दा रहने पर फिर मुलाक़ात होगी। अलविदा !

वे लोग जैसा भाभी की नम आँखों से धीरे-धीरे एक-एक करके दूर जाने लगे। धुँधले होते हुए बिलकुल ओझल हो गये। बकफूल के पेड़ की हलकी विपण्ण छाया उनके शरीरों पर थी। बकफूल पेड़ के टेढ़े-मेढ़े तने पर इनक़लाब की बू। गंध। शरीर के रोम खड़े हो जाते हैं। रोम रोम में *बिजलियाँ दौड़ती हैं। मुरारी को पेड़ के तने के साथ बाँधा गया था और* एक इंसान के गले से इनक़लाब की पुकार साइरन की तरह बजी थी। बासूचर से घिरे कबूतरखानों जैसे घरों और काले पड़े आसमान और झील के पानी पर इनक़लाब की पुकार।

और दो क़दम आगे बढ़ाते ही मेघु का शेल्टर। कच्ची मिट्टी की झोंपड़ी। दो हफ्ते से ज़्यादा समय से लड़का यहाँ पड़ा हुआ है अस्पताल ले जाने का कोई रास्ता नहीं है। बसने के बाद म ज़हर फैल गया है। लड़का निश्चित रूप से मर जायेगा। सबकी आँखों के सामने कुछ भी नहीं किया जा सकता।

एक फ़ालतू झमेले में फँसकर यह हाल हुआ है। मेघु उस दिन माल टैस्ट करने के लिए झील के किनारे गया था। अचानक जाने कैसे माल पेड़ में ही फट गया। असली माल था। धूँ-धूँ करते बासूचर में एक विचित्र-सी लाल-सफ़ेद गंध बिखेरता हुआ माल फटा था। माल फटा था मेघु की जाँघ के मांस को उखाड़ते हुए।

आजकल इस तरह की घटनाएँ हर समय घट रही हैं और [illegible]

सी जग छिड़ेगी, कोई हिसाब-किताब नही। पुलिस, सी० आर० पी०, सी० पी० एम०—किसके साथ जग नही? छिड़ने-भर की देर है। इसी कारण बात चली थी, एक भूमिगत नर्सिंग होम या अस्पताल जैसा कुछ कायम करने की। ए० बी० ने ही यह बात कही थी। हालांकि यह बात वास्तविक रूप कब लेगी, भगवान ही जाने। मन्टू ने उस दिन चिढकर कहा था, "कब से सुन रहा हूँ, कायम होगा, होगा। लेकिन क्या सबके कब्र मे जाने के बाद कायम होगा?" बात मुँह से निकलते ही ए० बी० की गरदन की नसें बुरी तरह फूल उठी थी। बायी आंख के ऊपर कटी हुई भौंहे झटके से नीचे उतर आयी थी।

उनके बाद और कोई बात नही हुई। उसके बाद मौन गाभीर्य। विराम। होठो की दरार मे टेढी हँसी का टुकडा।

दिन-ब-दिन सब-कुछ कैसा बदलता जा रहा है। हू-हू तूफान के वेग से दिन गहराते जाडे की तरह खुश्की फैला रहे है। ए० बी० का असली नाम अब याद नही रहता। अब अशोक नही, ए० बी०। अशोक नाम झटके खा-खाकर बदला है। ऊपर के दर्जे के नेताओ के साथ उठ-बैठकर, नीचे के दर्जे का दादा बनकर अब विचित्र हाफ नेता है ए० बी०। जला हुआ अगार। टेढी हँसी। बहुत रिस्क। उस पर कोई बात नही चलती। जाने कैसा फौजी मिज़ाज है! नेतृत्व का मोह? या नशा? या तर्जनी उठाकर अंतिम शब्द कहने या मैन्डेट देने का बेअदब मिज़ाज न रहने पर नेतृत्व नही चलता?

कच्ची मिट्टी की नमक-खायी दीवार के साथ-साथ आगे बढते हुए सिर पर प्रश्नो की आरी-सी चलती है। नारानदा मे यह सब-कुछ नही था। नारानदा बिहार के किसी गांव मे पार्टी के नेता हैं। अब मोतीहारी थाने मे हैं। कितना विचित्र नाम है! मोतीहारी थाने के नाम के अलावा गोरा को इस बारे मे और कुछ नही पता। गोरा को पता नही कि जाडे की रात को ठड भगाने के लिए देहाती लोग कितना फून जलाते हैं? गोरा को पता नही कि आग के चारो ओर रूखे, जली लकडी-से इन्सानो के साथ शिकारी की तरह बैठकर नारानदा उन्हें कौन-सा रास्ता बताते हैं? उसे नही पता कि हफ्ते मे इस आदमी को एक वक्त का खाना भी मिलता है

या नहीं। गोरा महज इतना जानता है मारानवा नेता है। कैसे नेता! दोस्त जैसे पिता जैसे नेता। सीने के दर्द गिर्द एक दर्द लेकर उस आदमी के सामने फफक कर रोया जा सकता है। साफ़ दिल से खुलकर बात की जा सकती है। मारानवा कहते हैं 'कम्युनिस्ट बनना इतना आसान नहीं है। मेरी माँ कहती थी 'मरती है मारी उड़ती है राख तब मारी की बनती है राख। हम लोगों का भी यही हाल है। जिन्दगी-भर जो ईमान दारी से मजदूर की लड़ाई में साथ दे सके वही कम्युनिस्ट है।

यह बात गोरा को अक्सर याद आती है। खतरे परेशानी के समय। दुख-सुख में। और इस बात के मन में आते ही सीने में ताक़त भर जाती है। मारानवा बहुत ही क़रीब के आदमी हैं। और इसीलिए मारानवा नेता हैं। कोई धुएँ के छल्लों में घिरा बड़ा विस्मय नहीं हैं।

दीवार थोड़ी दूर जाकर बिलकुल खत्म हो गयी है। ऊँच-नीच गड्ढे पार करके नेपु का शेल्टर। भीतर बोरी बिछाकर लड़का पड़ा रहता है। नेपु को खाना खिलाती है शांता। ए० भी० की बहन। टिफ़िन के डब्बे में शांता हर रोज उसका खाना ले आती है। नेपु कहता है, राजा की तरह रहता हूँ। और शांता की चिबुक के काले तिल में दुर्बोध्य एक दुख एक शोक धीरे-धीरे स्पष्ट हो उठता है "तुम कैसे हो जी?"

नेपु हँसता है और कौर निगलता है। शांता के हाथों पर पीली छाप। बहुत दिनों बाद घर में बनी मिर्च-मसालेदार सब्जी नेपु बड़े चाव से खा रहा था। शांता नाम की कसे बदन वाली लड़की की बादामी आँखों की पुतलियाँ स्थिर हैं।

पीले रंग का तेलिहा मरहम नेपु के पूरे हाथ पर पुता है। दाहिने हाथ में ही ज़ख्म ज़्यादा हैं। तीन उँगलियाँ करैले की तरह सूज रही हैं। टिफ़िन के कटोरे में ही नेपु ने कुल्ला किया। चौड़ी किनारीदार सफ़ेद साड़ी के आँचल से लड़की ने नेपु का मुँह पोंछ दिया। गोरा तब तक बोरी पर ही पसर गया था। शरीर अब और नहीं ढोया जा रहा है। इंसान का ही टूटे शरीर है। कहाँ तक बरदाश्त कर सकता है? गोरा के सीने पर जलता सिर झुक आया है। माँ की बात याद आते ही जैसे धक से कहीं है। कुछ जलता रहता है। और शरीर जलता है।

"अ अ ! लग रहा है।"

शान्ता सिर झुकाकर नेपु के हाथ पर मलहम लगा रही थी। उसके बालो की लटो से तेल की खुशबू उस कबूतरखाने मे फैलती जा रही है। नेपु के चिल्ला पडते ही शाता को तरस आ गया। उसने एक झटके से सिर ऊपर उठाया। भीतर एक खिचाव। लडकी की ठडी आँखो मे गहरी ममता। नेपु का समूचा दर्द सीने मे सँजोकर लडकी की आँखो मे गहरी वेदना। मन के आदमी से आसन्न विच्छेद की बात सोचकर वेदना। नेपु की मृत्यु-यत्रणा देख शाता की आँखो मे धूसर जाल।

गोरा को पता है कि वे लोग एक दिन के लिए भी गृहस्थी नहीं बसा सके। रेडबुक मे से खुद ए० बी० ने एक अश पढकर सुनाया था। नारी-सबधी अध्याय से। नारी का पुरुष द्वारा शोषण—एक और अतिरिक्त शोषण—पीडन है। इस सामाजिक पीडन को ध्वस्त करके ही, जिदगी की एक बहुत बडी जरूरत को ध्यान मे रखकर उनकी शादी हुई थी। सग्राम की बात याद रखकर। शाता उस दिन जैसे उफनी पड रही थी। एक खुशी का फव्वारा। और पार्टी-कामरेडो ने लगातार चाय पीकर बातो का फव्वारा छोडा था। जाने किसने कहा था, "शाता को माँग मे सिन्दूर लगाना चाहिए, वरना वह जनता से कट जायेगी। बस, शादी खत्म।" उसके बाद उस दिन ही नेपु पार्टी के एक काम से मालदा चला गया था। शाता को पता नहीं चला। कुछ भी पता नही चला। घर लौटते वक्त कान के पास से सरकती लतर के फूलो के गुच्छे ने उनका गाल छूकर उसे अनमना बना दिया था। उदास बाऊल गीत-सा।

नेपु के सिर के पास एक चौकी है। शाता रास के मेले से कुछ दिन पहले लायी थी। दवा और चन्द किताबें हैं। अकेले रहते ही वह किताब लेकर पड जाता है। हालाँकि आजकल यह सब पाठ खत्म होते आ रहे हैं। किताब पढे हुए दिग्गज कम्युनिस्ट बहुत देखे हैं। सिद्धात की चखचख का जमाना अब नहीं है। अब तो है काम। ऐक्शन। ए० बी० कहता है—प्रयोग। नेपु की हालत निहायत खराब है इसी कारण। हालाँकि पहले भी उस तरफ उसका झुकाव था। घर के कोने मे पोस्टर। लाठी के सिर पर लिपटा हुआ झडा। और मिट्टी के कुल्हड मे खून की तरह रग। दीवार पर

रंग के स्ट्रोक। तुड़े-मुड़े कागज। कागज का बदन।

नेपु का चेहरा भी कागज की तरह सफ़ेद। और [illegible]

"सूखा होकर पड़ा हूँ इससे तो मरना बहतर है।

'फ़ालतू बातें छोड़ो दवा खा लो। रात [illegible]

सोता न स्वप्न बालों की लटें बस्ती से पीछे [illegible]।

महज एक बार नेपु की आँखों में आँखें [illegible] है [illegible]

शुरू किया था। हजारों गली-कूचों में से [illegible]

चक्कर आती है। उसके पास आने से [illegible]

निश्चित रूप से फँस जायेगा। और एक [illegible]

सोता सोच भी नहीं सकती। सोता [illegible] है। [illegible]

भीगे पंखों का बोझाकार [illegible] अभी तक [illegible] हुआ है [illegible]

का चिन्ह। चिन्हित। और उस ओर [illegible]

माथा गर्म हो उठा माँग में [illegible]

क़ायम हुआ है।

नेपु की आँखों में एक पीला [illegible] है [illegible]

मुल्क की उपजातियों की बोल[illegible]

उठती है। फूले-फूले से चेहरे पर [illegible]

उभर रही है। नेपु का चेहरा [illegible]

चम रहा है, सारे चेहरे पर।

'विलियम में जाने पर [illegible]

'मिल सकता है।"

"फिर चलूँ।"

नेपु की स्फटिक [illegible]

बात कहकर बड़ी [illegible]

किसी की दुकान [illegible]

पोस्टर के कागज [illegible]

बाजार। एक [illegible]

जाओ।" और [illegible]

[illegible]

की चालू भाषा मे विल्डिग। शार्टकट अपनाया है। इतनी लम्बी बात का वक्त कहाँ है ? इस दौरान बेजुबान दीवारो के सीने मे बोल खिलाये जा सकते हैं, तेजी से ऊपर सरक कर स्प्रिग कम्पनी की चिमनी के माथे पर झडा बाँधा जा सकता है, तान कर। मजदूरो का झडा। दो पजो में दो भारी 'माल' लेकर वैन रोकी जा सकती है। दलाल को हलाल किया जा सकता है।

झुटपुटा काफी पहले गुजर गया है। सारे बदन हर बालिग की स्याही पोते बेनियाहाट्टा मे अब गाढी शाम। चलते-चलते गोरा ने एक सिगरेट जलायी। सीने के पिंजर मे धुआँ भरकर बस-स्टॉप की ओर जल्दी-जल्दी बढा। मन्टू और बूटो विल्डिग के खाली कमरे मे जमकर बैठे हैं। बदन ढीला करके शरीर को जरा सुस्ता लेने दे रहे हैं। घर अब उनके कब्जे मे है। रतजगा मीटिंग और गैरकानूनी कागज-पत्तर रखने की जगह। थोडी देर बाद ही ए० बी० लौटेगा। तरह-तरह की बातें गोरा की खोपडी मे झीगुर की तरह बोल रही हैं। फैसला। गोरा आज एक फैसला करेगा ही। इस पार या उस पार, जो भी हो। आज रात को ही। बात को पकडे रहने के लिए ही उसने धुआँ खीचा। और सीने के अन्दर लगातार धुआँ भरने से हाथ की उँगलियाँ आपसे-आप ढीली हो जाती हैं। कमर मे ताकत नही रहती। जैसे कही एक जबरदस्त कमी आ गयी है। कहीं जैसे एक सुनसान सूखा मैदान है। कहीं जैसे गरीबी की विशाल अँतडी है। गोरा को महसूस हो रहा था कि मुकु, निवारन—सभी कैसे गर्म हो रहे हैं। काफी तप रहे हैं। परेशान। अब और सभालने का वक्त नही है। इसके अलावा कहूँगा भी क्या—स्कूल मे पेटो[1] मारना ठीक है या नही या व्यक्ति हत्या सत्रासवाद । कुछ भी कहो, विद्यासागर आदमी बुरा नहीं था । इससे क्या होता है ! प्रचड बाढ मे तिनका। इससे कुछ नही होता। कुछ नहीं होता। कुछ नहीं। सोना, सोना का नाम ही काफी है। कामरेड सोना। मेरा कामरेड । शायद रुलाई की एक थिरकती हुई लहर को दाँत भीचकर रोकेंगे। इसके अलावा बहुत-सी गलतियाँ हैं, मगर इसके बाद ?

---

1 एक किस्म का देसी बम।

अभी भी जो गोरा की गरदन के पास सोना की गर्म सांस है 'गोरा दा ! तुम कम्युनिस्ट हो न। और ऐसी ही कोई बात याद आते ही गोरा का सारा बदन असहनीय जलन से बेचैन हो जाता है। क्यों ? क्यों उसने यह सब नहीं जाना ? राजनीतिक परिभाषा की केंचुल उतार कर वह क्यों सच का आविष्कार नहीं कर सका ?

बस-गुमटी के नजदीक आते ही झट से माँ की याद आ गयी। माँ का चेहरा जैसे हवा में तैरने लगा। और गोरा की खोपड़ी में घुन चलने लगा। गुमटी के पास खड़े होकर उसने दूर तक नजर बिछा दी। दोनों आँखें स्थिर हैं। विचित्र स्थिरता ! गोरा मीनू के लिए खड़ा रहा। उसने लड़की कौन-सा समाचार लाती है !

प्रतीक्षा' शब्द मानो पत्थर-सरीखा भारी है। सीने के ऊपर चढ़कर बैठ जाता है। सीने के भीतर हवा नहीं खींची जाती। अचानक [illegible] बीमार रोगी की तरह भारी भारी सा हो उठाता है। बस क [illegible] के पास से एक चोटी के अलावा कतई कुछ नहीं दिखता। [illegible] गोरा की दोनों आँखों ने उसे निगल लिया। अब [illegible] अद्भुत ठहराव है। ठहरी हुई उन आँखों की पुतलियों में [illegible] की तरह उभर रही है। [illegible] के चारों ओर दीवार है। [illegible] बदन पर टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में बेलियाघाटा की राजनीतिक [illegible]। [illegible] पीछे नारा। नारा या गाली ? और जबान से बात [illegible] इलाका घेर कर कर्फ्यू। कर्फ्यू के भीतर शिशु की [illegible]। [illegible] बेलियाघाटा का नंगा भूखा मजदूर। मजदूर के [illegible]। [illegible] के धमकों की भाषा पहने शहीद और गला-घुंटा [illegible]। [illegible] हरामी आवाज। बस। कर्फ्यू और गोली। [illegible] वारिस की तरह पेटो।

रात निरात गंदे नाले के बीच में [illegible] अभी बाम है। रात की आतंका [illegible]। [illegible] बेलियाघाटा के सीने में गुस्सा और जलन। [illegible] निचिन्त बैठे हुए नियम से रात आती है।

बस से उतरकर एक झटके में [illegible]

लाल किनारीदार साडी ऐडी पार लोट रही है। मीनू जल्दी-जल्दी चल रही है। दवी नाक के नीचे असह्य उत्तेजना और थकान का पसीना। उस ओर निगाह जाते ही झट से जैसे कुछ याद आ जाता है। प्यार की बात, मीनू का प्यार। गोरा ने देखा कि लडकी बुरी तरह पसीने से तर हो रही है। सारे वदन से पसीना नही, जैसे आँसुओ की बाढ वह रही है।

ज़रा आगे वढते ही गोरा ने मीनू को पकड लिया और अनजाने मे ही उसका हाथ मजबूती से थाम लिया—इस तरह जैसे कभी नही छोडेगा। जैसे वह एक मजबूत सहारा हो। जैसे कोई डर न हो। जैसे दाँतो से खतरा चीरते-फाडते हुए वे आगे वढ जायेंगे। हाथ के दवाव से, मजवूत दवाव से गोरा ने वहुत कुछ कहना चाहा, 'अभी मरा नही हूँ। ज़िदा हूँ, मीनू! और ज़िदा रहने का मतलब तुझसे वेहतर कौन समझता है, कुछ भी वेकार नही जायेगा। कुछ भी नहीं। तू रो नही सकेगी मीनू, किसी भी तरह नही।'

और मीनू नहीं रोयी। ज़रा भी नहीं। दाँतो से होठ दवाकर भयकर आवेग का दमन नही किया, 'हल्दी पीसते और खाना पकाते हुए ज़िन्दगी खत्म नही कर सकूँगी। मुझे काम चाहिए। काम दीजिये, गोरा दा! चौवीसो घटे।'

"मीनू!"

"कहिये।"

"तुम स्वस्थ नही हो अभी।"

"अच्छी तरह नहायी-धोयी हूँ, खाना खाया है, धीरे-धीरे इतना लम्बा रास्ता तय करके आयी हूँ, और आप कह रहे हैं ।"

"फिर भी चन्द दिन और निकल जाने दो।"

"नही। यह नहीं हो सकता।"

"सुन, पागलपन मत कर।"

"देख रही हूँ, आप ज़वरदस्ती पागल वनायेंगे। सोनादा ने आपसे कुछ नही कहा? घर छोडने की वात आज नयी नही है।"

गोरा ने देखा कि मीनू की दवी नाक के नीचे जाने कैसा एक दाग है। एक रेखा। कटकर वैठी रेखा। अस्पष्ट, मगर दृढ। निहायत ही सूक्ष्म रेखा। भीषण सूक्ष्म अनुभूति।

अनुभूति की चेतना।

अप-टाउन स्टेट बसों के कलपुर्जों के खटपट खटाक खटाक की आवाजों से घिरे व चल रहे हैं। मीनू जैसे युग की ओर दृढ़ पाँवों से चल रही है। आँधी-तूफान की सरसराती आवाज लिये आँचल उड़ रहा है। आँचल उड़ रहा है पंख की तरह। मीनू नाम की लड़की की ठुड्डी की सी एक कठोरता। आँचल के सिरे पर तूफान का झपट्टा। और एकांत रास्ता। रूखे बालों के भीतर पागलों की तरह गोरा की उँगलियाँ न जाने क्या तलाश कर रही हैं। और कोई बात नहीं है। कदम-ब-कदम वे [illegible] की ओर बढ़ चले। मीनू का हाथ उस समय भी गोरा की मुट्ठी में था। अचानक मीनू का गले को चीरता हुआ एक पतला स्वर उभरा। उस समय आप थे साथ उसे ?

"हाँ।

बेसमारा के ऊपर अब निर्मेघ आसमान। स्वच्छ आईने की तरह। आसमान में तारे। तारों का झुरमुट। झुरमुट नहीं चैन अमन। आसमा नाम की लड़की के हाथ का रूमाल। और इस आसमान के नीचे सियाह में उनका दम घुटने लगा। गोरा को लगा कि उसके कपाल की नसें फट जायेंगी। सीने का पंजर तोड़कर कितनी बातें छिटक कर बाहर आना चाहती हैं जबकि उनकी कोई भाषा कोई स्वर नहीं।

कुछ भी ख्याल नहीं रहा कि उन्होंने कब बिल्डिंग की सीढ़ी चढ़ी कब दुमंजिल पर बायें हाथ की दीवार पर शांति भवन का [illegible] है लिखावट पर अनमने भाव से एक नजर डाली कब [illegible] भई, धुएँ और धूल-भरे कमरे की दीवार के साथ कब [illegible]। मीनू दीवार पर पीठ टिका कर बैठी है। बिल्कुल माया की तरह। मगर आँखें आँखों को बंद नहीं किया है। आँखों की कोर में [illegible] रही है। [illegible] कुछ भी समझ नहीं आ पायेगा। ऐसे कोई [illegible] नहीं समझा चाहती। मीनू की ओर देखते ही बूढ़ा का कलेजा धक् हो गया। [illegible] उठी। दोनों [illegible] में आवाज [illegible]। बूढ़ा पूरा [illegible] करता है। मुस्कान।

[illegible]

एक कोने मे काफ़ी लीफलेट पडे हैं। धूल की गन्ध। वे लोग लगातार बीडी पी रहे हैं। धुएँ का एक घना परदा पडा है। ए० बी० की बेतरतीब दाढी और कौए के घोमले की तरह रूखे बिखरे बाल कि सिर जाने कैसा धुंधला-धुंधला लग रहा है। मीनू का ,चेहरा तक भी धुंधला। अचानक मीनू के मुंह खोलते ही हवा के झोंको ने धुएँ को उडा-उडा कर बात को घना कर दिया, "सिर्फ एक शेल्टर तय कर दीजिये।" मन्टू की छोटी आँखें बात सुनते ही दपदपाने लगी हैं। ए० बी० बिलकुल आँखें बन्द किये हुए था। आदत के मुताबिक बीडी फ़र्श पर घिसते हुए बहुत ही ठडी आवाज में जाने क्या कहा, "यहाँ क्यो नही रहा जायेगा ? यही, हम लोगो की तरह ?"

जाने कैसी एक रहस्यमय हँसी जागी, जबकि ए० बी० के मोटे होंठ रत्ती-भर भी नहीं हिले। सफ़ेद झलक दिखी, एक भी दाँत नजर नही आया। फिर दाढी और मूँछो के भीतर हँसी की पतली रेखा टेढी-मेढी होकर गायब हो गयी। ए० बी० के होंठो पर निकोटीन की पीली छाप। पाजामे के पांयचे मे से निकले लम्बे-से पाँव का तलुआ हिल रहा है, जिसकी नसें उभरी हुई हैं। मीनू स्फुट स्वर मे बडबडा कर बोली, "मगर मैं तो एक लडकी हूँ।"

"कामरेड निर्मला ?"

"क्या पता !"

ए० बी० की तनी हुई नाक का सिरा विचित्र ढँग से उभरा हुआ है। निर्मला का नाम उच्चारण करने के साथ-साथ जबडा सख्त हो उठा। रहस्य की टेढी हँसी अब होंठो पर नही है। कठोरता अब भी है। विचित्र सख्ती। आन्ध्र प्रदेश की निर्मला। निर्मला लडकी। निर्मला को लेकर उन्होंने गीत रचा है। वीरता की गाथा। फिर भी एक 'मगर' काँटे की तरह मीनू के सीने मे चुभ रहा है। सोना की जवानी मीनू ने सब-कुछ सुन रखा है। एकदम शुरू-शुरू की बात याद आ जाती है। और बिल्डिग के तिमजिले पर बने कमरे मे बैठी मीनू अचानक जैसे कही गायब हो जाती है। आग की चिनगारियाँ छूटी थी उस दिन। एक बूंद शीतल छाँव के लिए वे भटक-भटक कर थक गये थे।

"जानती हो, वे तुम्हे रगड सकते हैं।"

साथ-ही-साथ मीनू का छोटा हाथ उसके होंठों पर जैसे कुछ कहना रोकने के लिए व्याकुल हो उठा चुप रहो चुप।

"डर रही हो!"

"नहीं डर किस बात का!

"जानती हो वियतनाम में अमरीकी सेना ने कितनी लड़कियों की इज्जत ली है—मगर वे लोग क्या असती हो गयी हैं? पराधीन देश की लड़कियाँ आजादी के लिए लड़ने पर ही सती होती हैं। मुल्क अगर सम्पटों के कब्जे में रहे तो कैसे सती रहेंगी?"

"तुम चुप हो जाओ।"

"क्यों?"

मुझे पता है सब पता है।"

उसके बाद कड़ी धूप सिर पर लेकर कितनी दूर तक वे चले थे याद नहीं है। उन दोनों की छायाएँ तारकोल की सड़क पर लम्बी हो रही थीं—और लम्बी।

आँखों की पुतलियों में सवाल झुलाकर ए० बी० मीनू की ओर देख रहा है। अद्भुत मुस्कान अवहेलना और मजाक़ की दाढ़ी के भीतर से फिर जरा-जरा उभर रही है। धीरे-धीरे करके ए० बी० के चेहरे पर जाने कैसी टीडफ्रेड की झूठी प्रतिमा और अडिग विश्वास जाग रहा है। धुएँ का परदा चीरकर ए० बी० का चेहरा दिखायी पड़ रहा है। और एक निगाह उस ओर देख कर तरह-तरह की बातें मोरा के मन में ताक-झाँक कर रही हैं। मीनू की छोटी-सी नाक चेहरे का असहाय कोमल भाव देखते हुए मोरा ने सोचा यह अभी बहुत ही कच्ची है। क्या कामरेड निर्मला की तुलना इससे की जा सकती है? कामरेड निर्मला ने गिरिजन औरतों को संगठित किया था। और मीनू? हाँ माना पंचादि कृष्णमूर्ति की तरह सोना को भी उन्होंने क़त्ल किया है। मगर इसी से क्या मीनू निर्मला बन सकती है? अभी तक लड़की ने चोट खायी भी है, जिन्दगी नहीं देखी। भूख नहीं देखी। सिर्फ़ किताबी आदर्श। और सुनी-सुनायी बातें। और दर्द की ताक़त।

जाड़े की रात। एकदम दाँतों को बजाती हुई। बाहर पक्का भी

आवाज़। और तिमजिले के अड्डे के कान खडे हो जाते हैं। अचानक सारे कमरे मे लीफलेट उडाती हुई हवा का एक झोंका खेल गया। मन्टू के गभीर घने, गूंगे भाव को चीरते हुए। "कामरेड मीनू के लिए शेल्टर का इतज़ाम करना ही ठीक है। ऐसे-वैसे रहना उनके लिए सभव नही है।"

"हूं।"

ए० वी० के चैन की सांस लेने से पहले बूडो ने मीनू से पूछा, "गोरा दा की मां—मासी मां को छोड दिया है ?"

"नही। गोरादा को बिना पाए नही छोडेंगे, कहा है।"

"कही एक ज़बरदस्त ग़लती हो रही है—ज़बरदस्त।"

ए० वी० और नही सभाल सका, पेट की अँतडियो को उद्वेलित करती हुई बात निकलती है, "कहां ?"

"हम लोगो की बातो मे, काम मे ।"

"या कि पेटी-बुर्जुवा डर, भ्रम, दुविधा, द्वद्व ?"

कमरे मे वे लोग महज़ पांच हैं। सांसो से हवा गर्म है। चैन की कोई गुजाइश नहीं है। बूडो ने ए० वी० की बात खत्म होने के बाद सूखा थूक गटका। मन्टू की आंखें फर्श से चिपकी हैं। ए० वी० ने गले को जहां तक सभव हुआ, नर्म बनाया, "किताबो मे रटे सिद्धातो की चखचख का ज़माना अब नही है। यह सशस्त्र सग्राम का युग है ।"

अपनी बात खडी करने के लिए ए० वी० कहां-कहां से उद्धरण दे रहा था। इस दौरान गोरा भी हिम्मती हो उठा है। कितनी बातें, कितने सवाल सीने के अन्दर डेरा डाले हुए हैं। अब हुडहुड करके निकल आना चाहते हैं। जल्दबाज़ी मे बात गले मे फँस जाती है, सीना गर्म हो उठता है।

"मुल्क के नब्बे प्रतिशत लोगो को एक कतार मे न ला सकने पर क्राति नही की जा सकती।"

"सी० पी० एम० का तर्क।"

"नही। मैं सिर्फ सगठन की बात नही कर रहा हूं। मैं उस नारे की बात कर रहा हूं, जिसे उठाने पर कारखाने का मज़दूर, खेत का किसान—सभी स्वर मिलायेंगे ?"

"निवारन मज़दूर नही है ?"

हाँ मजबूर है। मगर छँटाई मजबूर। हताशाग्रस्त।

मैं कोई और बात नहीं कहना चाहता। दूसरा कोई इस तरह पार्टी की निंदा करे तो ।"

"पता है क्या होता ? मगर मैं एक फ़ैसला चाहता हूँ।"

मीनू के छोटे-से माथे पर छोटे-छोटे रूखे बाल। टेढ़े-मेढ़े बाल। माथे का गहरा काला रंग अब और नहीं दीख रहा है। उसकी पतली भौंहों के ऊपर हवा से बाल हिल रहे हैं। बालों के बीच में से लड़की बड़ी-बड़ी आँखें लिये देख रही है। जाने कैसा एक विस्मय एक डर मीनू को निगल रहा है। धीरे धीरे करके। वह यह तमाम बातें नहीं समझती। फिर भी ए॰ बी॰ की धारदार बातों की धार उसे खींच रही है। गठीली पतली तेवरियों के उतार चढ़ाव में जैसे कोई रहस्य है। गहरा रहस्य। इसका अंत कहाँ है मीनू को पता नहीं है। उसे केवल पता है डूब जाने में राहत है। डूब जाने पर और कुछ याद नहीं रहेगा। उसे पता है, लोगों के हत्यारे अभी तक जीवित हैं। और जितने दिन वे जीवित रहेंगे उतने दिन । उतने दिन जबड़े की हड्डियों को कठोर बनाकर जैसे कुछ करने की धुन बनी रहेगी। ए बी॰ की तरह। आँधी-तूफ़ान की तरह। बाढ़ की तरह। आग की लपटों की तरह।

थोड़ी देर पहले ही बहस-मुबाहिसे का एक दौर बीत चुका है। उसकी तेजी अभी तक नहीं कटी है। जैसे गर्म भाप इस छोटे कमरे में चक्कर लगा रही है। गौरा अचानक बर्फ़ीला ठंडा धैर्य लेकर बड़बड़ाया "सारे देश के इंसानों को धीरे धीरे जगाना पड़ेगा।" और ए॰ बी॰ की लम्बी परचम बात सुनते ही धनुष की तरह तनकर टेढ़ी होने लगी जैसे अभी धारदार तीर छूटेगा। साँ-साँ की आवाज़ के साथ। और सारा मुल्क थरथराता रहेगा। कुछ समय बाद जवाब की धार घटने लगी। मोटे होंठ। टेढ़ी-मेढ़ी हँसी की एक पतली रेखा दाढ़ी के अन्दर खो गयी। ए॰ बी॰ ने गौरा की बात का जवाब नहीं दिया। केवल हँसी दिखती रही। होंठों की दरार में। एक आश्चर्यजनक स्पर्धा का भाव और कठिन आस्था लेकर।

मन्टू की सुर्ख चिनगारियों की तरह जलती दो आँखें स्थिर नहीं रह सकीं "अच्छा कामरेड ए॰ बी॰ क्या आपको लगता है कि हम लोग

क्राति नही चाहते. ? कितने खतरो के बीच हम लोग एक साथ रहे हैं, घिराव तोडकर हमने रास्ते बनाये हैं, जुलूसो मे नारे लगाये हैं !"

ए० वी० की धूसर आंखो मे जान नही है, "है क्या ?"

"आपको बातचीत का तरीका बदलना चाहिए। हम लोग क्या आपके दुश्मन हैं ? पार्टी के दुश्मन ?"

"हम लोगो के कामरेड लोग जान बिछाकर रास्ता बना रहे हैं, सशस्त्र क्राति की आग की लपटो के बीच से हम लोग चल रहे हैं। बात-चीत तथा कामकाज मे 'जो पार्टी की खिलाफत करेंगे, क्या वही दुश्मन हैं, प्रतिक्रातिकारी ?" तभी गोरा के बालों मे हवा का एक झोंका फँस गया, "हम लोग प्रतिक्रातिकारी (जैसे उसमे लेने की ताकत भी नही है)! तू अपनी हद से बाहर जा रहा है—अरे, सी० पी० एम० को भी तू प्रतिक्रातिकारी नही कह सकता।"

"तुझने राजनीति सीखनी पडेगी !"

बूडो अब तक कुछ नहीं बोला था। जैसे सुन्न होकर बैठा हो। दियासलाई की जली हुई एक तीली से फ़र्श पर कुछ लिखते हुए उसने कहा, "यह आलोचना का तरीका नही है।"

मीनू ने भी सीने मे सांस भरकर कहा, "हां गोरादा, अगर तुम लोग इस तरह पागलो की-सी बातें करोगे तो फिर ।"

मीनू अपनी बात खत्म नही कर सकी, जैसे किसी तीखी वेदना ने सँडसी से लडकी का गला दबा दिया था। मीनू की आंखो से टपकता हुआ पानी। पानी की बूंदें। और अचानक माथा गरम होने से गोरा न जाने कैसा उदास-उदास हो गया है। कुहरा-कुहरा। उनके चेहरो की रेखाएँ अब दिखायी नही दे रही। मीनू की अस्वाभाविक रूप से पतली रुलाई के अनगिनत फूल गले मे खिलने लगे ! "तुम लोग इसानो को राह दिखाओगे गूंगे इसानो की जबानो पर बोल खिलाओगे—एक साथ लडाई का सपना, इसान की तरह जीने का सपना। धुन मे पागल होकर यह लोग जहरीले झाड-झखाड उखाड़ेंगे। जल्लादो के देश को तहस-नहस कर देंगे। झडा गाडकर कहेंगे, यह मुल्क हमारा है, यहां खूनियो के लिए एक इच भी जगह

नहीं है । और तुम्हीं लोग अगर आपस में एक-दूसरे की छीछालेदर करो ।

मीनू का चेहरा लाल हो उठा—कितना शर्म ताड़ने की शर्म से और कितना उत्तेजना से किस पता ! मगर बात कहते समय उसके सीने पर जैसे बादल फूटा जा रहा था। फिर भी बातें उसे कहनी ही पड़ेंगी। बिना कहे त्राण नहीं है। और सीना खाली करके सब-कुछ उगलकर लड़की की खाली आँखें जाने किस उम्मीद से गोरा के चेहरे पर टिकी हुई थीं। एक विचित्र तनाव में पड़कर गोरा बेचैन हो रहा था मगर यह छीछालेदर नहीं है तू समझ नहीं पा रही है मीनू !

'नहीं इसकी जरूरत नहीं है।

'तुम महज भावनाओं के आवेग पर बल्ले बाज़ रही हो।"

'और तुम लोग ?

'क्या ? हम लोग क्या ?"

'तुम लोग शहीद कामरेड का शव सामने रखकर सोचने बैठ हो कि किस ओर जाना है ! तुम लोग इंसान हो ?"

गोरा चुप हो गया कुछ न बोल सका। बोलने से भला क्या होगा ? मीनू तक यह सोच रही है कि गोरा भयाक्रांत है। इसीलिए शुतुरमुर्ग की तरह मुँह छिपा रहा है। बार-बार कलेजा घुमड़ने लगता है। अनेक बार लगता है पागल की तरह सब-कुछ तहस-नहस कर डाले और बता दे—देख देख मैं डरा नहीं हूँ। एक साथ दो-तीन एक्शन कर डाले। मोमबत्ती की मरियल रोशनी धूप की तीखी गंध और इसकी हवा में लीफलेटों के उड़ने की सरसर में गोरा जैसे कहीं खोता जा रहा है। अपने को बहुत ही अकेला महसूस कर रहा है। ए बी का तम्बोतरा चेहरा मीनू की जलती हुई अंगार-सी आँखें और मन्टू के माथे पर बटे का दाग—सबको पीछे छोड़ जाने कहाँ भागे बढ़ा जा रहा है। बेहोशी से। गोरा का माथा झुक गया है और एक असहाय वेदना में होंठ थरथरा रहे हैं "मीनू मीनू मीनू तू गलत समझ रही है बहन ।

ए बी० का मुँह बस खुला ही था जाने कौन-सी खतरनाक बात कहने जा रहा था कि ठीक उसी समय मिवारल और बुक के बंधों के धमक

से दरवाजा खुला। साथ ही हवा का झोंका कमरे मे धूल का झक्कड लाया। बाहर आँधी और तूफ़ान की खतरनाक होड जारी थी। लगातार सों-सों के शोर से घिरा ए० बी० का गभीर स्वर, "कल दोपहर सभी रहेंगे। उस समय ही कामरेड गोरा को जो कहना हो, कहेंगे। तभी एक पक्का निर्णय लिया जायेगा। यदि तब हम लोगो को अलग होना पडा तो वही होगा।"

सुकु के पाजामे पर खून के छींटे। चेहरा साधु-सन्तो की तरह। जाने कैसा विचित्र स्थिर चेहरा! आँख की जमीन बिलकुल सफेद। और तृप्ति। भरपूर तृप्ति। निवारन पहले से अधिक तना-तना-सा लग रहा है। सुकु ने पाजामा उतारते-उतारते अचानक गाना शुरू किया। आप-ही-आप—

'पैसा होये तें मरे भी पडी यह तो जाने सभी भाई।'

सुकु ने पाजामा छोड तहमत गठियाया। और निवारन इस बीच सुनाये जा रहा है बदले की उत्तेजक कहानी। पेट मे छुरी घुसेडने से पहले कान्स्टेबल की जीने की तीव्र लालसा कैसी तुडमुड गयी थी। निवारन, सुकु और ए० बी० की बातो से, व्याख्या करती उँगलियो से, मीनू ठीक होती जा रही थी। रह-रहकर उसके चेहरे पर एक चमक खिल रही थी। नाक फूल रही थी। लडकी के सीने मे उथल-पुथल हो रही है।

बात कहते ही सुकु के गोलमटोल चेहरे पर प्रशात हँसी उभरी। उसके चेहरे पर एक गहरी शाति थी, जैसे इसके बाद मरने पर भी कोई शिकवा-शिकायत नही होगी। मीनू के गले मे दुलार, "पेट मे कुछ गया है?"

"नही।"

"पहले कुछ खा आओ।"

मीनू अब जननी की तरह है।

फिर वे लापरवाही से हँसने लगे। तब तो जनम-भर का खाना हो जायेगा। बेलेघाटा की मिट्टी सूँघ-सूँघकर तलाश रहे हैं।

गोरा की जीभ जैसे गिर गयी है। जबान पर एक भी शब्द नही है। इन लडको को छोडकर वह कहाँ जायेगा? किस जहन्नुम में? मन्टू लगातार उँगलियाँ चटखा रहा है। और निवारन बूडो को कोंच रहा है—क्यों, इस तरह और कितने दिन चलेगा?

बात दगा दे गयी। खोपडी के भीतर कच्ची आग। होंठो पर एक

बात भागी। सिर झटकाकर मोरा संभला सोना का बदला इस तरह नहीं लिया जा सकता। और सोना तो बदले के लिए नहीं लड़ा वह लड़ा था सच्ची आजादी के लिए। तुम लोग असल में बरदाश्त नहीं कर पा रहे हो इसलिए।

क्यों हजम क्यों करें? हम मोम भूत हैं!

मुकु के एकदम शांत चेहरे पर अचानक छुरी की धार का-सा तीखा पन उभरा अब तक तुमसे कुछ नहीं कहा अब और बरदाश्त नहीं करूँगा। लड़ाई और जंग के भीतर हम साथ बस रहे हैं। उसमें तुम घुन लगाना चाहते हो?

मीनू जाने क्या कहकर सबको ठंडा करना चाह रही थी! समझौता। उनके दोनों में अभी विचित्र धार है। प्राण-जान मिट्टी म मिलाकर स्नेह ममता जैसे तमाम मोह दूर फेंककर बदले में नकद हिसाब चुकाने वाल — य सभी निष्ठुर तपस्वी हैं।

अद्धा ईंट पर टिकी मोमबत्ती का टुकड़ा। अधजला गला हुआ। मोमबत्ती गल-गलकर कैसी इमे-सी बन गयी है। रह रहकर पलीता सुलगन की सरसराहट-सी हो रही है। फट् फट फट्। और मोम पानी सरीखा गल रहा है। थोड़ी दर पहले की वह गरमी अब नहीं है। अब उतनी आँच भी नहीं है। ए० डी० ने जेब से एक नक्शा निकालकर फ़र्श पर बिछा दिया। मेदिनीपुर ज़िले के शानदार नक्शे में एक जगह पर मोम की अस्पष्ट रोशनी छिटक कर दपदप कर उठी जैसे आग लगी है। निवारन ही मोमबत्ती पकड़ था। निवारन की हथियार की तरह खड़ी नाक अभी भी जल रही है। नक्शे पर दो-तीन चेहरे झुक गये हैं। ए० डी० की पतली पतली उँगलियाँ नक्शे की पतली रेखा छूकर आगे बढ़ रही हैं। और चाँदी क पानी की तरह गलता मोम गिरकर नक्शे के सीन पर मोतियों जैसे गोल दाग़ उभार रहा है।

यह है खड़गपुर स्टेशन बस रूट और मेदिनीपुर टाउन इधर जगल है बिहार क भीतर स होता हुआ एकदम श्रीकाकुलम तक चला गया है सिहाड़ा।

सिहाड़ा मुकु के पूरे चेहरे पर कांति फट पड़ी। सिहाड़ा निवारन

की टीली उँगलियाँ बँधकर मजबूत हाथ की मुट्ठी बन जायेंगी। लिहाजा ए० बी० की भूरी दाढी के पतले उदास जंगल मे रहस्य की हँसी। आधार रूप मे एक सुर्ख इलाके की चाह। इच्छा। उतावलापन। जाने किस बात की जल्दबाजी है कि उन्हे जला-जलाकर सीक-कबाब बना रहा है।

ए० बी० की बातो के बीच ही मोमबत्ती के पलीते मे फिर आवाज हुई। फर-फर करके एक पेट फटा तिलचट्टा उडने की कोशिश करके नक्शे पर छिटक पडा। और आवाज हुई। मछली के पेट फटने की तरह एक बेढँगी आवाज। ए० बी० की दोनो आँखें जाने कैसी धूसर दिख रही हैं। चेहरा दिन-ब-दिन कागज-सा होता जा रहा है। मोमबत्ती की मद्धिम रोशनी मे ए० बी० का चेहरा रक्त-शून्य लग रहा है। जैसे शरीर को निचोडकर सारा खून निकाल लिया गया है। खाली फोक बचा है। भीगे हुए कपडे के गोले की तरह दोनो आँखो मे दुर्दान्त व्याकुलता। "क्राति का काम द्रुततर ।" और आगे बात खत्म नही कर पाया।

अँधेरा मुँह खोलकर सारे इलाके को निगलकर बैठा है। नाले के किनारे मरी गाय के फूले पेट की तरह बेलियाहाट्टा का आसमान।

बेलियाहाट्टा के आकाश मे आज एक भी तारा नही है। गोरा रेलिंग पर हाथ रखकर खडा हुआ था। उनकी बातो के अश उडकर कानो मे आ रहे हैं, जबकि, अधकार का सागर ढकेलकर उसकी थकी हुई आँखें दो तैराको की तरह जाने किस चीज की तलाश कर रही हैं। काफ़ी साफ-साफ समझ मे आ रहा है कि अब वाकई अलग होना पडेगा। रातो साथ-साथ जागकर, पुलिस की गोलियो के सामने कधे से कधा मिलाकर, वालिग की स्याही सारे बदन मे लिपटाकर, लगातार सिगरेटें पीकर, इनक़लाब का नारा लगाकर इतने दिनो मे जिस सम्पर्क की जडो ने सबो को बाँधा था, कल दोपहर को वे सब उखाड देनी पडेंगी। सुकु, निवारन, ए० बी०—इन सबको छोडकर गोरा कैसे बचेगा? कैसे मुँह हिलायेगा? पाँव चलायेगा? दिमाग़ चलायेगा? एक जमाने से वह अकेला जीना भूल गया है। और इस ग़लत गली मे से चलते हुए वे लोग भी भला कहाँ पहुँचेंगे?

सोचते सोचते गोरा जैसे कही खो गया। अचानक सोना का चेहरा आँखो के सामने छोटे बल्ब की तरह, खतरे के सकेत की तरह जलने-बुझने

गया। मगर वह किस तरह आगे बढ़ेगा? उफ़ सोमा तू अगर जिन्दा रहता! अगर वह समझ पाता! माथे की दोनों नसें फूल रही थीं। फूल-फूलकर गाँठ-सी बन जाती हैं। यंत्रणा और तीखी होती है। एक तीखी यंत्रणा। किसे पता है कि इन दिनों क्यों माथे की दोनों ओर गाँठें-सी फूलने लगती हैं! सिर की नसों में एक दुर्दमनीय खिंचाव। झटकों में खिंचाव जैसे कोई बेरहमी से समूचे माथे को पकड़कर खींचने लगता है—यह क्या सोमा है?

साँप जिस तरह मेंढक पकड़ते हैं। ठंडी आँखों से घात लगाकर बैठे रहते हैं उसके बाद झट से खोपड़ी पर मुँह मारकर निगल जाते हैं। ज़रा सी भी आवाज़ नहीं होती। बस ख़ात्मा। भयंकर रात में धूर्त शिकारी की तरह दबे पाँव आकर अचानक बेलियाघाटा की गरदन पकड़ ली है झट से निगल लिया है उसे। सरल सीधा बेलियाघाटा।

बिल्डिंग के एकांत खाली कमरे में एक इंसान बेचैन है। अस्थिर होकर ए० बी० चहलक़दमी कर रहा है मीनू को रखने लायक़ एक शेल्टर के बारे में सोचते-सोचते। ए० बी० के बेतरतीब बाल और उजाड़ दाढ़ी में अरण्य गंध। जाने कैसा एक जंगलीपन है! बाल पक गये हैं गहरे गड्ढों में बूढ़ेपन की हल्की छाप। सुकु के साथ तारा की बहस-भरी नुक्ताचीनी ने स्पर्श में एक जलन पैदा कर दी है। तर्क से नुक्ताचीनी से अब फ़ायदा नहीं है। तर्क से ढेर जिया इंसान। इंसान की समझ। भारतवर्ष की बदरंग राजनीति के कुर्सीबाज़ और मायावियों की हू के दबाव में निस्वार्थ समझ दब मारी है। सुकु और निखारन बात-बात पर उसी समझ की बात कहते हैं। काकद्वीप तलंगाना बिरसा भगवान—यही है इस देश का इतिहास। आज़ादी का इतिहास। जिस आज़ादी के लिए व लोग दाँतों को भींचकर लगातार लड़ रहे हैं। सच्ची आज़ादी। सुकु की नसें की नसें उसी के आह्वान में काँपती हैं

बरस-बरस पर विदेशी दुश्मन सम्पदा लूट ले जाता है
माँ के आँसू अपने दामन से साथी—नया ज़माना लाना है
छीनकर आज़ादी लानी है—लानी है—लानी है!

बदन फिर गर्म हो उठता है। उधर बिल्डिंग के चारों ओर षड्यंत्र की तरह अँधेरा चुपचाप घात लगाये बैठा है। कोई इंसानी आवाज़ नहीं

घर्र-घर्र, घटांग-घटांग की आवाज़ें भी नही हैं। कोई आवाज़ नही है। विचित्र सन्नाटा। खां-खां करता हुआ वीराना। एक विचित्र अंत। हू-हू करती हुई हवा। सीने में खिंचाव, "मीनू, तू पागलपन मत कर वहन, इस तरह नही होता पहले तू समझ तू जान ।"

मीनू की दोनो आँखें कही दूर अटकी हुई है। बहुत-से हाथो की पहुँच से परे, कहीं बहुत दूर। सारे चेहरे पर उत्सर्ग की छाप। लडकी के चेहरे पर आश्चर्यजनक प्रसन्नता।

सुकु और निवारन पेट मे जलन के कारण खतरा उठाकर बाहर चले गये हैं। बूडो और मन्टू के शरीर नीद की बेहोशी से लुढक गये हैं। और गोरा निहायत ही स्नेह के साथ मीनू को एक बात समझाने के फेर मे ठोकर खा रहा है, कठोर पत्थर पर सिर पटक रहा है। मीनू की ओर झुककर समझा रहा है। और अचानक गोरा ने देखा, मीनू के दबे होठो पर शोक और दुख को परे ठेलती हुई एक मुसकराहट। गभीर रहस्य की हँसी, "अब वह नहीं होने का गोरादा, मेरे सामने अब एक ही रास्ता है।"

ए० बी० का हाथ क्षणजीवी पछी के पख की तरह फैला और वह खुश हो उठा, "ठीक है, चल।" यानी एक शेल्टर तय कर लिया है। मीनू तो चलने के लिए तैयार खडी थी। सिर्फ एक बार गोरा की ओर देखा उसने। साफ स्वच्छ हँसी, "चलूं।" और एक कटु आवाज़ करते हुए दरवाज़ा खुल गया।

मन्टू और बूडो दोनो नीद से कातर है। बूडो तो इस मामले मे एकदम सधा हुआ है। जहाँ-वहाँ पसरने की गुंजाइश पाते ही पसर जाता है। और कोई बात नहीं हुई। रोशनी के नाम पर एक ईंट पर जली हुई मोमबत्ती बहुत पहले ही खत्म हो चुकी है। फिर भी बचाव नही है। मोम को डली बनाकर उसी में पलीता किसी तरह खोस दिया गया है। गोरा ने फूंक मारकर मोमबत्ती बुझा दी। रोशनी बरदाश्त नही हो रही है। साथ लोफनेट के बदन पर चूहो की उछल-कूद शुरू हुई। खस्-खस की आवाज़ उठ रही है। इनके अलावा सन्नाटा। कोई आवाज़ नही
एक आदमी के साँस लेने की आवाज़। रात की थाह नही है।
बज रहा है। लडखडाते शराबी ने प्रेम-गीत गाया। प

गीत गा उठा सड़क पर चलता कोई शराबी ।

निवारन और सुकु धीरे-धीरे सीटी बजाते हुए लौट रहे हैं। सीटी बजाते हुए कोई गाना गा रहे हैं वे। सुकु की हवाई कमीज़ का कोना झंडे की तरह उड़ रहा है। पेट को ठंडा कर आया है। मिर्जाबगान बस्ती के सस्ते सीक-कबाब और रोटी से। सुकु रेलिंग पकड़कर गाना गा रहा है। गुनगुनाकर। जबकि थोड़ी देर पहले वे जाल में फँसने वाले थे। बेपवाले जाल में। हँसते-हँसते रस लेते हुए निवारन ने कहा 'ज़रा ढीले हो गये थे साला ...कैसे आँखों से निगल रहा था।" कहकर वह हँसा। कितना मज़ा आ रहा है उसे इस बात में ! और निवारन की हँसी की आवाज़ ए० बी० की आँखों में खिंचाव पैदा कर रही है, "बाहर क्यों निकले थे ?" अचानक जैसे दिल का खिंचाव ए० बी० के गले में उतर आया था। धीमे स्वर में बड़बड़ा रहा है "कल ही तुम लोग इस इलाके को छोड़ जाओगे। यहाँ से परे रहो कुछ दिनों तक। उसके बाद मेदिनीपुर के कन्टैक्ट में चल जाओगे।"

सुकु का छोटा-सा गोल सिर बच्चों की तरह हिल रहा था 'न-न-ना इतनी जल्दी नहीं इधर का काम ।'

'तुम्हें सोचना नहीं पड़ेगा।"

"न-न-ना।

'फ़ालतू पकड़ा जायेगा।

'इतना आसान नहीं है।"

'न-न-ना तुम्हें जाना पड़ेगा।'

ए० बी० की दोनों आँखें बाहर निकलने को हो रही थी।

और सुकु का चेहरा ठहरा हुआ और शांत 'कम्युनिस्टों की असली परीक्षा क्या है ?"

ए० बी० अपने हाथों से गढ़े सुकु को पहचान नहीं पा रहा है। जीभ बेवकूफ़ों की तरह बाहर झाँक गयी—क्या ! क्या !

कत्लगाह। कारागार। गोलियों की बौछार।

ए० बी० की जीभ सुन्न-सी लूले की तरह झूल रही है।

और नुकु जीभ की नोक पर शब्दो को नचा रहा था, "क़त्लगाह। कारागार। गोलियो की बौछार।"

नुकु अब पहचानने मे नही आता। उनके शरीर मे अब शहीद-भाव है। होठो ने हलके मे गाना शुरू किया, "पैदा होये तें मरे भी पड़ी रे ।"

'अनगिनत ज़ख्मों के फूल उगाकर छन्द गूँथने की ख्वाहिश'

भादों के आख़िरी दिन।

सड़ी गरमी असहनीय हो रही है। उस बमभोंदू गरमी को चीर कर सुई की तरह तीखी हवा का झोंका हू-हू करके दौड़ आया। झील के ठंडे पानी के सीने से काई और सेंवार की गन्ध लेकर। ए० बी० के हाथों के रोम काँटे की तरह खड़े हो गये सरसराते हुए। मीनू को पास के एक होस्टल में रात भर के लिए रख आया था। किसी तरह से रात गुज़रने के बाद कोई इंतज़ाम किया जायेगा। बस रख आया है। दो घंटे बीतते-न बीतते ही शान्ता हाज़िर हुई। मीनू के होस्टल के बगल वाले मकान में ही छापा पड़ा है। तेरह-चौदह साल के एक लड़के को उठाकर ले गये हैं। डी० बी० (वे लोग अब उसे 'देशव्रती'[1] नहीं कहते) और कागज़ात मिले हैं। समाचार देते समय शान्ता के चेहरे पर ए० बी० ने विरक्ति की रेखा देखी थी "तुम लोग कैसे हो दादा कोई बातचीत नहीं झट से लड़की को रखकर चले आये।

शान्ता के गले में जाने कैसा तीखापन है! जवाब न देकर ए० बी० ने उसके चेहरे की ओर देखने-समझने की कोशिश की। सड़क पर उतरकर शान्ता सिर झुका कर चलने लगी। चलते चलते फुसफुसाकर कहा अगर एरेस्ट हो जाती—फिर कानू के भैया बुरी तरह घबरा गये हैं। देशव्रती इश्तहार, मार्क्स की पतली-पतली किताबें—सब अभी बैठकर जला रहे हैं। और मुझे बुलाया तो जाकर देखती हूँ कि दोनों आँखें धुएँ से शराबी की

---

1 मार्क्सवादी-लेनिनवादी साम्यवादी पार्टी का मुखपत्र।

तरह लाल हो गयी हैं और डर ने हाथ-पाँव सिकुड़ गये हैं—अशोक से कहकर इसे जल्दी हटाओ यहाँ से।"

चलते-चलते ए० वी० ने तेजी से कुछ सोचा। फिर एक और शेल्टर में लड़की के लिए रात गुजारने का इंतजाम करके लौटा। लौटते समय ही चिट्ठी मिली। छोटा-सा एक कागज। चार तहों में तहाया हुआ। खारे पसीने का जाने कैसा एक पीला-सा निशान। भोला ने चिट्ठी दी थी। मोड़ पर चाय की दूकान अभी पूरी तरह से खाली है। भाटे की तरह चूल्हे की आग उतार पर है। लाल-सी एक म्लान आभा सुलग रही है। कोयले जल-जलकर सफ़ेद हो गये हैं। राख। ए० वी० ने दूकान में बैठकर ही चिट्ठी पढ़ डाली

प्रिय कामरेड,

एक जरूरी काम से कलकत्ते आना पड़ा। आकर सब सुना। तुम लोगों से बातें करने के लिए दिल मचल रहा है। इसके अलावा और भी कुछ गंभीर बातें करनी हैं, कल दोपहर को आऊँगा। रहना।

क्रांतिकारी अभिनंदन के साथ—

नारान दा

चिट्ठी पढ़कर, उसका गोला बनाकर आग के पेट में फेंक दिया। गोल कागज जलने लगा। और ए० वी० ठहरी निगाह से उसे देखता रहा। भूमिगत जिन्दगी की ट्रेनिंग, दस्तावेज पास में रखने से काम नहीं चलेगा। कब फँस जायें, कोई ठिकाना नहीं। पहले कागज काला पड़ा और फिर भक्क से जल उठा। बस खत्म।

मीनू को शेल्टर में पहुँचाकर लौटते समय रास्ते में जाने कैसी एक गंध मिली थी। कटार की तरह तनी ए० वी० की नाक को अचानक गंध मिली। बू—पुलिस की बू। दाँत पीसने, पहियों के घिसटने की-सी कोई आवाज सुनी थी शायद। चारों ओर जीभ उखाड़ फेंकने वाला लूला आतंक। पुलिस-वैन की स्याही जैसी गहरी रात। मरे हुए कछुए के खोल की तरह तारकोल का रास्ता नितांत खाली है। एकदम साँ-साँ कर रहा है। कर्फ्यू की गंध। कर्फ्यू में ही रास्ते में बच-बचकर, छिप-छिपकर ए० वी० के साथ वह एक दूसरे शेल्टर में चली गयी। एक बार भी घुटने नहीं

काँपे। सारे रास्ते में जबान से एक भी शब्द नहीं निकला। पनीली आँखों की जोड़ी तेलिहा स्याही की छाप लिये बिलकुल सूखी है। ए० बी० कह रहा था सावधानी से रात गुजारना। मीनू न पलकें तक नहीं मूँदीं। इस लड़की का सब-कुछ विचित्र है। इकहरी चोटी की यह मीनू अब कितनी तनी हुई है। कठोर। जैसे किसी न भीतर से खींच रखा है। उसके पास मला आँखों से आँसू गिराने का वक्त है! यह असल आँत क पानी से मांत होने वाली नहीं।

ए० बी० का मन भी जाने क्या टपकने लगा मोम की बूँदों की तरह।

बिल्डिंग के कमरे में आकर एकदम गूँगा बन गया। मन्टू और बूढ़ो बेहोश होकर सो रहे हैं। निकारन बैठे-बैठे करवटें बदल रहा है। गुड्डु के होंठों पर फुलझड़ी जैसा गाना अब नहीं है। यूँ ही औंधा लेटा हुआ है। और ए० बी० खिड़की क पास चुपचाप बैठा है। कोमा आँखें रोशन करके। एक पतला-सा धागा भी निगाह से बचकर नहीं निकलने देता। सिर पर गोलियों का जोखिम लिये बिल्डिंग का कमरा चुप है। बीच-बीच में खाली साँसों का लम्बा सिलसिला। और तिलचट्टे के पंखों की फर्र-फर्र ध्वनि।

स्ट्रीट लाइट की हल्की पतली रोशनी की लकीर गिर रही है ए० बी० के लम्बोतरे चेहरे पर ठुड्डी पर। बेतरतीब दाढ़ी के भीतर से रोशनी का जाल। पारा दूर से मारा ए० बी० को देख रहा था। ए० बी० के भीतर मन तक देख पाने के लिए उसकी आँखें पूरी तरह से जल रही हैं। आँख की पुतलियाँ कड़ी हो गयी हैं। कैसा अलग-अलग-सा लगता है! एकदम अलग इंसान। खिड़की के पास ए० बी० की घुटना मोड़ कर बैठी छाया बालों से भरा माथा। पारा ने उसे इस तरह तटस्थ भाव से पहले कभी नहीं देखा। उसका वह तरोताजा भाव कहाँ है? महज बेतरतीब बालों की दाढ़ी दाढ़ी के बीच में मौत का-सा खिंचाव। लापरवाही से भरा हुठ। फिर भी उस म्लान मीली रोशनी में ए० बी० बहुत शांत मग्न रहा है। ऐसा शांत कि जैसे जानता ही न हो कि तकलीफ कैसी होती है। ए० बी० का घर कर मारा प्रसन्न बहाने लगता है। कितनी बातें मन में घुमड़ी रहती हैं वह समझ नहीं पा रहा है इसीलिए—डरता—डरता। और—

ए० वी० की छाया मे उसके कंठ की दोनो हड्डियाँ जाने कैसी मुड़ी हुई दिख रही हैं।

"सिगरेट पीएगा ?"

झखाड वालों का सिर जरा हिल उठा, "दे।"

"एक ही जला रहा हूँ। बाहर रोशनी की झलक छिटक जाने पर कोई बचाव नहीं है। कहाँ कोई घात लगाकर बैठा हो, किसे पता है ! साँप की पूँछ की तरह। एक बार पाँव-भर लगने की जरूरत है।" दो-चार कश खींचकर गोरा ने सिगरेट आगे बढ़ायी, "ले।"

सीने मे साँस अटक जाने से निवारन नींद मे गों-गों कर उठा। सुकु जगा ही था। उसने उसे कंधा पकड़कर हिलाया, "एई क्या हुआ !" गले मे लार लिये निवारन ने जाने क्या कहते हुए होंठ खोले, ".. सुकु .साला मार डाल .आ !" और आगे नहीं बोल सका। जीभ भारी-भारी-सी हो उठी। सिर हाथ पर टिका कर फिर सो गया। गोरा की बदकिस्मती कि उसकी आँखों मे नींद नहीं है। सुकु की भी। यों ही पड़ा हुआ है। नींद नहीं आ रही है। आजकल झट से नींद नहीं आती। निवारन की गले की आवाज ने ए० वी० कैसा घबरा गया है ! निवारन मानो डर मे पस्त होता जा रहा था। किस बात का डर ? निवारन को तो कोई डर-वर नहीं है। गोरा के बारे मे आजकल कुछ पता नहीं चलता। अचानक वह धड़धड़ाकर क्यों उठ बैठा ? निवारन क्या कोई सपना देख रहा था ? कोई खतरनाक सपना ? या मन के भीतर लड़ाई के महाकाव्य के तमाम अशेष अध्यायों का पार पाने मे ही डूबा जा रहा था ? जगी हालत मे संशय के जिस कीड़े को लगातार दबाये रखता है, नींद में उसी ने हमला किया है।

ए० वी० की आँखों मे क्या एक सवाल झूल आया है ? खिड़की की छड़ पकड़कर दोनों आँखें रास्ते पर फेंक दी हैं। खट की भी आवाज सीने की हड्डी चूर-चूर करके ए० वी० को सीधा कर देती है। एकदम तान देती है। बूढ़ों की नींद मे खलल पड़ रहा है। बड़े-बड़े मच्छरों के डंक, ट्रेन के पहियों की आवाज, लपकती आग-सी जिन्दगी के जलने से भी नींद नहीं आती। नाक के छोर को लाल झलक देते हुए ए० वी० ने सिगरेट का आखिरी कश खींचा, "शान्ता आज कैसी चुप मार गयी थी।"

चमगादड़ की तरह अँधेरा घूम रहा है। ए० डी० की लम्बी साँस जैसे वह कहीं खो गया है। शायद सोच रहा है कि कोई बात उसका जवाब। और जवाब के लिए उसने वह बात थोड़े ही कही थी। शायद अचानक बहन का चेहरा याद आ गया या नपु की हानी। शान्ता के तम तमाते हुए चेहरे पर नेपु का भविष्य। बीच-बीच में ऐसा होता है अचानक कोई बात याद आ जाती है। इस स्नेहिल ममतामय आदमी के बदन पर पीठ पर हवा से पहले दौड़कर हाथ फेर जाने की एक चाह जगती है। इस सर्वनाशी चाह की वजह से ही उन्होंने दो एक आदमियों का रूप से उठा लिया है। सिर्फ़ पुलिस-सेना ही नहीं है उनके एजेंट मकड़े के जाल की तरह बिखरे हुए हैं। वरना कोई सोच सकता था कि कैपिटल स्टार का सदैव मुखबिर है? असल में विमला कांग्रेसी है। गोरा सोच रहा था कि शायद उसे बहुत सी बात अचानक याद आ गयी है, इसीलिए ए० डी० की बड़ी-बड़ी आँखों की ओर देखकर उसने एकाएक पूछा "नपु के लिए?"

"शान्ता इतनी चुप्पा है कि नेपु के लिए होने पर मुझे पता नहीं चलता।"

"फिर?"

"ठीक आस्था रख नहीं पा रही है मुरारी के मारे जाने के बाद से ही। बिस्टिम की औरतों को लेकर उस दिन एक जुलूस निकालने की कोशिश की थी उसने। मैंने मना किया। झड़प, बहस भी हुई उस दिन ही पता लगा। जुलूस हालांकि जुलूस नहीं निकला। और ।"

भोर की ठंडी हवा से कमरा बर्फ़-सा बना हुआ है। अंधकार फीका पड़ रहा है। बूँद-बूँद जमा हुआ अँधेरा गलता जा रहा है। निबारन रात भर कराहकर अब मुर्दे की तरह सो रहा है। कोई आवाज़ नहीं। निबारन की जली हुई लकड़ी-सा चेहरा अब विचित्र कोमलता लिये है। सोते हुए आदमी का चेहरा कैसा बच्चों का-सा हो जाता है। सरल असहाय। मानो कुछ नहीं जानता। मानो बूढ़ा है, कमज़ोर है। निबारन के बेजान जबड़े की काट देख गोरा के मन में ऐसी बहुत बातें आयीं। असल में गोरा को लगता रहा है कि सब-कुछ के अन्दर वह न जाने क्या कुछ

खोजता रहा है। वह जैसे उनके बीच रहकर भी अलग है। अलग। छान-बीन कर देखने की जाने कैसी एक आदत बन गयी है। जैसे मीनू को देख लगा था 'वह शायद सोना के लिए ही अपना जीवन समर्पण कर बैठी है। प्यार को समर्पित।' क्रांति के लिए समर्पित प्राणों की भी कमी नहीं है। मगर मीनू ठीक वह नहीं है, मीनू ठीक सोना नहीं है। फलस्वरूप उसने जलते हुए बहुत कुछ चटपट निगल लिया है। अभी वह कच्ची आग हजम कर सकती है। इस शर्मीली, एक चोटी झुलाती लड़की को गोरा आज से नहीं जानता। वही मीनू, वही काली आंखों की पुतलियां। आज बहुत हिम्मत से अनजान लोगों के घर रात बिता रही है। यही मीनू उस दिन सुकान्त के जन्म-दिन पर 'बोधन' कविता का पाठ करने के लिए किसी भी तरह राजी नहीं हुई थी, जबकि वह कितना सुन्दर कविता-पाठ करती थी। अच्छा, क्या अब भी उसके गले मे आवेग उभरता है। आज शायद अनजान लोगों के घर मे परम आत्मीय की तरह लेटे हुए भी मीनू को नींद नहीं आ रही है। यह यन्त्रणा क्या क्रांति के लिए है? अपने एकांत मे एक सीना-तोड आर्तनाद। मगर वह आदमी जिसके लिए उसके सीने मे तूष की आग जल रही है, वह तो क्रांति मे शरीक है। उसके प्रति लगाव रखना भी क्रांति के लिए लगाव है। फिर भी कहीं एक पेचीदा भँवर है। सब-कुछ जैसे कहीं उलझता जा रहा है।

खिड़की के पास खिसककर ए० बी० फ़र्श पर फूंक मारकर लेट गया। एक हाथ आड़ा माथे पर है। और एक सुकु की पीठ पर। उंगलियों की पोरों से स्नेह की बाढ़ उतरी, "मिनती भाभी आयी थीं। विजयदा भी।"

सुकु चट से उठ बैठा, "कब ?"

ए० बी० की शांत आवाज़, "शाम के वक्त, मुझसे भेंट नहीं हुई। भोला की दूकान मे एक चिट्ठी रख गया था। नारानदा की चिट्ठी।"

मिनती भाभी आयी थीं। इसका मतलब है ह्यूज रोड की खबर। नाटे अली की बात। पुलिस के जुल्म की रिपोर्ट। और किसे खींच ले गये, ऐसी बहुत-सी बातें। इन्हीं खबरों के लिए वे लोग साँस रोके बैठे हैं। सुकु की विधवा माँ। अचानक उनकी माँ की बात मन मे कौंध गयी। चट

से बात कपाल के बीच चढ़ आयी । माँ । जन्म से एक रात के लिए भी लड़का माँ से अलग नहीं सोया। बीस साल का जवान लड़का सुकु।

'मारानदा आये हैं।

गोरा और स्थिर नहीं रह सका कब ?

'कल ही शायद।

रात की काली छाया के तले साथ-साथ रहकर भी गोरा आज किसी भी तरह से ए० बी० को पहचान नहीं पा रहा है। यह चार साल वाली बात अब एकदम नहीं है। जाने कैसा पस्त-सा हो गया है। कैसा सीला सा गया है! काठी दुखी-दुखी-सा लग रहा है। विचित्र रूप से ठंडा। मांवा के बारे में बताते समय ही ऐसा लगा था। शायद ए० बी० के मन के अन्दर भी एक बवंडर गरज रहा है। पूछताछ की छुरी से एक के बाद एक एकतान करता चल रहा है। भीतर-ही भीतर खून रिस रहा है।

मारानदा के आने की खबर देते समय ही ए० बी० की आँख में संशय का रेत का एक कण घुसा था। अपने आप कैसे चुप मार गया है! मारानदा को लेकर विकल्प का अन्त नहीं है। आज तक ऐसी-वैसी कोई रिपोर्ट नहीं मिली है यह सच है। मगर आदमी दूसरी धातु का ही बना हुआ है। सब-कुछ को एकदम तोड़कर समझना चाहता है। भीतर तक।

दीवार के साथ वह ज्यादा देर और टिककर नहीं बैठ पाया। कमर थक गयी है। रात के खत्म होने पर अब सुस्ती आ रही है। पलकों को अब मुँदन से नहीं रोक पा रहा है। जम्हाई लेकर वहीं पसर गया।

उधर अँधेरा पिघल रहा है। भोर की ओस बिल्डिंग के पीछे के भीग मदान में आँखों के पानी की बूँदों की तरह उभर आयी है। ओस टपटपा रही है। आँख की तरह। पानी की तरह।

मेरे मामे की बदबू और बेलियाघाटा की दो नम्बर पुतलीकल के भोंपू की 'जान बचाओ' पुकार से सुबह होती है। जाने कौन लोग गीली मिट्टी छानकर साँचे में डालकर पुतली बनाते हैं! सपनों की पुतली। और भोंपू की पुकार से जान बचाने की पुकार से सुबह होती है। इसलिए भोंपू की पुकार को असी 'जान बचाओ' की पुकार कहता था! पुतलीकल में किसी

ज़माने में पुनली वनती थी, किसे पता ? अव तो अमरीका, इगलैंड मे डिनर मेटों के चालान जाते हैं। वेलेघाटा के बूढे मज़दूर की हड्डियो मे वत्ती लगाकर उनकी मेज़ो पर तश्तरियाँ रख देते हैं। खाने की तश्तरी। और नाती-पोतो को पास विठाकर खुराफाती मज़दूर क़िस्सा सुनाता है। पुराना किस्सा। खैनी खाने से काले पडे मसूडो और चूना खाये सामने के दाँतो की जडो की तरह तन मे जो क़िस्सा काई-सा जमा पडा है 'पहले थोडो ही यह सब होता था चीनी मिट्टी की पुतलियाँ वनती थीं।. चीन से मिट्टी आती थी मैंदे से भी नरम, महीन।'

माथे पर तेज़ धूप लेकर, दो नम्बर पुतलीकल से सटे रास्ते से जाते हुए गोरा को यह बातें अचानक याद आ जाती हैं। पुतलीकल का भी जैसे एक दिल है। कैसे नाडी पकडकर खीचती है कल ! वेलेघाटा के सारे किस्से कल की सूंड जैसी चिमनी के अन्दर जमा हैं। घुमड-घुमडकर पीला धुआँ छोडती हुई पुतलीकल जैसे दिन-रात उस कहानी का जाल वुनती जाती है, जिस कहानी की परत-दर-परत के तले इसान जीवन्त हो उठते हैं—सारी जिन्दगी-भर शोपण, ज़िन्दा रहने के लिए छोटी-मोटी ख्वाहिशो और इकट्ठे लडाई का गीत सँजोकर। वह ज़िन्दगी अपनी फटी हुई कवरी मे फूल टाँककर गोरा को वुला भेजती है। गर्माहट लेने के लिए, हाथो की जकडन तोडने के लिए।

चाय के गिलास मे चुस्की लेते ही गोरा ने अखबार खींच लिया। वूढो भी उस पर टूट पडा। सुवह-सुवह इस अखवार मे मिलेगी हत्याओ की सूची और उस सूची पर निगाह डालते ही मोटे काले हरफ़ो वाली पक्ति सुलगती लाल सीको की तरह गोरा की आँखो मे विंध गयी 'पुलिस के साथ सघर्ष मे उर्फ वावू मारा गया।'

अचानक काग़ज़ ग़ायव हो जाता है। दवे जवडे वाला सी० आर० पी० का नाटा सिपाही और उसकी वदूक की नली हरफ़ो का सीना फाडकर उभर आती है। 'सघर्ष' शब्द के अन्दर कितना भयानक 'घर्षण' है, जैसे आग की चिनगारियाँ छिटकती हों।

आजकल अखवार खोलते ही एक तरफ मृत कान्स्टेवल की जोरू और उनके ग़रीव घर की एक तसवीर छपी होती है। पुलिस के पहरे मे शोक-

जुलूस। संघर्ष के बारे में सैकड़ों मूठे किस्से। युवक की मृतदेह के टुकड़े। लोगा कहता था 'धोखा देने के लिए नकली रुलाई शुरू की है। एक सौ बीस रुपये तनख्वाह पाने वाले सिपाही के लिए कितना दर्द असल में हम लोगों को करम करेगा—उसी की सफ़ाई पेश की जा रहे हैं जानते हो भोराबा उस दिन माँ कह रही थी पुलिस की बोक की तसवीर देखी है खोना! एकदम बच्ची है रे महा! क्या कहूँ बता सासा न निगलते बनता है न उगलते। बाबू दूसरी बात कहता था 'दुश्मन का अंत सामने नहीं रखना चाहिए। बाबू की मोटी मूंछ बात करते समय सरसराती थी। बाबू का कसा शरीर भरा हुआ चेहरा। जेब में छोटा-सा एक चमकता हुआ इतालवी हथियार रहता था हरदम। और निशाना ऐसा कि मुंह में लगी सिगरेट उड़ा दे। अमाकमतर में यू० जी० (बाबू कभी भी अंडर ग्राउंड शब्द नहीं बोलता था) म रहने के दौरान दौड़ते साँप की खोपड़ी में छेद करता था। वह बाबू भी गया। लड़कर ही गया है। बाबू का मोसा भाला चेहरा अखबार के भीतर से उभर आया। प्रसीडेंसी कॉलेज के लॉन पर जमी बैठकों के दौरान बिखरती हुई हँसी। और मैदान की मीटिंग में पाजामे के पौंचे मोड़कर गमू के गिरोह को खदेड़ना। यह सब बाबू की बातें हैं—गमू। गज से गमू। मारकाट उस समय हैजा-चेचक की तरह फैल रही थी। अब तो आखिरी हालत में है। किसान मुक्त को इस लेकर अनेक पार्टियाँ अनेक बातें कह रही हैं। नारानदा एक बार जबरदस्ती खींचकर लाये थे बाबू को सुर कम्पनी के मैदान में। धोबिया का मैदान। खारे पानी की गन्ध उठ रही थी रह रहकर। और कपड़ा पटकने का महनती छन्द। ये लोग मारेंगे और हम भड़ुओं की तरह देखेंगे? धैर्यवान नारानदा की भौहों पर खिंचाव पड़ा 'यह सिर्फ़ दंगा है हिन्दू-मुसलमान दंगों स भी कुत्सित दंगा।

बाबू उत्तेजित 'वाह! अच्छी कही! मेरे कामरेड को। नारानदा न झट से बात काटी 'उनके खिलाफ़ दंगे के खिलाफ़ प्रचार म उतरना पड़ेगा।"

बाबू ने पतमून की भूस झाड़ी 'यह सब-कुछ मुझे नहीं भाता, तुम लोग करो जाओ ..।"

बाबू चला गया था। एकदम शुरू-शुरू की बात है। पार्टी बनने-बनने को थी उस समय। इस इलाक़े में वह नहीं आया। उसके जोड़ीदार सहदेव को सी० पी० एम० वालों ने क़त्ल किया था। इसीलिए क्रांति के साथ सी० पी० एम० को काटने की बात भी पक्की तरह बैठ गयी थी। इसके अलावा दिमाग़ भी बिगड़ गया था। एक्शन, इत्तालवी हथियार और बेनींद ज़िन्दगी के भयानक स्पर्श ने जाने कैसा बन गया था! पत्थर की तरह। और मुरारी की सीना छेदने वाली गोली की आवाज़ सुनकर दोनों हाथों से मुंह ढांपकर ज़ोर-ज़ोर से रोया था। कौन समझेगा इस पत्थर को!

पुतलीकल से सटकर निकलते समय गोरा जैसे वही पुकार अपने सीने के अन्दर महसूस करता है। कोहनी से बूडो को ठेला, "देखा?"

"क्या?"

"कारखाना वैसे का वैसा ही चल रहा है—बासी रोटी बाँधकर सब ड्यूटी पर जा रहे हैं।"

बूडो ने एक झटके से उनकी तरफ़ देखा। उसके बाद गरदन टेढ़ी करके पूछा, "इसका मतलब सब-कुछ छोड़-छाड़ के चले आयें, यही कहना चाहते हो?"

"नहीं, यह नहीं कह रहा हूँ। इतना ढोल पीटने से भी काम नहीं बना। क्रांति की कोई जल्दबाज़ी नहीं है—देखो, वे जोरू के चूतड़ों पर कपड़ा और बाल-बच्चों को लेकर ही मगन हैं।"

"वे लोग कहेंगे, संशोधनवाद के गड्ढे में डूबे हुए हैं!"

"असल में क्या।"

अचानक गोरा जैसे कहीं डूब जाता है। बालूचर के लम्बे बकफूल पेड़ की पतली छाया घनी होकर उसके चेहरे पर गिर रही है। सफ़ेद दाँतों की क़तार झलकी, 'तुझे हरिया भाई की बात याद है? अरे वही ऐलेनबरी का चोखा मज़दूर!'(बूडो ने सहमति से सिर हिलाया) हरिया ने एक मज़ेदार क़िस्सा सुनाया था। एक गाँव में एक अंधा और एक लंगड़ा रहते थे। दोनों में बहुत दोस्ती थी। भोजन न मिलने के कारण दोनों ही सूख रहे थे। अन्त में पेट के पीछे गाँव छोड़ा। लंगड़े को अंधा कंधे पर ले चला। एक चल रहा है, दूसरा रास्ता बतला रहा है। अन्त में एक गाँव में पहुँचे। श्मशान की

तरह वीरान। मंगरू न रास्ते में चूने का एक पतीला एक लम्बी रस्सी और एक नाखूनतराश देखा। मंगू से कहा ले ले काम आयेगा। असल में हुआ क्या कि उस गाँव में एक मकान खाली था वहाँ एक राक्षस रहता था। दो चार घरों मे लोग रह रहे थे मरने के लिए राक्षस रोज उन्हें मारकर सूँड़ स खींच लेता था। उसके बाद दूसरे गाँव में घूम घूसन आता था। लोगों ने मंगू-मगरू को मना किया मगर उन लोगों की जिद। राक्षस की हवेली में ही जा टिके। रात को लौटकर राक्षस दरवाजे पर धक्का देने लगा कौन है रे? उन लोगों न जवाब दिया खोक्कस। राक्षस न कहा तुम्हारा बाल देखें। उन लोगों ने लम्बी रस्सी फेंक दी। फिर उसने थूक फेंकने को कहा। उन्होंने चूने का पतीला राक्षस के मुँह पर उँड़ेल दिया। उसके बाद राक्षस न कहा नाखून दिखाओ। तब उसकी आँख पर नाखून तराश गड़ा दिया। बस राक्षस डर गया। यह देख दूसरे लोगों के सीने में भी ताकत आयी बस सब मिलकर ।हरिया कहता था खोक्कस का असल में कुछ नहीं होता सब झूठ होता है। मगर उस झूठ मे राक्षस को डरा दिया था। डर के मारे राक्षस के हाथ-पाँव पेट के अन्दर धँस गय थे। यही है साम्राज्यवाद। एकदम खोखला। मगर इसे ऐसा किसने बनाया बता! वह कहानी कहता और मूलती हुई मूँछ क बीच से मुस्कराकर हँसता था।

दुविधा-दुर्भावना की रात कट जाने के बाद अब दोनों के चेहरों पर जरा चैन झलक रहा है। कल रात तक गोरा का भारी मन पत्थर-सरीखा बना हुआ था आज अब वह गलने लगा! शायद नारायण क आने के बाद स ही। गोरा को भलेमानुस की तरह निश्चितता के इसने भाव म भर लिया है। वह पाँव से ईंट के टुकड़े को सहियाते हुए आगे बढ़ रहा है। किसे पता कि चन्द कदम आगे जाते ही उस सोना की बात याद आ जायगी! सिप्रय फ़ैक्टरी में बजते हथौड़ों की धुम-धुम आवाज सुनते हुए व भाभी की दुकान में घुसे। नाश्ता तर करने के लिए। भाभी की टेढ़ी नाक और होंठों की दरार के बीच पतली हँसी।

"अच्छा बिस्कुट दीजिये।

अरे बाप! चाकर बैठ भरा उधार कर रहे हैं।"



"और नही तो क्या ?"

पुतलीकल का 'जान बचाओ' की पुकार लगाने वाला भोपू एक बार फिर बज उठा। और एक बार फिर एक दगली मजदूर माथे पर पट्टी की तरह गमछा बांधकर लोहे के छोटे गेट को निशाना बनाकर दौडने लगा। अन्दर जाने के लिए गरदन झुकाकर घुसना पडता है। माथा नीचा करके। सुना है कि यह गुलामी का प्रतीक है। पुतलीकल के सुदामा की वजह से तीनेक मजदूरों को लेकर एक बार लाइन के किनारे गोरा बैठा था। ढलुआ जमीन। पीछे मालगाडी की लाइन। घिस-घिस, घटाँग-घटाँग की आवाज। मीटिंग मे ए० बी० भी था। कुछ बातो के बाद उस छोटे-से गेट की बात भी उठी। ए० बी० ने कहा था कि इसी मे इज्जत की लडाई शुरू की जा सकती है। सुदामा की हँसी फट पडी, "पेट का भात और चूतड पर का कपडा जहन्नुम मे गया ।" और साथ ही हारान मिस्त्री का किस्सा चालू हो गया "तो समझो, एक बीस और सात साल से इस पुतलीकल मे हूँ। एक बार तो कल ही ठप्प हो गयी थी। विलायत के साहब तक फेल हो गये। उस समय यही हारान मिस्त्री काम आया। मगर हाल वही था, गरदन झुकाकर कारखाने मे घुसना। ज्योही कारखाने के पेट मे घुसे, त्योही दुनिया-भर मे कही भी तुम्हारा कोई नही रहा। न दादा, न बाबा, न बहन। मशीन से कैसा प्यार! कारखाने के साथ कैसी दिल्लगी! यह है बाबा, मालिक के साथ जूझने की जगह। कुरुक्षेत्र।

हारान मिस्त्री की बात खत्म नही होती। लगातार चलती रहती है। अन्त मे सुदामा ही ऊब गया, "चलो, चाय पीकर आयें।"

चाय की तलछट तक गले मे उतारकर, पुतलीकल के कान का परदा फाडने वाले भोपू की आवाज दिमाग मे लेकर वे बस-गुमटी की ओर बढे। इलाके से कोई-न-कोई आयेगा। विजयदा आ सकते हैं। मुहल्ले से कैसा लगाव है! वहाँ के समाचार के लिए दिल बेचैन रहता है।

बस-स्टॉप से सटा हुआ गदगी का ढेर। सारे कलकत्ते की गदगी। कादापाडे की बस-गुमटी। सोना की माँ की लम्बी-सी ठुड्डी गोरा को दिखायी पडी। बूढो बेचैन हो उठा। उसने भाग जाना चाहा, "मैं चल रहा हूँ।"

गोरा ने बहुत ही सख्त स्वर में कहा "नहीं।"

सोना की माँ के हाथ में एक पोटली थी। कई दिनों से चेहरा फूलकर ढोल बन गया है। शायद यह कई दिन उन्होंने रोकर ही गुजारे हैं। टेढ़े बकफूल के पेड़ की पतली छाया काँप उठी, "गोरा!" और सूखे बालूचर के बीच मैदान में गोरा ने सोना की माँ को जकड़ लिया "मौसी।

दुकान में बैठना बेवकूफी है। दूसे ही पता चल जायेगा। इसके अलावा एक बार बवाल सुलगने पर कब क्या तूफान पड़े कोई ठिकाना नहीं है। उस समय बातों के प्रवाह में कच्चे घाव की चलन का भी उनको होश नहीं रहेगा। बायी ओर शरणार्थियों के डेरे के बगल से उन्होंने चलना शुरू किया।

"तुम लोग तो मारे-मारे फिर रहे हो उधर विजय को आज भोर में उठा ले गये हैं। अब उस बुढ़-सी बहू और सूखियाग्रस्त लड़की को लेकर वह किस जहन्नुम में जायेगी?

'विजयदा पकड़ गये हैं?

"हाँ। मुहल्ले के बोदू बाबू के पास छिरि को लेकर गयी थी। बोदू बाबू रुपये-पैसे नहीं लेंगे जमानत करा देंगे कहा है।"

'कहा है?"

'हाँ। नहीं लेंगे मतलब जो जी में आयेगा वही करेंगे क्या?

'देखिये।"

हाँ और देखें कहाँ जाऊँ फूस में आग लगाकर तुम लोग तो अब तो देखना ही पड़ेगा और सुन भूलकर भी मुहल्ले में पाँव मत रखना कोई बचा नहीं सकेगा। फिर तो उसी सोना की तरह।"

उसके बाद स्वर भीग गया। गोरा और बूढ़ो के पाँवों में चलन की ताकत नहीं है। बालूचर से वे लोग काफी दूर चले आये हैं। बकफूल पेड़ का गहरा हरा रंग अभी भी जैसे आँखों में काजल की तरह लगा हुआ है। धूप में अब तेजी नहीं है जाने कैसा बादल-सा घिर आया है। उस धूसर रंगे जलते हुए मैदान में बादलों से घिरे आसमान तले सोना का नाम सुनने के बाद किसी के पाँव भी आगे नहीं बढ़ सके। अचानक जैसे जमीन में गड़ गये हों।



"यहाँ बैठ।"

सोना की माँ ने पोटली खोलकर सुकु की पैंट और कमीज़ निकाल
फेर टिफ़िन-कैरियर। बूडो घुटने पर ठुड्डी रखकर बैठा था। गोरा
दोनों पाँव फैला दिये और सोना की माँ, जननी की तरह प्यारे बेटे को
भर के खिलाने लगी।

"यह तेरी मिनती भाभी ने भेजा है सुना है, बूडो उसके हाथ
चटनी बहुत पसन्द करता है।" खाते-खाते बायें हाथ से गोरा ने रूखे ब
पीछे ठेले, "खुकु के साथ भेंट हुई, मौसी ?"

"हाँ, होगी क्यों नही ?"

"तबीयत कैसी है ?"

"अच्छी है।"

"माँ को छोड़ा है ?"

"ना, कल कचहरी मे देखें क्या होता है ! हाँ रे गोरा, उस पुलिस व
को क्यों मारा तुम लोगो ने ? सुकु बता रहा था, मुहल्ले के सब लोग
कह रहे थे !"

"पता नहीं।"

सोना की माँ दो बजे के लगभग चली गयी। बिल्डिंग के तिमंजि
कमरे में धूल की गंध सीने में लेकर मन्टू बेचैन होने लगा। समाचार सु
मे बाद से ही मन्टू बहुत व्याकुल था। सोना की माँ से मिलने के लिए
खतरनाक खिचाव भीतर-ही-भीतर खिचता जा रहा है। वैसे इस दोपह
में बिलकुल सन्नाटा है। पुलिस की जीप के ब्रेक की आवाज़। और खाँ-
करती हुई धूप। इसके अलावा रात-भर आँखों की पलकें मूंद नही पाया
बातें करते-करते गोरा सो गया। निवारन, सुकु और मन्टू की इक्की-दुक
बातें कानों में नही पड रही हैं। अभी नींद। मुर्दे की तरह नींद।

पुलिस-वैन की हैडलाइट की तेज नशीली रोशनी और लावारिस कु
की तरह काटते पहियों की आवाज़ के साथ मुक़ाबला करते हुए र
कटती है। रात कटती है आँखों की पुतलियाँ जलाकर। उसके बाद हत
का समाचार और भारी थकान लेकर सुबह। उसी सुबह के लुढकते-लुढक
फिर रात आ गयी। तिमंज़िले के कमरे को इसका होश नहीं था। का

किनारेदार साड़ी के आँचल में अँधेरा लिये शान्ता आयी "मेपु पकड़ा गया है। जो लड़का डी॰ बी॰ लेकर आ रहा था उसका पीछा करते हुए ही शेल्टर रेड किया गया।"

दो या चार बातें। धुमिल्दा बातें। उनसे ही सब-कुछ बीभत्स हो उठा। शान्ता की रिपोर्ट ही इस तरह की है। कोई भाग-लपेट नहीं है। एकदम जरूरी बातों से भरी हुई। कसे कदम की तरह ही शान्ता की बात। मगर मेपु के पकड़े जाने की घटना की रिपोर्ट भी शान्ता उसी तरह कर सकती है यह किसे पता था! किसे पता था कि उसकी दबी हुई ठुड्डी पर नन्हा सा गोल तिल असल में पत्थर है!

शान्ता के होंठों की जोड़ी सूखे पत्तों की तरह हलके से थरथरायी। पता था नहीं होगा।

बूढ़ो तेजी से चहलकदमी कर रहा था। बूढ़ो के पाँव के दबाव से फट से एक तिलचट्टे का पेट फटा और लसदार अँधेरा फैल गया। दियासलाई खोजकर शान्ता ने ही मोमबत्ती जलायी। फस्स से एक आवाज हुई और शान्ता की भूरी आँखों की पुतलियों में हलके फलीते की तरह रोशनी चमका कर दियासलाई भक से जल उठी। भूरा रंग जैसे जल जलकर खत्म होता जा रहा है। मोमबत्ती की क्षीण तीखी रोशनी को घेरकर वे लोग कसे बैठे हैं। गोरा के बालों ने बिखर कर उसकी गरदन को ढँक लिया है। उन बालों में वह उँगलियाँ चला रहा था शान्ता!

"क्या है?"

'कुछ किया नहीं जा सकता!"

'क्या बकता! उससे क्या होगा? आदमी जान से भी कहीं काम नहीं होता लड़ाई भी एक कदम आगे नहीं बढ़ेगी। ज्यादा-स-ज्यादा थोड़ी जलन मिट सकती है। इसके अलावा सोचकर भी क्या होगा? सुना है पार्टी ने कहा है कि किसी कामरेड के पकड़े जाने पर उसे मरा हुआ मान लेना पड़ेगा।"

तुमने सुना मुरारी के समय एक जुलूस।"

'जुलूस निकालने के लिए कह रहे हो?'

'हाँ।"



वे लोग दबी जबान मे बातें कर रहे थे। फुसफुसाकर। सभालकर। वरना मुकु या निवारन बात का छोर पकड सकते है। बगल मे बूडो दीवार से टेक लगाकर सोया हुआ है। बूडो तक नही सुन पा रहा है उनकी बातें। असल मे शान्ता के बारे मे कही गयी ए० बी० की बात ने ही गोरा को उसकी ओर ढकेला है। और एक दिशाहीन भयानक क्षण मे उसी की तरह रास्ता खोजता गोरा उसकी दोस्ती पाने को तरस रहा है। इस दोस्ती की बुनियाद शान्ता भीतर-ही-भीतर बहुत पहले से बना रही है, यह बात गोरा ने सपने मे भी नही सोची थी। बालूचर के शरणार्थी मुहल्ले मे वयस्क औरतो को लेकर शान्ता एक स्कूल चला रही है। मीनू से उसने कल रात बात की है। मीनू को भी वापस लाया जायेगा। शान्ता ने सिर्फ इतना समझा है कि किसी भी तरह आम गरीब, मेहनतकश इसान का साथ छोडने से काम नही चलेगा। और यही आस्था लेकर वह लडे जा रही है। इसका पता नेपु को भी था।

हर वक्त किताब पलटता था। इसीलिए तूफान पहाने से ऐसा लग रहा था कि. ।

लाूज रोड की टप्परदार बस्ती मे टूटी-फूटी गृहस्थी और बाल-बच्चो की भूख-बीमारी भूलकर जो इसान लडाई के मैदान, मीटिंग-जुलूसो मे, हमेशा मौजूद रहता था, उसका नाम है नारानदा। शीशे की फैक्टरी के कच्चे नाले के किनारे, नाले के ऊपर बॉस के मचान पर। अली, सुबला, विजय के हाथो को पकड-पकडकर पूछते थे। बातचीत का दौर खुल कर चलता था। मुंह का थूक सूखकर भात के झाग की तरह गिरता था। दलाल के खिलाफ, कम्पनी के खिलाफ आदमी के जबडे की हड्डियाँ तनी रहती थी। अभी भी वैसे ही, बस ये बेअदब हड्डियाँ छिटक कर और बाहर आ गयी हैं।

लाूज रोड की पक्की जमीन पर, पीपल की मीठी छाँव मे चोपडी की चादि को बचाकर एक दिशा खोजने, एकजुट लडाई लडने के तौर तरीको को लेकर घटो बातो की माला गूंथी जाती थी "स्टारटेक्स के मजदूरो की छँटाई होने पर ग्लास फैक्टरी के मजदूर अगर सोते रहते तो एका क्या आसमान से उतरता ?"

वही नारानदा। वही दिलखोल हँसी। यूँ उन्हें पहचानने का कोई और तरीका नहीं सिर्फ हँसी की उस लहर के अलावा 'कैसे हो पहले यह बताओ।"

चहरा बिलकुल बदल गया है। नाक के आम तक लटक आने वाले बाल अब नहीं हैं। माथा मूँडकर साफ़ कर दिया गया है। मूँछ भी बिहारी ढँग से नीचे गिरी हुई है। गाल के दोनों ओर के मांस के सूख जाने से एकदम सपाट चहरा। बिहार की असली मिट्टी का-सा तांबई रंग। मगर वह आँखों की जोड़ी ही पहले जैसी है। वही धार वही चिनगारी।

गोरा के चेहरे पर बेलगाम हँसी खिली नारानदा!

जिस हँसी को देखकर संशय और संकट का जिराब तोड़ने की हिम्मत पैदा होती है नारानदा के सपाट गालों पर धनुष की तरह तनी वही हँसी। खिली हुई।

मोमबत्ती धीमी जल रही है। बीच-बीच में थरथरा उठती है फिर भी जल रही है। जाने कब सभी उन्हें घेरकर गोला बनाकर आ बैठे हैं। पुराने क़िस्से-कहानी फूल उठते हैं। संग्रामी बेलेघाटा और उसके प्रचंड साहसी प्राणों की कहानियाँ जोड़कर वे लड़ाई का काव्य गूँथने बैठे हैं। "अली का समाचार क्या है रे? उसकी बहन की बीमारी ठीक हुई ?" अली की बहन को टी० बी० हुई थी। अली की छँटनी की गयी थी। अभागिन लड़की डेढ़ साल भुगत गुज़र गयी। अली को फिर नौकरी मिली। भला-बुरा मिलाकर समाचार यही है।

शुरू के विस्मय का घटाटोप छँटा सत्तर के आखिरी दिनों की टुकड़ टुकड़ होती हुई दुविधा द्वंद्व संशय और प्रश्नों की लड़ियाँ सीने में लेकर भी वे अचानक खुश हो उठे। बातों-बातों में बेलियाघाटा से नारानदा कब मोतीहारी पहुँच गये पता नहीं। बिहार के फुलिया गाँव की कीचड़ मिट्टी। जाड़ा भगाने के लिए पुआल जलाना फूस जलाना। बीजने का सुरीला गीत। सूद का कारोबार। शोषण की मार। मार के दाँतें। उन ज़हरीले दाँतों को उखाड़ने के लिए लड़ाई-जंग। जंग की तैयारी,

यह झंडा तुमसे कहता है
दिन रात ज़ुलुम क्यों सहता है?

जुलुम के नामोनिशान मिटाओ,
होश मे आओ, बेदार हो जाओ,
ओ मेहनतकश जनता उठ !

अडतालीस मे पार्टी ने यह गीत रचा था। घूम-घूमकर उसके गाने, गाने के उसके जोश ने, फुलिया गाँव के छोटे कद के मरियल शरीर के कनाई आजि ने मन मोह लिया था। बाल-बच्चे, बहू-बेटी छोड लडाई की आग मे कूद पडा था वह आदमी। फुलिया खौल रहा था। उसके बाद चार साल तक जेलखाने की चक्की पीसी। अब अध-बटाई पर खेती करता है। इस बार जाडे मे ईख लगायी थी। खेसारी की खेती। मिट्टी का सीना चीरकर मीठे पानी की खेती। ईख नही, मीठा पानी। छोटे कद के उस ठडे आदमी के सीने मे आग ठोस आदमी चुन-चुनकर पार्टी बनाना । उस आदमी के घर मे ही नारानदा ने शेल्टर लिया था। लौटते समय कनाई आजि के बेटे की लडकी के लिए लाल फ्रॉक खरीदकर ले जानी पडेगी। उसके जिक्र के साथ उसके नटखटपन के किस्से भी चले। वह छोटी-सी लडकी नारानदा से बहुत घुली-मिली है। कनाई आजि कहता है, "इस बार लडाई बाल-बच्चे, बहू-बेटी—सबको लेकर होगी।"

अचानक मीनू की बात उठी, "मीनू कहाँ है रे ?"

शान्ता ने जाने कैसे गभीर ढँग से जवाब दिया, "उसे दूर के शेल्टर में रखा गया है।"

मीनू का साँवला चेहरा आँखो मे तैरते ही सोना की बात आ जाती है। उस रात जैसे बातो का अत नही। अनगिनत बातें। उनकी रूखी, जली जिन्दगी मे कनाई आजि की हरी जमीन की तरह सोना जैसे मिट्टी के टुकडे का रस है। सोना की तरह के बहुत लोग नही। सोना की बात उठते ही बिल्डिग का चौकोर कमरा मौन हो गया। ए० बी० का सिर घुटने पर झुक आया। इधर उसके सीने मे एक दर्द चिलक उठा। बडी-बडी आँखो की पलकें असहनीय दर्द से मुँदने लगती हैं। नारानदा की दोनो आँखें नमक के दानो की तरह जल रही है "सोना ने जब मेरे साथ जाना चाहा था उस समय क्यो नही जाने दिया ?" फिर मीनू की बात उठी। छरहरी, जिद्दी मीनू। गोरा को लगता है, मीनू शायद वाकई निर्मला नही है, मगर सिखाने-

पकड़ाने में धारदार हथियार बन सकती है। गोरा की ओर देखते हुए तारानदा बड़बड़ाये "लड़की को जरा संभाल कर रखना।" और गोरा की आँख बड़ी हो उठी 'वह भला संभाल कर रखने लायक लड़की है! उमा की तरह सारे बदन में राख मलकर वह एक भीषण यज्ञ में कूदी है।' हू हू करते गोरा का सीना जैसे जलने लगा। नहीं रोक सका सोना रे!

गाढ़ी रात। अंधकार उमसती गहरी रात। अँधेरे के सीने पर पाँव जमाकर खिड़कियाँ खड़ी हैं। धूल और इश्तहारों की गन्ध लिये हुए। मोमबत्ती की फीकी रोशनी में तारानदा के सोंप फँसे चेहरे की दुख ताँबई रंग लिये रोशन है। रह रहकर हवा का झोंका भीतर आ जाता है। हवा में धागे की तरह मोमबत्ती की लौ रह रहकर काँप रही है। ए० बी० की बड़ी नाक की छाया फ़र्श पर हिलडुल उठती है "तू कहना चाहता है मैं छिरि भाभी के बारे में नहीं सोचता। विजयदा की लड़की से मेरा कोई लगाव नहीं है, है न?

थोड़ी देर पहले तारानदा ने ही बात उठायी थी। बातों में से कूरियर विजयदा की बात निकल आयी। नेपु के जलने का भी जिक्र हुआ। जिम्मेदारी की बात भी उठी।

"जितने कामरेड पकड़ गये हैं शहीद हुए हैं उनके परिवारों की देखभाल करनी पड़ेगी। यह हमारा नैतिक उत्तरदायित्व है। जो लोग पकड़ गये हैं उनके लिए क़ानूनी बन्दोबस्त करना ।

तभी फ़र्श पर ए० बी० की नाक की पड़ती-उभरती छाया हटी "बुर्जुआ क़ानून के खिलाफ़ ही हमारा संग्राम है। उनकी दया पाने के लिए हमारे कामरेडों ने लड़ाई नहीं छेड़ी है।

तारानदा ने झनझनाकर ठंडे भाव से बात काटी यह जनवादी अधिकार उनकी बपौती नहीं है। हमारे देश के लोगों ने कई सौ साल तक लड़ाई लड़कर यह अधिकार हासिल किया है ।"

ए० बी० के होंठ अपने-आप टेढ़े हो गये टेढ़ी मुसकान लिये सिर्फ़ क़ानून की बात नहीं है लड़ाई को क़ानून की चौहद्दी में अटकाये रखना ही क़ानून का उद्देश्य है।"

सुनकर गोरा अपने को संभाल नहीं सका, "तुम्हारी लड़ाई में इंसान

का कोई अस्तित्व नही है विजयदा, छिरि आभी—किसी को भी तुम कुछ नही समझते, समझ नही सकते ।"

गोरा ने एक हाथ से अपना चेहरा पोछा।

ए० वी० की तनी हुई नाक और तनकर कटे के निशान को छूने लगी। नारे के फट पडने जैसा दुरन्त उल्लास । कटे का दाग़ टीयर गैस के गोले की यादगार है। आज की बात नही है। खाद्य-आंदोलन । कलकत्ता शहर की तारकोल की सख्त सडको पर वह भूखे पेट ही टूट पडा था।

लाठी नही, गोली नही।

खा-पहनकर जीना चाहता हूँ।

जुलूस के आगे चलता बडा-सा लाल झडा, माथे पर बँधी पट्टी की तरह हवा मे उड रहा था। ए० वी० के सिर के ऊपर। और पेट के लिए दाने के बदले सीसे की गोलियाँ और टीयर गैस के गोले मिले थे। उस समय का टीयर गैस के एक गोले का खोल अभी तक उसके पास रखा था। सोना ने सकेड[1] बनाया था। जब्बर 'माल'। वह 'माल' एक नाटे गोरखा सिपाही ने फेंका था। पुलिस या मिलिटरी? एक गोला आकर ए० वी० की नाक के नीचे लगा था । उस जगह फाँक हो गयी थी। कधे पर कपडे का झोला झुलाती हुई लम्बी लडकी अशोक को वेलिंगटन स्क्वायर खीच ले गयी थी। शायद रूमाल भिगोकर बाँध दिया था। काला दाग लडकी की स्मृति जगाता है। टीयर गैस के उस गोले और गोरखा सिपाही और खाद्य-आंदोलन की स्मृति मे दाग़ अभी भी जल उठता है।

जाने कैसी एक आवाज-सी हुई—सँत्, सँत। अचानक सभी मुँह बद हो गये। नारानदा ने सभालने के लिए कोई बात कही। तभी फिर ज्वार उठा। और उसके प्रवाह मे नारानदा की आधी खुली बात डूब गयी। एक भयकर ज्वार, रुलाई का-सा, "शान्ता मेरी माँ के पेट की जायी बहन नही है, नेपु को वे लोग मेरा सीना जरा भी नही जलेगा न ।"

यह जैसे अशोक नही, अशका नहीं, ए० वी० नहीं। हलकी दाढी वाले इस आदमी को गोरा ने जैसे पहले कभी नही देखा। शुरू-शुरू मे ऐसी बात

---

1 देसी बम।

बसन पर पार्टी की दिशा को लेकर बात होने पर ए० बी० के पास में जाने कैसा जादू चल जाता था ! आज वह सब-कुछ नहीं है। छोटी-सी दाढ़ी के पीछे आज जैसे कोई विचित्र रहस्य छुपा है। एक निरुद्देश्य व्यथा और पीड़ा का रहस्य।

नारायनदा का मन उद्वेलित हो उठा "आराम मत करो अपना अपना सुना !"

बात सीने में सुलगने लगी। इस तरह सुलगी कि वह अपने को और नहीं रोक सका। झट से उठकर टेढ़ा होकर खड़ा हो गया "देखना हमारे कामरेड लोग जेल तोड़कर इज्जत के साथ निकल आयेंगे देखना।"

यह जैसे हर बात पर उँगली उठाने वाला ए० बी० नहीं है। साउथ बेलियाघाटा लोकल कमेटी का जुझारू नेता एल० सी० एस० ए० बी० नहीं है ! जैसे एक अभिमानी शिशु है। आखिरी बार 'देखना' शब्द कहते समय ए० बी० का गला भीग गया। पीछे के दरवाजे पर कैंच-कैंच की आवाज पैदा करते हुए ए० बी० गायब हो गया।

ए० बी० के जाते ही निवारन जैसा छटपटाने लगा। जाने किस बात की बेचैनी है ! दोहरा खिंचाव। नारायनदा को तुरंत थाम नहीं पा रहा है। जबकि सोचने की दुरन्त आकांक्षा है। उसी आकांक्षा में वह गुनगुनाने लगा। सारा शरीर बेचैनी से चिड़चिड़ाने लगा "नारायनदा मैं रात होते ही निकल पड़ूँगा। गाँव के हालचाल बताइए। जरा सुनकर ही जाऊँ।"

सुकु को जैसे जल्दी नहीं है, "हाँ वहाँ की बातें ही हों।"

नारायनदा की आँखों की जोड़ी सुकु के जवानी चेहरे पर टिक गयी "क्या बात है ?"

नपु की बात दिल की गुप्त कोठरी में ढकेलकर आत्मा की आवाज काँप उठी "वहाँ कैसे घुसपैठ कर सके ?"

"पहले-पहल मैं कटिहार के एक मिल-मजदूर के घर रहा। उसका नाम सुखलाल था। सुख का कोई ठिकाना नहीं। वह आज का आदमी है भी नहीं। पहले सी० पी० एम० में रहा। उससे पहले सी० पी० आई०। यानी आम पार्टी का आदमी कहने से जो समझा जाता है, बिल्कुल वैसा...

तेल-पिलाई पक्की लाठी की तरह शरीर। टीन की खोली मे डेरा। बग़ल मे मकई का खेत। उस आदमी को सभी मानते थे। उसका ही एक साला मोतीहारी मे रहता था। मिलटोले मे कई दिन बिताकर, सीधे वहाँ चला गया। कनाई आजि। दिन-भर खेसारी काटने लगा। वह भी अनाड़ी हाथो मे हँसुआ चलाने लगा। उसी से अगली उँगली उड गयी। कनाई आजि की जोरू ने सीख दी, 'हँसुआ ऊपर की ओर नही खीचना चाहिए ।' "

छह प्राणियो के साँस लेने की आवाज़ लगातार उठ रही है। मोमबत्ती की हलकी रोशनी में मोतीहारी थाने के फुलिया गाँव के रहस्यो की गाँठ खुल रही है एक-एक करके। ताँबे के-से रग के, धूप से जले इसान, आँखो मे सूखापन लेकर कमरे मे जैसे चल-फिर रहे है। सुख-दुख का गीत गा रहे हैं।

भारी अँधेरी रात हू-हू करती लुढकती जा रही है। रात के गाढी होने के साथ-साथ विक्षुब्ध उस कहानी का स्वाद अब जाने कैसा खारा-खारा-सा हो उठा है! कहानी की तहो मे से से काँटे उभर रहे हैं। माथा चरचरा उठा है, सवालो के तीखे भाले।

" पार्टी कामरेड गाँवगज के कारखाने मे काफी तकलीफें सह रहे हैं, काफी दिक्कतें झेल रहे हैं हमारे इलाके मे ही एक कामरेड ने अनगिनत दिन सिर्फ हँडिया पीकर आदिवासियो के बीच गुज़ारे हैं। मगर ज़मीन पर पाँव जमाये हुए हैं दिनो-दिन भूखे रह रहे हैं, मीलो पैदल चल रहे हैं गोलियो के सामने सीना तान रहे है मगर मजदूर-किसान के सामने क्या प्रोग्राम रख पा रहे हैं एक वही खात्मे[1] का (यहाँ निवारन फुफकार उठा, जैसे अब तक वह मौका तलाश रहा था)।"

"तो फिर खात्मे की राजनीति मे आपकी आस्था नही है?"

"नही, सत्रासवाद मे किसी कम्युनिस्ट की आस्था नही होती।"

निवारन विरक्ति के झाग उठाने लगा। अचानक उसके धैर्य की दीवार

---

1 पार्टी के 'वग दुश्मन के सफ़ाये' की मुहिम, जिसे वे वर्ग-सघर्ष का उच्चतर रूप तथा छापामार युद्ध की शुरुआत मानते हैं।

रह गयी। मान्ना बड़बड़ाकर जाने क्या कहने लगी। उसकी मुँह की हवा से मोमबत्ती बुझी-बुझी-सी हो आयी।

और निवारन ने उभरी नसों वाले अपने हाथ को घुमाया "फिर तो कोई बात ही नहीं हो सकती!"

नारायणदा ने मजबूत हाथों से पतवार पकड़ी। वरना इसके बाद बात ही न होती।

फिर वही बात धार की तरह बह चली। नाक्सलिकों की बात। रूस के उस माथे सन्यासी-दल की बात मान्ना और सुकू उन्मुख होकर सुनने लगे। छह भाषी जाने कब एक धक्के से रूस के बर्फीले तूफ़ान में चलने फिरने लगे।

नारायणदा की बातों के बीच में मान्ना ने इधर-उधर के सवाल पूछे। कभी खींचकर भौंहें कपाल पर चढ़ायीं 'यह अभी तक मान नहीं पायी हूँ।' आदमी ने हँसकर एक किताब का नाम लिया 'खोलकर देखना'। उस समय तो बात खतम हुई। फिर सुकू ने पकड़ा 'यानी आप कहना चाह रहे हैं कि हम लोग जो कर रहे हैं, वह तमाम गलत है?

नारायणदा के चेहरे पर साफ़-सुथरी मुसकान 'नहीं कामरेड!"

भोरा आँखें बड़ी-बड़ी करके उस आदमी की ओर देख रहा है। कान खड़े करके उसकी बात पचा रहा है। कुछ बातें तो भोरा ने भी समझी थीं। मगर समझा कितना पाया? शायद उसके समझने में कुछ पोलापन था। इसके अलावा अपनी समझ दूसरे तक पहुँचाना एक बारीक कला है। यह बातों की कचकच नहीं है और बात उलझाकर उसका सिरा खो देना भी नहीं है। यह तो जैसे परत-दर-परत खोलना है जब तक वह न मिले।

निवारन उसी तरह तुनक उठा 'तो फिर अब सभी किताब खोलेंगे।

बात कहने के साथ-ही-साथ निवारन ने गठीली उँगली आसमान की तरफ़ उठायी। हवा चीरकर शब्द हरहरा उठे। थोड़ी देर के लिए चुप्पी। सुकू फ़र्श पर रेखाएँ खींच रहा है। यानी सोच रहा है। गंभीर ढंग से जाने क्या सोच रहा है। और निवारन का तुनकपन नारायणदा बात

भाव से सहलाने लगे, "क्रान्ति एक वर्ग का उत्थान है।"

गले मे उतार-चढाव नही है। एक सुर मे कहते जा रहे हैं। इसान की जान और जिन्दगी लेकर जो बात शुरू हुई थी, अब कूट-छानकर उसका अर्क निकाला जा रहा है। अब वह बात एक सिद्धात बन गयी है, क्राति का सिद्धात।

क़त्लगाह, जेलखाना गोलियों की बौछार

गन्दे नाले के पास रंगकल। रंगकल का कलेजा चीरती हुई छत के ऊपर से उठी गहरी काली चिमनी। जोखिम उठाकर जाने कब भूखे पेट अली ने चिमनी के माथे पर सुर्ख खून के रंग का लाल झंडा मजबूत हाथों से कसकर बाँध दिया था। मजदूर की इज्जत! इज्जत की लड़ाई!

कड़ी धूप और आसमान-फाड़ बारिशों की वजह से अली के मेहनती खून जैसे सुर्ख झंडे का रंग अब सुर्ख नहीं है। बहुत ही मैला पड़ गया है। बदरंग। उधड़ा हुआ रंग। फिर भी तेज हवा से बेलेघाटा के खाल पार में जोर पकड़ने पर फटा झंडा मुरारी के हृत्पिण्ड की धड़कन लिये फरफरा कर उड़ता रहता है। उस समय हिचकियों की तरह एक आवाज उठती है। और विक्रम के तिमंजिले के कमरे की मुर्दनी मोमबत्ती की रोशनी में उस आवाज से मौत की गंध आती है। जाने कैसी खामोशी छा जाती है! पाषाण की तरह। अहिल्या की तरह।

अँधेरी रात कटती है चकत्ते चकत्ते होकर। रात के वजूद को फाड़ती हुई बेलेघाटा की ओर मुखबिरों की घूरती आँखों से पश्चिम के आदिम अँधेरे का सीना चीरती आती है।

दूर कहीं अजान का आर्तनाद—'अल्लाह इल्लाह मुहम्मद ई रसूल'।

अली का ध्यान आते ही पुलसीकल में मजदूर के बँगाले की तरह चिमनी के माथ पर बँधा झंडा याद आया और गोरा की आँखों में बीबी बगान की बस्ती में अली की झोंपड़ी का कूबड़ हिल उठा। अली की याद आयी जैसे गाल चपटी नाक। नाक की गुठली। रबरकल और रंगकल

ने सँडसी की तरह भूखी-नंगी बस्ती का गला दबा लिया है। सँडसी
तिकोन मे फँसा बीबीबगान के मेहनतकश का कलेजा धुक-धुक करता है—
ब्याह-शादी, निकाह और कव्वाली के बोल लेकर। और बस्ती की ना
जैसी गली के बीच उभरी नसो वाले हाथो के रोएँ झुलसाकर, धारदा
सलाख मे मास के टुकडे फँसाकर, चूल्हे की आग मे पकाते हैं उन्हें बीबी
बगान के लोग। जिन्दगी-मौत की छोटी-बडी लहरें उठाते हुए जिन्दा रह
हैं बेवकूफ़ इसान। गौरैया जैसे दुबले सीने के पिंजरे मे हवा भरकर कभी
कभी कोई बूढा कारीगर गाली देता है, थू थू करते हुए।

अब तक अली उठ बैठा है। तडाक से। लोटा लेकर मालगाडी
रेल-लाइन के किनारे गुसल करने गया। दो-दो बच्चो वाली जिस नाजिम
बीबी को पिछले महीने वह निकाह करके लाया है, वह अब चेहरा लटका
चूल्हे मे आग सुलगा रही है। इसके बाद भूसी-मिले माइलो-गेहूँ-जौ के मिले
जुले आटे मे एक लोटा पानी उँडेल देगी। उसके बाद हिलते हुए उसे गूँद
बैठेगी। उसके बाद लोइयाँ। उसके बाद रोटी। वही रोटियाँ गमछे
छोर मे बाँधकर अली काम पर जायेगा। नाजिमा मुहम्मद की पान
गमुटी तक साथ-साथ आकर अचानक पत्थर हो जायेगी। उस सम
मुडकर गली के नुक्कड की ओर देख अली नाजिमा के रूखे-दुखी ताव
चेहरे, दोनो बच्चो के चेहरे पर जुकाम के पतले सफेद दाग़ और फटी सफे
आँखो को देखेगा। दोनो बच्चो की आँखें खाल फाडकर निकली रहत
हैं। उधर देखते हुए अचानक अली की गुठली नाक के नीचे जूही की कल
की तरह हँसी खिल उठती है। परम आस्था की हँसी। अली उस सम
बिलकुल नाजिमा के बच्चो का बाप लगता है।

साउथ बेलेघाटा का समाचार पाँच कानो से होता हुआ कूरियर
होशियार कानो के इर्द-गिर्द चक्कर काट कर गन्तव्य तक आता है। औ
समाचार बिल्डिंग का सीना चीर कर हू-हू करके भेडो[1] की ओर दौड जात
है—ठीक उसी तरह जैसे खिदिरपुर-कॉलेज स्ट्रीट सियालदाह के मोड प
पुलिस के साथ मुकाबले के वक्त टीयर गैस का गोला पाँव के पास गिरत

1. [illegible]

था और चौपाटस के पास वाले रास्ते पर या नाले के किनारे फटी बोरी के टुकड़े से पकड़ा जाता था। जलती हुई गैस का मौसा। इंसान को रुलाने वाली गैस। तमाम बेलियाघाटा का सारा शोक-दुख भाप बनने की खबर की तरह बिल्डिंग तक पहुँचता है। तिमंजिले के कमरे में खबर पहुँची 'असी गिरफ्तार'। विजयदा की सीधी-सादी भोली-भाली बीबी छिरि भाभी ही खबर दे गयी। उसकी गोद में पुड़िया से बीमार लड़की का पिचका शरीर। छिरि भाभी की आँखों में अब खतरे का काजल लगा है। *काजल-लगी आँखें। सोनापुर की लक्ष्मी के पाँव रँगने वाले मोटे हाथ धान* के बोझ में लपकती आग देखकर और मजबूत। तेजी से सीढ़ियाँ उतर कर खतरे की खाई जैसा नाला छलाँग मारकर पार कर गयी छिरि भाभी। और चिथड़े-सी लड़की ने परम विश्वास के साथ माँ के कंधे की टेढ़ी हड्डी में मुँह गाड़ दिया।

असी के बारे में खबर सुन भभक उठा था गोरा का चोट खाया सीना। एक अनमोल सम्पदा खोकर वैधव्य के दुख से सीने को खोद-खादकर पाताल खोजा था। आकाश-पाताल। सोना की माँ की तरह विचित्र शोक उपजा था।

'मृत्यु से आने या बीमारी से मरने पर मन को फिर भी समझाया जा सकता था—यह जो विपदा ।

असी का बच्चों जैसा चेहरा और समझदारी की बात याद हो आयी। साथ ही गोरा का सोना भी याद हो आया। लड़खड़ाते हुए दोनों पाँवों से घर लौटने पर मन के रोटी की तरह फूल उठने पर आँखों के सामने हताशा का धुँधला आसमान लटका कर जैसे कोई गोरा के कान में सोना की बात कहता है। चाचादल का तटस्थ विवेक[1] हारमोनियम की तीन नम्बर रीड दबा रखकर एक हाथ पंख की तरह खोलकर टेढ़ा होकर दौड़ आता है और बोला, म म म।" हजार युक्ति तर्क सिद्धांत सब धागा तोड़कर असी के राजा की तरह आसमान में घूमते रहते हैं।

---

1 चाचा नाटकों का एक पात्र जो अन्य सभी चरित्रों के मन में उठने वाली बातों को मंच पर बीच-बीच में आकर हारमोनियम बजाते हुए गा कर

साहम का वायलर सीने मे लेकर ए० वी० नाम का जो इसान हाई पावर का चश्मा पहनकर तूफान उडाये जा रहा है, उसकी बात याद आती है ।

नारानदा का मामला अलग है, उनकी वात दूसरी है । पर्वत की तरह स्थायी रूप से जमे हैं वेलियाहाट्टा के सीने पर । अटल, फिर मिनती भाभी की तरह शान्त चेहरा, जैसे इसान का हृदय । आदमी है ही ऐसा । आमरण ऐसा ही रहेगा । जव गोरा ने सुना कि कॉलेज के छोकरे वीरू ने पहली वार पकडे जाते ही सव-कुछ उगल दिया है, पूरी एल० सी० (लोकल कमेटी) का नाम ही खोल दिया है तो क्या उस समय भीतर-ही-भीतर अविश्वास के कँटीले पेड ने सिर नही उठाया था ? कामरेडो के शरीर की गर्मी के भीतर बैठकर भी वर्फ मे दवी मछली की तरह आँखो की वर्फ नही गली ?

और वुडवक आतक से दोनो हाथ लूले हो गये थे, 'क्या इसका अन्त मौत मे है ? क्या ए० वी० के मन मे भी यही प्रतिक्रिया चल रही है ? सिर्फ़ सुर अलग है, वैष्णव मार्का—मरण रे तुहु मम श्याम समान ।'

सबसे छिपाकर मन के अन्दर वात उभर रही थी । खुद से भी । जव कि गोरा को मन की गहराई से पता था—इसका नाम डर नही है । डर—भय अलग चीज है । व्यक्ति का घुटना काँपता है। वेजान-वेजान-सा लगता है । या तो अपने को वचाने के लिए चूहे का विल खोजता है, नही तो खून-खराबा कर वैठता है । गोरा मे इस सब का अशमात्र भी नही है । गोरा का मामला और भी जटिल है । (अव वह खुद ही अपने मन की चीर-फाड करने लगा है) और भी गहरा ।

एक्शन । सग्राम । सशस्त्र सग्राम । फुलझडी की तरह । आतिशवाजी की तरह । सग्राम फूट पडा था । गाँव-गिराँव मे और अजीव शहर कलकत्ता मे । एक्शन का फव्वारा छूटा था पिचकारी की तरह । हालाँकि भाटे के मरे हुए चाँद ने ज्वार का मुँह घुमा दिया है अव । अव हवा मे उकसाने वाली गैस की कमी है । अव चुने हुए कामरेडो की लाशें सख्त जमीन पर विछायी जा रही हैं । जेल की दीवार, प्रकृति विज्ञान मे पढे कलसीगाछ की तरह गध सुँघाकर एक-एक जवान लडके को पेट के अन्दर खीच रही है । लोगो की जवान पर कोई और वात नही है । लडको की भीष्म-प्रतिज्ञा देखकर जो मध्यमवर्गीय वाप कभी थरथर काँप उठा था, अतीत की

स्मृति टटोलकर जिसके कानों के दुबले परदे पर आतंका का डंका बजा था मगर अब ? अब उसी के सामने उसी के हाड़-मांस से बने ये सब जीवित प्राणी गोलियों की आग में जीने की सफ़ल हड्डियाँ निकाले चीख़ रहे हैं बाबा ! देखो मैं मरा नहीं हूँ । देखो-देखो मैं किस तरह जिन्दा हूँ ! मुनाफ़े के लिए जिस मुल्क में दवाइयों में मिलावट की जाती है जिस देश के सीने में छिहत्तर का अकाल घुन की तरह अभी भी जमा हुआ है निहायत ही ईमानदारी से सारी जिन्दगी बिताकर जिस देश के प्रति पवित्र प्यार को जिस में छुपाकर भी जो आदमी अक्षम है वह ऐसे समय म क्या कर सकता है ? जिसके लिए आत्महत्या असंभव है जबकि रुलाई का समुद्र झुलसाने वाली धूप में सूख चुका है उस पिता के दमे का खिंचाव तब कैसे संभलेगा ?

प्रेम पुजारी' नामे एकतान के दौरान जमने से पैदा हुई गन्ध अभी भी गोरा की नाक में समयी है । पतंग की तरह कन्ने खाता हुआ बीक पार्क सिनेमा-हॉल के काउंटर पर टूट पड़ा था "चीन-विरोधी झूठा प्रचार जला डालो फाड़ डालो !" काउंटर से टिकटों की गड्डी लेकर फाड़कर हवा में उड़ा दी थी बवंडर की तरह । उन कागजों के टुकड़ों मे उड़-उड़कर दीवार पर टँगी हुई नायिका की मदनमयी देह का लज्जा-निवारण किया था । सात आठ लोगों के स्वाद में नफ़रत और जोश धधक रहा था । जबकि हॉल से दो हाथ परा पीछे हटकर जीवरों के साथ लड़ाई शुरू हो गयी थी और गोरा महज एक पेटी लेकर कमर घुमाकर खड़ा हो गया था । उस समय पता नहीं था वह भीगा हुआ 'मास' है । उससे चिनगारियाँ बिखेरते हुए किरचें नहीं उड़ेंगी जोवर का सीना फाड़कर जमी हुई नफ़रत का कोई भयंकर गर्जन नहीं होगा । उसकी हथेली गरम हो उठी भड़कने वाली आग धुएँ के जाल और विस्फोट की बात सोचकर—जैसे मुट्ठी में ही एक ज्वालामुखी फट पड़ेगा । अपने को बचाते हुए होशियारी के साथ जोवर लोग धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं और पीछे हटते हैं । अचानक दाँत भींचकर गोरा ने 'मास' फेंक दिया । दंगली जवान दस हाथ पीछे हट गये जबकि 'मास' धीरे-धीरे आश्चर्यजनक कोमलता से धरती छूता हुआ लुढ़का । गोरा के दोनों हाथ खाली हैं । उँगलियाँ खुल गयी हैं । असंभव साहस के साथ

फेंका गया सुतली वाला 'माल' सामने पड़ा है। फिर भी गोरा सिर्फ इस-लिए भाग सका था, क्योंकि खोचर लोग घबरा गये थे। उसके बाद खाली पर्जे की ओर देखकर कितनी बार भीगे हुए 'माल' की बात याद आयी है, बाद के दिनों मे जलने से बने घाव कितनी बार सीली हुए सुतली के 'माल' की बेजान स्मृति लिये ताजा हो उठे हैं।

रात ने धीरे-धीरे चलना शुरू किया है। मोमबत्ती के काले धागे की तरह असह्य रात भी जलकर खाक हो रही थी। तिमंजिले के कमरे को इन सबका खयाल नही है। वहाँ अँधेरी रात मे जगली इसान की कहानी चक्कर खाती हुई आगे बढ रही है। इसान कब पाँव पर खडा होकर, पीठ तानकर, सिर को झटके देकर उठ खडा हुआ, कब उसकी जबान से बोल फूटा—यही उसके अतीत का इतिहास है। पत्थर के भोथरे हथियार हाथ मे लेकर भयकर जानवरो के साथ लडाई। इसान का सग्राम, सग्राम का इतिहास। मत्तर के बेलियाहाट्टा की इस बिल्डिग के कमरे मे पगली हवा चक्कर खाते हुए सूखे पत्ते, घास-फूस उडाकर लाने लगी।

नारानदा के जबडे की चिबुक-हड्डी अभी भी शात है। सुन्ता रहा है, "सग्राम चल रहा है दास समाज से स्पार्टकस ।"

सूखे की आग से जला मोतीहारी थाने का कनाई आजि, खेसारी सिझने की भाप और अडतालीस की लडाई छेडने के गीत से जिस नारानदा ने बात का बीज बोया था, वही अब सारी मानवजाति के वर्ग-दुश्मन के खिलाफ लडाई के हजारो सालों के इतिहास की जीवन्त बातो को सोचते और सुनाते हुए गुरु-गभीर है। मजदूर का विजय-गीत, वीरता की गाथा।

हवा के झोंके से अचानक मोमबत्ती बुझ गयी और पानी-सी सुबह, धुआँ-धुआँ-सी सुबह फिसल पडी तिमंजिले के कमरे मे। मरी-मरी-सी रोशनी का एक टुकडा लीफलेट के बोल्ड टाइपो पर आ गिरा है 'शहीदो का आत्म-बलिदान व्यर्थ नही जाता।' 'व्यर्थ' शब्द फिजूल मे पानी-स्याही-धूल से मलिन हो गया है। सारे कमरे को घेरे धूल की गध। हवा के झोंके रह-रहकर उसे उकसा रहे हैं। किसी ने लम्बी साँस ली। बूडो की जोरदार आस्था चरमरा उठी, "अलबत्ता कमूनिस होने के लिए सब-कुछ चीर-फाड-कर जानना पडेगा। यह सब-कुछ मन्त्र-तन्त्र झाडफूंक नही है ।"

सियाराम तैयार ही था उसका पतला हाथ हिला 'फिर तो हाथ में बत्ती लग जायेगी।

नेपु के दुख-क्षोभ के पाताल में दबकर शान्ता के पतले होंठों पर स्पष्ट हँसी "नहीं नहीं नहीं ऐसा क्यों? असली बात जानकर उतरना पड़ेगा किसकी लड़ाई कौन साथ देगा किसके साथ लड़ाई है—ऐसी बहुत-सी बातें हैं। बाकी सब चलते चलते सीखना पड़ेगा।"

नेपु को खींच ले गये। उसके बाद एक भी रात ऐसी नहीं कटी जब शान्ता की आँखों में पानी के चिह्न न हों। विचित्र कोमल चिह्न। नेपु भी वैसा ही था। शादी के दिन ही होंठों के कोनों में हँसी बिखेरे मालदा जिले में कुँवारी चोटी बँधी मेज़ पर से खेत-मजदूरों की हँडिया के भात में से हिस्सा लेने को दौड़ा था। खेत का भात न खाने पर नेपु की तसल्ली नहीं होती। इतनी सोच इतने विचारों के अहिल्या-पाषाण से लाल हाथ नीचे मिट्टी में आसन्न भूकंप की संभावना लिये शान्ता के मन की किसी गुप्त दरार में एक बिन्दु पानी जमा रहता है। जबकि लड़की का चेहरा रहता है वसुन्धरा की तरह सहनशील निर्विकार। दो घुटने मोड़कर तनकर बैठी है। कमर बाँधकर उतरने की ताकत और उसकी माँग की धागे की तरह क्षीण रेखा में जोरदार आस्था।

खिड़की के माथे पर धनुष-डोरी की तरह तने एरियल के तारों में शोक-चिह्न की तरह काला रंग अभी भी लिपटा हुआ है। और भेड़ी के सीन से शिकारी बगुले की तरह हवा उठकर आ रही है। हवा जैसे उनके सारे शरीरों पर पाँच-पाँच उँगलियों की छाप जमा रही थी। उँगलियों की पोरें। सारी रात मीन-मेख सोच-विचार, गहरे तर्क और अजाने ज्ञान का स्वाद नीम के कँटीले सिरे पर लेकर आँखों में सपन की अल्पना उकेरकर अब भोर होने चली है। रात भर बजने का सुर बजता रहा है। कहीं जैसे छाती फाड़कर बासी प्यास लेकर जान धुकधुक कर रही है। खिड़की जैसे दोनों हाथ ऊपर उठाकर इनकलाबी नारे लगा रही है। इमाम द्वारा आप के आविष्कार की कहानी कम्युनिस्ट इश्तहार के 'दुनिया के मजदूरो एक हो' नारे में आ टिकी है।

सिगरेट का कश खींच उसे नाखूनों की पोरों से सु

"कलकत्ते मे रहने पर गलती सुधारने का समय नही मिलेगा, ऐसा लग रहा है। निश्चय ही बीध डालेंगे ।"

किस तरह चीर-फाडकर सभी कुछ को परखा गया है। सभी कुछ समझने के लिए चीर-फाट के अलावा और चारा भी क्या है! विल्डिग की धुंधली सुबह की रोशनी मे सुकु समझदारी लिये अब तक चुपचाप बैठा है। कुछ कहना चाहता है तो खच्च से जैसे कुछ बिध जाता है। बात नहीं निकलती। इसीलिए सुकु ने घूमा-फिराकर कहा। उसने जितना समझा है, उसी को लेकर वह मोतीहारी जाना चाहता है। या वहाँ जहाँ हँसुए से धान काटने की खस-खस आवाज जगती है। झुड बाँधकर मजदूर लोग काम पर जाते हैं। सुकु दौडकर उनके दल मे मिल जाना चाहता है। वू से जान लिया है कि खातमे का वारंट लेकर बेलियाहाट्टा को छानते हुए पुलिस सुकु की खोज चलायेगी। कलकत्ते मे रहने पर, आज या कल, किसी दिन बीध डालेंगे। और एक बार पकडे जाने या गोलियो से बीध दिये जाने पर सच्ची दिशा मे इसानो को खडा करने की फुरसत जिदगी मे नही पा सकेगा। एक गलती की कीमत एक जिदगी से चुकानी पडेगी—जो जिदगी बहुत पहले ही से आधी समझकर आधे आवेग मे मजदूरो के हित मे समर्पित है।

सुकु की बात पर जैसे स्नेह, प्यार, विश्वास के स्वर्ग-धरती-पाताल उफन पडे, "जायेगा मेरे साथ!"

नारानदा के आश्वासन पर लडके का स्वर बच्चे जैसा हो उठा, "अगर पहले से जरा-सा भी जानता!"

फिर फर्श पर लकीर खीचना। जबकि इससे भी थाह नही मिलती। सुकु की मुट्ठी खुली और उँगलियाँ धूल-भरे फर्श की दरार मे फैल गयी। शान्ता की आँखो मे जाने कहाँ से एक बूंद चमक उठी, बालू के कण की तरह, निर्मल पानी की तरह। कही जैसे दर्द की खान है। वर्गगत नफरत की धधकती आग। आग की ज्वाला। और जननी के सजल स्नेह से भीगी, ताड के पत्तो से बने पखे की हवा घर के अन्दर तितली की तरह फरफराने लगी। टूटे पखे की डडी से जाने कैसी कैंच-कैंच की आवाज! और पखा

मुकु के बदन पर सटते ही शान्ता ने फ़र्श पर उसे [illegible] फिर था।

सत्ताइस-साला मट पर हाथ रखकर मिचारल खड़ा हुआ है। दुश्मन का फाड़ डालने के लिए उसके दाँत ही काफ़ी हैं। [illegible] नये सिद्धांत इतिहास मिचारल के लिए फ़ालतू हैं। अपने शरीर के [illegible] आकांक्षा से जिस शिशु का जन्म दिया था उसी की बाढ़ [illegible] हू-हू करती दौड़ रही है। सुकु के चेहरे की ओर वह नफ़रत से देख भी नहीं पा रहा है। अब तो सिर्फ़ रात गुज़ारने की बात है। वरना मिचारल एक क्षण के लिए भी यहाँ नहीं टिकता। असल में रात के खत्म होने के वक्त ही डर अधिक होता है। रात के अंतिम पहर में सशस्त्र [illegible] की तरह सबक सीखकर [illegible] चोर की तरह चुपचाप हमला करते हैं।

जबकि मूल स मार बेसमान्ट में बमपाटा का ममक-मगी दीवारों पर अभी भी स्टेनमिस की छाप में माला की तसवीर चमक रही है जहाँ अत्याचार है वहीं प्रतिवाद होगा। 'पेग' का गहरा दाग सीने पर लेकर सी० आई० पी० राज [illegible] रहा है। बेसमान्ट को जरा-सा छूते हुए। [illegible] [illegible] में इस गन्ध में बस जाते हैं। गीली आँखों में [illegible]। दो हाथ के थामने पर ही मुरारी का [illegible]। [illegible] पेड़ की [illegible] मिटा नहीं है। [illegible] पाँव जमाकर बैठा है। [illegible] की मसी [illegible] है। शायद उस [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] है, मानो है...

कमर कसकर फिर संग्राम के अंकुर फूटेंगे तपते सूर्य की उम्मीद में। कांसे की एक थाली भात की तरह सूर्य (क्रांति के प्रतीक के तौर पर सूर्य का उगना घिसी-पिटी उक्ति है, फिर भी वे लोग इसे सोचे बिना नहीं रह सकते) धीरे-धीरे आगे बढ़ेगा, बँटवारा करके खाने के लिए। और यह विराट देश सिर उठा सारे अंग-प्रत्यंगों के साथ उठेगा। यही तो स्वप्न है। यही तो गोरा और सुकु, निवारन, नारानदा और शान्ता की जिंदगी है।

बिल्डिंग के तिमंजिले का कमरा, बेलियाघाट्टा के माथे पर हवा में निशान की तरह, अनियंत्रित आवेग से थरथर कांप रहा था। "हम लोगों को एक स्टडी-सर्कल खोलना चाहिए ।"

शान्ता की इस बात को पूरा करने के लिए और भी कितना कुछ जरूरी है। लड़की पागल की तरह बोले जा रही थी। तिल-तिल करके तिलोत्तमा[1] बनाने के लिए छह कारीगर अपनी जली जिन्दगी के शोक-दुख-आनंद और आग के पँचमेल अनुभव में, अपने हाड़-मांस की मिट्टी को पीसकर, छानकर, घोलकर एक दुर्लभ मूर्ति बनाने में डूबे हैं। रह-रहकर वे मार्क्स, लेनिन, स्तालिन की बातें कर रहे थे। और इस विशाल देश की बात। एक सही रास्ता पहचानने-खोजने में, तिमंजिले के कमरे में एक सूक्ष्म बिन्दु पर सारी अनुभूति केंद्रित कर, इंद्रियों के अर्घ्य से सींचने में मगन हैं। आँखें सुइयों की तरह चुभ रही हैं। विपण्ण धूल, फटे कागज और मुर्दा रोशनी में वे जैसे कोई खोयी कील या आलपिन मरम्मत के लिए खोज रहे हैं।

लीफलेट के ढेर पर हवा लोट-पोट मचा रही है। सारे कमरे में दो-चार लीफलेट और फटे कागजों के टुकड़े उड़ते फिर रहे हैं। शान्ता के बालों में तिनके। तूफान की-सी गंध। जबकि उन्हें होश तक नहीं। उनके सीने के बायीं ओर हृत्पिंडों में स्वच्छंद उतार-चढ़ाव, रक्त की सफाई-धुलाई। और शांति एक आश्चर्यजनक शांति। झर रही थी सुकु की बातों से। क्रांति जैसे एक शिशु का जन्म है ।

उसके बाद विराम। बातें टूटती, गलती जा रही थीं। कान के पास

---

1 अद्वितीय सौन्दर्य की प्रतीक, एक मिथिक नारी।

टिका हुआ आस्था का स्थिर हाथ। मारानवा की सहाती मूँछों की दरार में आग की लाल बिन्दी। गोरा की सपना देखने वाली बड़ी-बड़ी आँखें। भुकु की नाक की कोर पर थकान का पसीना मोती जैसा पसीना। निवारन के सीने में कच्ची आग। और शिशु की तरह शांत मन्टू का चिकना चेहरा। बूढ़ा की खिलती हुई हँसी विचित्र खुशी से ताली बजाकर जैसे नाच रही हो। रात-भर के कठिन अन्वेषण में उन्होंने खुशी का आविष्कार किया था क्रांति की टेढ़ी-मेढ़ी कठिन यात्रा करते हुए। और अब सफ़ेद भात की तरह सुबह के समय खुशी। क्रांति। क्रांति जैसे कमल के पत्ते पर बूँद जैसी झिल मिला रही है झिलमिले के धूसर कमरे में।

माँ की छाती से निकलने वाली सफ़ेद दूध की धार-सी भोर अभी नहीं हुई है। हत्यारे मुंशी रशिया के दमाम और गड़गड़ाते सम्पट शराबी के भसम फिरन सायक छिटपुट अँधेरा अभी भी धमधमाहट की तरह घूम रहा है और टर्रा-टर्रा कर रहा है। पुलिस लोकर सी० आर० पी० वालों की संगीनें और भारी भरकम सिपाही-बूट ठीक ऐसे धमक ही अँधेरे के परदे में से कन्नी काटते हुए, घुटना ठमते हुए चलते हैं। बड़ी-बड़ी आँखों को घसीटते हुए। सामने दो बड़े-बड़े कुत्ते सू सूँघ रहे हैं। बेलेघाटा की गन्दगी में सड़ी मछली और मरी गाय के पेट में नाक घुसेड़कर सू सूँघ रहे हैं दोनों कुत्ते। और सारे बेलियाघाटा की बान पार्टी की रीढ़ की हड्डी की तरह जमी हुई भूख की असीम ताकत की तरह खिसियाए मुँह बाये हुए। सफ़ेद लिबास में एक दरासी पुलिस वाला लोकर सबा हाथ लम्बी बीम निकालकर गर्म हवा छोड़ने लगा। कोल कम्पनी की बिस्कुट की गाड़ी टम्पो ठसा और एम्बुलेंस के गेडलास के बीच से राइफ़ल की नली निकाल कर जाते जिसने नाइटगाउन किशोर के गले पर बूट जमा दिया साला! चिल्लाते ही गोली मार दूँगा। जल्दी बोल कहाँ है सब जल्दी जल्दी!

किशोर ने दस सत्तर में तेरह में पाँव रखा है। तेरह साल की उम्र में ही पथरीली रातों में जागते रहना और पहरा देना सीख गया है। ए० सी० के साथ लड़का छाया की तरह रहता है। छाया या काया? ए० सी० के अपना शरीर की छाया में हाड़ माँस के माये में जिस शिशु ने बसेरा

वनाया है, क्या यह वही किशोर है ? इस कच्ची उम्र मे ही लडके ने, वडी-वडी आँखो मे नींद की मरस नमें तोड, जाने कव धनुप की डोरी वांधी थी ! कहता है, पिंजर की हड्डियाँ खोलकर दुश्मन का कलेजा छेद देगा। फिर भी लगातार तीन रात जागने के वाद शायद जरा झपकी आ गयी थी, मीने की खोखल मे फँसे नीले सपने ने शायद पतगे की तरह पखो की आवाज की थी। और नन्हे लडके को झपकी आयी थी । झपकी आयी थी धूल की गन्ध उडाकर तिमजिले के छोटे-से कवूतरखाने मे। जली हुई मोमवत्ती के काले पलीते के पिघले मोम पर लीफलेट के 'शहीद' शब्द के ऊपर। पुराने निपिद्ध इश्तहार की वू मे।

'सखिया' और सडी-गली मासल 'हिंसा' के निष्ठुर शब्द लेकर कहीं जैसे आग फुफकार उठी। साँप के फन की तरह। पतली चिरी जीभ मे। जहरीला डक। किसी निष्ठुर रमणी का वदसूरत काला तिल, तिल पर वाल सरसराने लगा। 'खा, खा, वेअकल खा। ! फँस-स-स-स !'

दोनो हाथो से वेलियाहाट्टा का नरम शरीर जकड लिया। खून की गर्मी ने शहीद-गन्ध फैला दी। गरम सीसे की गोली से वे लोग वेलेघाटा मे कत्लगाह का जला हुआ चेहरा उकेरना चाह रहे थे। एक इसान की आँख-नाक जलाकर-झुलसाकर, वेलेघाटा के सीने पर उसका चमडा तानकर फैला देना चाहते थे। सगीन की नोक पर उसका सिर काटकर उसके नीचे लिख देना चाह रहे थे 'जो सूअर के वच्चे, हरामी की औलाद क्राति करने चलेंगे, उन्हे इस तरह ।'

गभीर वेलेघाटा मे रहने वाले सरल-सीधे इसानो की घर-गृहस्थी मे प्यार और नफरत एक ही डठल मे लगे जुडवाँ फूल है "भागिये। भागिये। कामरेडो भागिये !" 'कामरेड' शब्द के धीमे उच्चारण मे तेरह साल के लडके ने सारी जिन्दगी का प्यार, प्यार की गहरी निष्ठा उँडेलकर अपनी मातृभूमि भारत के सीने से, अपने ही रक्त के लाल कणो से भीगी एक मुट्ठी हरी घास उखाड ली। वह घास लडके की ढीली मुट्ठी मे, विजयदा की काली-कलूटी सूखिया-ग्रस्त लडकी की मगलकामना मे वेलेघाटा के जले हुए सीने पर फैल गयी। और वेलेघाटा शहीद की इज्जत लेकर स्थिर हो गया। वेलियाहाट्टा, पुतलीकल का वेलियाहाट्टा—वही जो ख्वावो

की पुतली बनाता है। इंसान के सपनों से रची गयी पुतली। बलियाहाट्टा की कसपाड़ की धसी आँख उकरी नहीं था सकी क्योंकि मेंढकों के मुंड की तरह बसी चपटी बस्ती में एक काला गन्दा नंगा लड़का बार-बार 'उँया-उँया' करके चिल्ला पड़ा। भूखे पेट पर लात मारकर मजबूत इंसान अभी भी मामा मारते हैं। दिल्लगी करते हैं।

बहरहाल बलियाहाट्टा का ऊँचा सिर। किशोर नाम के लड़के के खून से भीगा हुआ बसेघाटा पाषाण की तरह खड़ा रहा। पास के घर की किसी एक खिड़की से बेमतलब की किसी जली किस्मत वाली माँ ने लड़के का नाम लेकर पास से पुकारा 'मुन्ना रे!'

और रिवाल्वर की गर्मी हिसहिसा उठी।

तीन चक्कर खाकर औंधे गिरने से पहले मुकु के गले का साइरन फट गया, "अम्मल मारो गुम-गुम औंधें!

सत्तर की मरी सांस उमड़कर बिल्डिंग में हत्याकांड। अखबार के बदरंग पीले पन्नों में संघर्ष की पुलिसी रिपोर्ट। और तिमसिमे के अड्डे में खून के काले धब्बे। और अन्त में सुबह हुई। सार्ज। सफेद मोम की तरह एक बूंद आँसू की तरह घास पर चमक उठी। भेड़ी की नम हवा में सुबह की गन्ध।

किशोर की लाश की बगल में मुकु बूढ़ो और निवारन को एक कतार में समाया गया था। लाल्टा को बचाने में निवारन पकड़ा गया था। अब तक लाल्टा शरणार्थी कॉलोनी के निरापद शेल्टर में पहुँच गयी होगी। बलकत्ते की तरह बैन का काला रंग गोरा मारानदा और माटू को पेट के भीतर लेकर बेचैन हो रहा था। और तमाम इंसानी आशा-आकांक्षाओं को अपनी आँख की पुतलियों में लिये सुकर्मों की कतार में पाँच-पाँच जिन्दा फेफड़े स्वाभाविक गति से फूल पिचक रहे थे। मुकु भी यही कहता था "दुश्मन की बुलेट के सामने खड़े होकर मरा फफड़ा अगर एक बार भी हिला तो मैं कम्यूनिस्ट नहीं हूँ। या समझना मेरा ईमान नहीं है।

हाड़-मांस में पार्टी को जिन्दा रखने की निविड़ आस्था समेटे पाँचों की देह बेसेघाटा की धरती पर बह गयी। फिर भी बेसघाटा की जबान पर कोई शिकवा नहीं। मिट्टी की गहरी परतों में यह सारी कहानी प्राचीन

शिला की तरह स्थिर। बारूद की गन्ध नाक के सिरे पर नचाते हुए जैसे किसी ने हू-हू करती एक खाली हवा उगल दी और भात के लिए तरसते शरीर के कोषों में ज्वार लाकर भी बेलियाहाट्टा गभीर है। भयानक रूप से गभीर।

जबकि बेलियाहाट्टा का धू-धू करता मैदान, बालूचर का उदास उदार सीना, नैडा बस्ती के जले हुए चमडे के नीचे अनगिनत सकेट[1], जालकाटी[2], कटोरी वाले माल[3] और प्लास्टर पेटो[4] ए० बी० ने डम्प किये थे। बैटरी के काले बक्से के भीतर चार ताजे माल अपने हाथ से बनाकर, तपसे के डेढ हाथ वाले कबूतरखाने मे पटी खटिया के नीचे छिपाते हुए बगल की खोली की मौमी को बुलाकर नुकु ने कहा था, "कमरा साफ करने आओ तो इधर खीचतान मत करना।"

लडके जब-तब आते थे। एक पतली किताब खोलकर एक-दूसरे के हाथो से लेते हुए पढते थे। सुना है, इसान का दुख मिटाने का सीधा साफ रास्ता किताबो मे लिखा है। मौमी के कपाल पर लगी सिन्दूर की बिन्दी पसीने की वजह से पसीज जाती थी। पसीना छूटता था लडको की बातो से। उनके हावभावो ने, "पेट का लडका न होने से क्या हुआ, पर तुम लोगो का पार नही पाती। जरा बता तो सही, क्यो?"

सीने के भीतर बारूद का कारखाना। और जन्म की नाल काटने वाले दुख-दर्द की बात लेकर भी पुतलीकिल का बेलियाहाट्टा मुकु, निवारन, बूडो और किशोर की लाश की तरह स्थिर। हवा नही है। कही भी एक पत्ता नही हिल रहा है। वैन के इजन की दबी आवाज उठ रही है लगातार। और कूरियर की जबानी समाचार पाकर ए० बी० शायद पागल की तरह बिल्डिंग की ओर दौडता आ रहा है—जले हुए शरीर को पटकते हुए। शायद दॉतो की दरार मे आखिरी पेटो फाड देगा।

किस जमाने मे जगल-झाड-झखाड साफ करके इसान ने यहाँ सिर उठाया था, कौन जाने! बेलियाहाट्टा के कठिन रहस्य का किसे पता है? कारखाने के मजदूर-मजदूरनियो का बेलेघाटा। मस्ते का बेलेघाटा। पुराने गीतो का बेलेघाटा "जिसका न हो पूंजी पाटा—वह रहे बेलेघाटा।"

1,2,3,4 देसी बम—भिन्न-किस्म के।

थाने मे लाया गया। पुराने कागजों के बडल, चन्द मोटी-मोटी कापियाँ, डडे, मशीनें, राइफलें, फोन, बेंचें—सभी कुछ गाली-गुफ्तार की चोट से उलट-पुलट गया। कम्बल डालकर थोडी देर तक पीटा गया। उसके बाद कचूआ। पाँव के तलवे पूडी की तरह, गोद की तरह रात-भर में फूल गये। रात कटी लॉकअप की पेशाब की गध और मच्छरो के डक और बेजान बुखार-भरी नीद के बीच।

उसके बाद जिरह। इटेरोगेशन। गिद्ध की चोच की तरह अफसर की नाक। लिपा-पुता चेहरा। चेहरे के एक-कोने मे धुंधली अनास्था और सदेह के घिनौने दाग। चाँदी के पुराने रुपये की तरह चमकती हुई लालची आँखें। और खरखराती हुई जीभ से गालियों की बौछार।

चीटियो की तरह सभी अगो पर से रेंगती हुई मौत आ रही थी। गोरा की रीढ की हड्डी, फूले हुए पाँव के तलुए, उपाडे गये नाखूनो की उँगलियो से मरमराती हुई दिमाग़ की ओर बढ रही थी। सियालदाह के पतले-दुबले, बीमार कुली के माथे पर ढाई मन की आलू की बोरी की तरह भारी माथा बेलेघाटा थाने के लॉकअप मे गेंद की तरह, रबर की गेंद की तरह, मौत लेकर उछलने लगा। और क्या! एक किस्सा खत्म होने लगा, दुरमुट ने पिटी हुई एक आस्था, पच्चीस-छब्बीस साल की एक जिन्दगी। लॉकअप की गजी दीवार, छिपकली की जीभ जैसे रोशनदान, जूँएँ और गाय के चमडे के बूट की आवाज, गोरा के इर्द-गिर्द हाथ उठाये नगे नाच रहे थे। स्मृति के धागे, गाठें, जालकाटी लाँघते हुए गोरा जैसे बेलगुडा मैदान की ओर बढ रहा है, जहाँ पेड के नाम पर एक टाँग मे खडा बकफूल का पेड जम्हाई ले रहा था गहरे आलस से। होमियोपैथी का बक्सा जिस बीमारी को जिन्दगी-भर दूर नही कर सका था, उसी बीमारी के साथ टक्कर लेकर गोरा जैसे दस-बीस लडको ने सोचा था 'इसका मतलब है जिन्दगी। मुल्क का चेहरा बदलना पडेगा।' सफ़ेद होठो पर विटामिन की कमी से बने घाव को फैलाकर माँ कहती थी . "देख, तेरी बुआ का लडका एम० ए० पास करके कॉलेज मे पढा रहा है। हम लोगो मे भी तो जरा उम्मीद जगती है।" गोरा उस वक्त उस नारी की ओर सीधी रेखा मे देखता था "मैं भी वैसा कुछ बनूं, उसके बाद गरीब-दुखियो को थोडा-बहुत देखूं, यही न?" और

तेइस नम्बर की खारखस्त दीवार के सहारे चलकर लँगड़ा समाचार जब घुटनों पर टूट पड़ा तो गोरा को गर्भ में धारण करने वाली माँ के सफ़ेद भाव सारे बदन-भर में फैल गये और पूर्वी बंगाल के विलापी स्वर में फूटे। "क़िस्मत में यह भी रहो !"

नहीं जानती, नहीं समझेगी पेट के लड़के ने क्यों वह जोखिम उठाया था ?

बीच में एक आवाज़ हुई हुड़ से हवा खींचने की। सोफ़्लाप। गोरा बाद मुहल्ले के अधेड़ उम्र के एक किरानी की तरह भोले-भाले चेहरे का एक इंसान उसके सामने था। बीच में टेबुल की चमकती वार्निश। उस चमकते रंग के ऊपर खुली हुई एक कापी और आदमी का उलटकर रखा हुआ चश्मा। चश्मे की काली डंडी और ज़ाहिरी काँच। चश्मे ने गोरा के बुख़ार से तपते सफ़ेद चेहरे और माथे के कटे दाग़ की ओर देखा था।

"पहले मूँछें रखते थे न ?

'हाँ।"

"लीजिये चारमीनार पीते हैं न ? बंगवासी से पास किया कॉलेज यूनियन के नेता रहे अचानक यूनियन क्यों छोड़ दी नहीं छोड़ी ? अच्छा अच्छा आपका थीमजेल क्या कॉलेज में ही किस बात से पहले प्रेरित हुए यानी हाँ मुल्क की हालत तो वाक़ई दयनीय है एक बदलाव।

शरीफ़ आदमी जैसी बातें दरजी के फीते से नपी मुसकान पैन के निचले हिस्से में सोने के पानी की खस-खस आवाज़ चश्मे के बैनमुमा काले रंग के अन्दर से निकल आया एक जोड़ी बूट एकदम अचानक।

'कोर में कौन-कौन थे ?

"मैं कोर मेम्बर नहीं हूँ।

'ए० बी० का शेल्टर कहाँ है ?

'सड़क पर मैदान पर।

'तेरी माँ को छोड़ दिया है बगदा टें-टें की तो ।"

कमर से ऊपर पूरा कपड़ा उठाकर, अंडकोष सहित यौनांग गोरा के मुँह के सामने लाकर अफ़सर (एस० बी०) अपनी जाँघ पर थप्पड़ मारने लगा "पी साला पी मूत पी !

घोड़े की तरह आदमी का चेहरा और आँखों के आगे कच्चे मांस की

तरह झूलते हुए अडकोष, सारी दुनिया को अलग कर कुत्सित जुल्म की तरह, वदसूरत मेढक के पेट की तरह हिलने लगे।

उसके वाद सव तेजी से जैसे हडवडाहट मे घटित हुआ। फ़ोटो खीचना, हाथो की छाप, नाप-जोख, जन्म के निशान की खोज, सी० आर० एम०। तीन-चार थानो मे खीचतान—लाल वाजार, लार्ड सिन्हा रोड। और एम० वी० की चमकीली तोद। फरेवी सौम्य चेहरा। और शराफत।

उनके वाद जे० सी०। जेल। कारागार। जेलखाना। पिजरा। पिजरे का पछी। किसने कहा था "कम्युनिस्ट का असली इम्तहान है कत्लगाह, जेलखाना और गोलियो की वौछार—"मन्टू या सुकु ने? वूडो या सोना ने? या कि सवो ने?" ठीक याद नही आता। कठ के भीतर काग पर किसने वात नचायी थी और नारानदा कहते थे "जिन्दगी-भर मजदूरो के झडे के नीचे रहना पडेगा, तव न?"

केस-टेवुल के डडे के आगे पहली गिनती देते हुए, उकडूं वैठे गोरा से नारानदा की भेंट हो गयी। नारानदा का गोरा से पहले ही प्रेसीडेंसी जेल मे चालान कर दिया गया था। जेल के सातखाते मे। अडतालीस के कामरेड लोग भी वहीं रहे थे। और सैतालीस से पहले ए० वी० के एनार्किस्ट पिता ने एक गोरे साहव को सातखाते की सीढी पर थैले से पीटा था। सातखाते की सीढियो मे वदित्व की यातना मे अधकार वना रहता है। और दुमजिले के लम्वे हॉल मे दौड आती है आजाद हवा। हवा मे पुराने जमाने की गध। रात गहरी होने पर वह गध सीने मे लिये दो-एक अधेड उम्र के कामरेड हिजली के शहीदो की वन्दना करते हैं —

'हम लोग तो भूले नहीं शहीद ना ही यह वात कभी है भूलना
तुम्हारे कलेजे के खून से रगा है जो अँधेरा जेलखाना ।'

दो फटे कम्वल, कम्वलो मे अनगिनत छेद और थाली-कटोरी वग़ल मे लिये गोरा सातखाते मे हाजिर हुआ था। सातखाते के दाहिनी ओर वडा चौका। हजार आदमियो के पेट का जुगाड इसी वडे चौके से किया जाता है। सजायाफ्ता कैदी और फालतू मे पसीने से तर वदन। सात सब्जियो के डठलो-छिलको से वना शोरवा, शोरवे की विचित्र वू। पीछे दीवार।

एक शेल्टर मे तीन रातें विता कर, मोनुमेंट तक जुलूस मे चलते हुए

नारा लगाकर, या कभी एक कारखाने के भीतर साइन लेकर की गयी गुप्त बैठक में मारधाड़ के बाद दोस्ती हुई थी। कामरेड। पुराना कामरेड। गोरा को उसके बारे में कोई खबर नहीं थी। यहाँ इस जेल के अन्दर सबके साथ भेंट हो रही है। अभी भी जो बीस-तीस लोग छिटक गये हैं या जो लोग मारे गये हैं उन्हें निकाल दिया जाये तो बाक़ी सभी जेल में आये हैं। पाँचू के साथ केस-टबिल पर मुलाक़ात हुई थी। अनपढ़ पाँचू। चेचक के दाग़ों से भरा चेहरा। तीखी नाक। सख्त पंजा। देख-सुनकर मुँहफट मन्टू बड़बड़ाया 'कम्यूनिस्ट पार्टी ऑफ़ जल इंडिया।"

हर रविवार को बड़ा कम्बल। मतलब सातखाते के दोनों हॉल के कामरेड लोग एक कमरे में इकट्ठे होंगे। पहले सांस्कृतिक कार्यक्रम। जन का गीत इनक़लाबी गाना। क्रांति का आह्वान। उसके बाद कविता-पाठ। आलोचना। समालोचना। इसके अलावा हफ्ता भर इसी कार्यक्रम को छोटे पैमाने पर किया जाता है। उसका नाम है 'छोटा कम्बल'। यहाँ एक कम्बल भी रहता है। और चार-पाँच कामरेड। सबेरे नौ-दस बजे क़तार से सब तेल मलने के लिए बैठते हैं। मानो फ़ौजी क़िले में हों। लाल फ़ौज। और मुलाक़ात से लौटते समय सभी बाप-माँ भाई-बहन-रिश्तेदार की ज़बान से बाहर लड़ाई की आश्चर्यजनक खबरें ले आते हैं। और सातखाता [illegible] लगता है। लड़ाई की गर्मी में। जबरदस्त गर्मी। मारामारा गोरा और मन्टू की साँस बसने लगती है ऐसा ताप। और भी दो-दस [illegible] तपती है। सबने सोचना शुरू किया है।

और इतने सारे गरमागरम समाचारों के भीतर [illegible] की गोली से मरे किसी प्रिय कामरेड का चेहरा [illegible] भीतर टूट का समाचार सुनकर जेल कमेटी के [illegible] ख़ास पुराना चेहरा कठोर हो उठा [illegible] मुर्दाबाद!"

और वह स्कूली लड़का। पी० आ० [illegible] क़ैद नाराज़ विष्णु उसे अब तक [illegible] नहीं थे, दस में पैदा भी नहीं हुए थे। [illegible] एकनिष्ठ भक्त कौन? पुस-पुस और [illegible]

पक्तियो की पक्तियां गिनती थी उस लडके ने। और नीहारदा के साथ बातचीत मे उसने जाना था 'संशोधनवाद एक घिनौना कीडा है।' लिहाजा दांतो के बीच मे तिनके के तरह शब्द को काटने पर जाने कैसी एक सीधी लडाई की उपलब्धि होती विप्टु को।

जबकि भगीरथ की गंगा इस मुल्क की धरती पर छिपी बाढ फैलाती है, अन्त सलिला नदी की तरह जेल के चढे हुए तेवरो के बीच उथल-पुथल। फटे सीने मे मुक्ति के जयगान के बीच कही जैसे तपस्या और आराधना का शान शीतल सोता बहता है। नारानदा ने कब जबान खोली थी। बाहर की ताल मे ताल मिलाते हुए। बाहर की पार्टी। वहां भी संग्राम। धरती पर मौत के साथ जमकर जूझना, दुश्मन का मुकाबला और सही रास्ते की तलाश की लडाई। जेल के भीतर भी वही लडाई। जेल तोडने के लिए लडाई की पुकार। और जनता का मुक्ति आदोलन खडा करने की सोच में एक पक्ति मे बैठकर गिनती देते हैं। जेल-पार्टी टूट रही है। और दांत पर दांत जम रहा है। भाले की तरह दीवार लांघकर सवाल फन उठा रहे हैं। मिनती भाभी मुलाकात करने के लिए आयी थी "शाता ने हम सबको लेकर समिति बनायी है, सिलाई-कढाई करके चला रही हूं देखो, बीडी के दो बडल से अधिक नही ला पायी।" गोरा के साथ इटरव्यू करने आयी सोना की मां "अपने बाप को तो तू जानता है। बोला, औरत थाना-पुलिस क्या जायेगी मां तो रोकर ही परेशान मत होना। विजय छूट गया है। वकील लगाकर विजय तुम लोगो का केस लडेगा उनके लिए एक क्लब भी बनाया है क्या नाम हैं भला।"

"मीनू का क्या समाचार है? रुकु कैसी है? छिरि भाभी?"

"अच्छी हैं, सब अच्छी हैं सिर्फ सिर्फ मीनू का कोई पता नही है।" मुलाकात के अन्त में गोरा की आंखें जलने लगी, एक असहनीय जलन।

यूं मन को समझाने के अलावा कोई चारा नहीं है। मगर भीतर-ही भीतर और भी दो-चार जने फुंफकार रहे थे। भूख-हडताल लेकर सब-कुछ फट पडा।

मातखाते के राजनीतिक बंदियों की मर्यादा की मांग पर भूख-हडताल की पुकार। लगातार हडताल। पेट पर रस्सी बांधने वाली

सफ़ाई। इस पर सातखाते में उपल-पुथल मची हुई है। वेल-कमेटी टूटने टूटन की हुई। भीतर जाकर जान कैसी टूट-फूट शुरू हुई है! एक दम और भी खड़ा हो गया है। दीवार से पीठ सटाकर खड़े होकर कह रहे हैं 'जेल के अन्दर भी खातमे का अभियान चलेगा भूख-हड़ताल मिचमैनों की सफ़ाई है। नये बाबा गांधी की तरह मारानवा की देहाती मूँछों की दरार में ईमानदार हँसी 'जगह समझकर सफ़ाई। यह जेल है। भूख हड़ताल यहाँ ज़बरदस्त हथियार है।

यह जेल है। जेहल। घना खाओ यार समझकर जेल घटो कार खाना समझकर, बी कमाल लोग हर वक्त कहते रहते हैं। चोरी-उठाई गीरी करके महीने में दो-एक दफ़ा आते हैं साल में कम-से-कम चार छह बार तो जरूर। जेल उनके लिए कारख़ाना है और कम्युनिस्टों के लिए ?

—विश्वविद्यालय। यूनिवर्सिटी।

तेरह नम्बर वार्ड का पाँचू बात सुनकर खुश हुआ था। बहुत खुश। पांच की लिखाई-पढ़ाई बनाने की दुकान तक है। कान तक हँसी खींचकर यह बात पाँचू ने बतायी थी। उसके बाद अचानक गंभीर हो गया था 'माँ पौष भर खटकर तब दो दाने जुटाती थी लिखाई-पढ़ाई कहाँ से होगी गोराबा ? पढ़ने के लिए माँ कहती थी। मगर होश संभालते ही मैं काम में जुट गया। मोटर के पीछे। नापजोख मैं सब जानता हूँ। मगर हाँ तुम एक पंक्ति पढ़ने के लिए कहो तो बस ।

पहली गिनती से पहले मारानवा उठे। कपड़े का टुकड़ा लेकर सुराही में मिला ज़रा-सा तेल उस पर डाला। पलीता। पलीता जलाना आसान काम नहीं है। मारानवा माहिर है। नींबू की तरह दोनों गाल फुलाकर बीड़ी सुलगाने में लगातार फूँक मारने की तरह फूँक मारनी पड़ती है। उसके बाद कपड़ा सुलगने लगता है। उस धुएँ के भीतर दोनों आँखें लाल किये मारानवा फूँक मारते रहते हैं, 'गोरा डिब्बा रख दे।" तब तक गोरा ने लाल चाय का इंतज़ाम डिब्बे मे डाल दिया है। इस तरह वे लोग रोज़ आग जलाते हैं। और सोचते हैं इंसान को आग जलाये रखने के लिए कितनी कसरत करनी पड़ती है! पाँचू के पास एक बार तलाशी में दिया

सलाई निकली थी। वस। सीधे केस-टेबुल। कोई और होता तो लेंग
जमादार मेल मे डाल देता।

इसीलिए लत्ते मे आग। बीडी की फूंक। लगातार। तभी न ल
चाय। उम चाय की चुस्की लगाकर नारानदा का दिल खुल जाता थ
साफ हो जाता "विश्वविद्यालय का मतलब क्या है ? दुश्मन के जुल्म
पस्त नही हो रहे हैं, और जिस यन्त्र मे तमाम जनता को दबाकर रखते
उसका नट-बोल्ट-स्क्रू सभी की पहचान कर रहा हूँ इम्तहान दे रहा हूँ
बेइन्तहा बरदाश्त का और मन की ताक़त का। इसके अलावा यही
वक्त है, सारी किताबें पढ डालो, समझो और जान लो सभी कुछ।"

और काले पांचू को वडा-सा 'अ' लिखकर और उस पर अभ्यास क
के लिए देकर गोरा ने भाटपाड़े के खभे के ऊपर दूरबीन की तरह दो
आंखें लगा दी। लोगबाग आवाजें करते हुए चलते-फिरते हैं। गाडी
हॉर्न बजता है। अचानक मीनू का चेहरा कटी गरदन की तरह ल
गया एक पतली चोटी लेकर। मीनू का कोई समाचार नही है।

चीनी चौके मे सटे, नमाज पढने के चबूतरे पर नारानदा किसी
साथ घनिष्ठ होकर बातचीत कर रहे हैं। अचानक गोरा को ईसामसीह
उन पक्के बारह शिष्यो की याद आयी, जिनमे से एक ने उन्हे पकड
दिया था। और विल्डिग का घिराव हुआ था नारानदा का समाच
पाकर। अभी तक उस आदमी का नाम छिपा है। मगर । उन बारहो
से एक ?

जिन्दगी मे इस तरह की कितनी गाँठें पड गयी हैं ! और इनको लेक
मजे मे हो-हो हँसते हुए सारे कैदी फाइल मे जमा हैं। कभी-कभी अवसन्न
आती है जेलखाने के शेड पर नीम के पेड की टेढी छाया की तरह। दो
होंठ सी जाती है जिन्दगी-भर के लिए। उस समय पुकारने पर भी गो
के मुँह से कोई आवाज नही निकलती। उस समय गोरा बहकता हुआ ज
कहाँ चला जाता है ! सिर्फ पडे रहते हैं दो घुटने, एक दुबला कधा, बेजा
सा लम्बा हाथ। क़ानूनी सजा के मुताबिक। दीवार और सगीन के गो
जाल के भीतर।